शर्मा হাৰ্ডৱেৰ
SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947
70025-06581

E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in
हिंदी दैनिक
गुवाहाटी, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 09 | अंक : 214 | गुवाहाटी | रविवार, 26 फरवरी, 2023 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 12 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

तीन साइबर अपराधी गिरफ्तार 1720 सिम व 11 फोन जब्त पेज 3
समान विचारधारा वाले दलों को साथ लेकर चलेगी कांग्रेस : खड़गे पेज 4
आयकर के इतने जटिल कानूनों को समझना बहुत बड़ी बात : कमिश्नर पेज 5
बेहतर ज्ञान अर्जित कर राष्ट्र और समाज के विकास में योगदान दें विद्यार्थी : राज्यपाल पेज 8

सीएम ने पूर्वोत्तर की सबसे बड़ी बॉयोगैस परियोजना की रखी आधारशिला

गुवाहाटी (हि.स.)। गुवाहाटी के सोनापुर स्थित दमरा पथार (मैदान) में मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा शनिवार को जैविक गैस उत्पादन परियोजना के शिलान्यास और भूमि पूजन समारोह में शामिल हुए। इस मौके पर डॉ. शर्मा ने कहा कि इस परियोजना से पूर्वोत्तर में गैस आधारित अर्थव्यवस्था की संभावना बढ़ेगी। इस संयंत्र से प्रतिदिन 5 टन बॉयोगैस का उत्पादन होगा। यह पूरे पूर्वोत्तर भारत की पहली परियोजना है। इस परियोजना के कार्यान्वयन से स्वच्छ और हरित ऊर्जा की दिशा में बदलने के उद्देश्य से राज्य द्वारा किए गए प्रयासों को और बढ़ावा मिलेगा। असम सरकार की ओर से इस दिशा में उद्यमियों को पूरा सहयोग दिया जाएगा। बॉयो-फ्यूल के उत्पादन में लगी कंपनी रेडेमन टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के सहयोग से सोनापुर के दमरा मैदान में बॉयोगैस का उत्पादन करने वाली पूर्वोत्तर की पहली -शेष पृष्ठ दो पर

आत्महत्याओं पर सीजेआई चंद्रचूड़ ने जताई चिंता, बोले-

छात्र अपना बहुमूल्य जीवन खत्म करने को मजबूर, कहां हो रही चूक

हैदराबाद। भारत के प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ ने छात्रों द्वारा कथित तौर पर आत्महत्या किए जाने की घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए शनिवार को कहा कि आखिर संस्थानों से कहां गलती हुई है कि विद्यार्थी खुद की जान लेने के लिए मजबूर हो गए हैं। मुंबई स्थित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी-बॉम्बे) में पिछले दिनों एक छात्र की कथित आत्महत्या के संदर्भ में उन्होंने कहा कि मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति वह संवेदना व्यक्त करते हैं। उन्होंने कहा कि वह इस बात से चकित हैं कि संस्थानों ने कहां गलती की है, जिसके चलते छात्र अपनी जान लेने को मजबूर हैं। हाल ही में आईआईटी बॉम्बे में एक दलित छात्र की कथित आत्महत्या की घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि पिछड़े वर्ग के लोगों द्वारा आत्महत्या किए जाने की घटनाएं आम होती जा रही हैं। प्रधान न्यायाधीश ने यहां द नेशनल एकेडमी ऑफ लीगल स्टडीज एंड रिसर्च (एनएएलएसएआर) में आयोजित दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि सामाजिक परिवर्तन के लिए अदालतों के अंदर और बाहर समाज से संवाद स्थापित करने में न्यायाधीशों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि हाल ही में मैंने आईआईटी बॉम्बे में एक दलित छात्र की आत्महत्या के बारे में पढ़ा। इसने मुझे पिछले साल ओडिशा में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय में एक जनजातीय छात्र की आत्महत्या की घटना याद दिला दी। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि मैं इन छात्रों के परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं। लेकिन मैं यह भी सोच रहा हूं कि हमारे संस्थानों ने कहां गलती की है, जिसके चलते छात्रों को अपना बहुमूल्य जीवन खत्म करने को मजबूर होना पड़ रहा है। गुजरात के रहने वाले प्रथम वर्ष के छात्र दर्शन सोलंकी ने कथित तौर पर 12 फरवरी को आईआईटी बॉम्बे में आत्महत्या कर ली थी। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि ये कुछ उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि पिछड़े समुदायों में आत्महत्या की घटनाएं आम हो रही हैं। ये संख्याएं सिर्फ आंकड़े नहीं हैं। ये कभी-कभी सदियों -शेष पृष्ठ दो पर

পূৰ্বাঞ্চল কেশৰী
(असमीया दैनिक)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path,
ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94350 14771, 97070 14771

मेघालय और नगालैंड में थमा प्रचार, मतदान कल

सोहियांग सीट पर मतदान स्थगित

शिलांग /कोहिमा। पूर्वोत्तर के मेघालय और नगालैंड में विधानसभा के लिए चल रहा चुनाव का शोर शनिवार शाम को चार बजे थम गया। दोनों ही राज्यों में भाजपा की गठबंधन सरकारें हैं। इस बार जहां मेघालय में भाजपा और एनपीपी अलग-अलग चुनाव लड़ रहे हैं, वहीं नगालैंड में भाजपा अपनी पुरानी साथ एनडीपीपी के साथ चुनाव मैंदान में है। दोनों ही राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियों समेत राष्ट्रीय पार्टियों ने धुआंधार प्रचार किया और जम कर एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए। चुनावी शोर थमने से एक दिन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नगालैंड में गठबंधन और मेघालय में भाजपा के लिए चुनाव प्रचार किया और कांग्रेस और उसके सहयोगियों पर गंभीर आरोप लगाए। भाजपा ने दोनों ही राज्यों में गृहमंत्री, रक्षामंत्री सहित वरिष्ठ भाजपा नेताओं को चुनाव प्रचार में उतारा। वहीं कांग्रेस से स्टार प्रचारक और सांसद राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, जयराम रमेश सहित वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने दोनों ही राज्यों में धुआंधार प्रचार किया। प्रचार के आखिरी दिन भाजपा, एनपीपी, कांग्रेस, यूडीपीपी और तृणमूल कांग्रेस सहित सभी पार्टियों ने पूरा जोर लगाया। दोनों ही राज्यों में मतदान 27 फरवरी को होगा और नतीजे दो मार्च को आएंगे। दोनों ही प्रदेशों में पोलिंग पार्टियों को शनिवार को रवाना किया गया, जबकि दूर-दराज के क्षेत्रों के लिए पहले ही पोलिंग पार्टियों को रवाना किया जा चुके हैं। चुनाव के मद्देनजर मेघालय ने भारत-बांग्लादेश की सीमाओं को सील कर दिया है। इसके साथ ही असम के साथ लगने वाली सीमाएं भी सील कर दी गई हैं। सुरक्षा के मद्देनजर जबरदस्त व्यवस्था की गई है। मेघालय के पुलिस महानिदेशक एलआर बिश्नोई ने कहा कि राज्य में शांतिपूर्ण चुनाव के लिए सुरक्षा के सभी उपाय किए गए हैं। इस बार मैदान में 36 महिलाओं सहित 375 उम्मीदवार हैं। यहां पर विधानसभा की 60 सीटें हैं। लेकिन एक उम्मीदवार के निधन के कारण इस बार 59 सीटों पर मतदान होगा। राज्य में कुल 21,61,729 मतदाता हैं। इनमें पुरुष मतदाताओं की संख्या 10,68,801 और महिला मतदाताओं की संख्या 10,92, 326 है। विकलांग व्यक्ति श्रेणी में 7478 मतदाता, 80 वर्ष और उससे अधिक -शेष पृष्ठ दो पर

केंद्रीय मंत्री निसिथ प्रमाणिक के काफिले पर हमला

कोलकाता। गृह, युवा मामले और खेल राज्य मंत्री निसिथ प्रमाणिक के काफिले पर कथित तौर पर तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) समर्थकों ने हमला किया। मंत्री कूचबिहार के दिनहाटा इलाके में पार्टी कार्यकर्ताओं से मिलने जा रहे थे। मंत्री के काफिले पर उस समय हमला किया गया जब वह एक कार्यक्रम में पार्टी कार्यकर्ताओं से मिलने जा रहे थे। संपर्क किए जाने पर केंद्रीय मंत्री ने बताया कि हमले में भाजपा के कई कार्यकर्ता घायल हो गए। टीएमसी समर्थकों ने उन्हें काले झंडे दिखाए, जिसके बाद दोनों दलों के समर्थकों के बीच झड़पें शुरू हो गईं। सीसीटीवी फुटेज में दोनों पक्षों के कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हो रही है और स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस लाठीचार्ज कर रही है। आंसू गैस गोले भी छोड़े गए। मंत्री ने कहा कि राज्य में अगर -शेष पृष्ठ दो पर

त्रिपुरा विस : चुनाव परिणाम 2 मार्च को 60 पर्यवेक्षक नियुक्त

अगरतला। त्रिपुरा में पहली बार चुनाव आयोग ने स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से मतगणना सुनिश्चित करने के लिए 60 विधानसभा क्षेत्रों में से प्रत्येक के लिए एक मतगणना पर्यवेक्षक नियुक्त किया है। इसकी जानकारी एक वरिष्ठ चुनाव अधिकारी ने शनिवार को दी है। चुनाव आयोग ने स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से सभी विधानसभा क्षेत्रों की मतगणना की निगरानी के लिए 60 मतगणना पर्यवेक्षक नियुक्त किए हैं। त्रिपुरा के -शेष पृष्ठ दो पर

पीएम ने जर्मन चांसलर को भेंट किए मेघालय का स्टोल और नगालैंड की शॉल

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज को मेघालय के *स्टोल* और नगालैंड की *शॉल* उपहार में दीं। जर्मनी के चांसलर दो दिवसीय यात्रा पर शनिवार को भारत पहुंचे। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि ये वस्तुएं पूर्वोत्तर के दो राज्यों की संस्कृति और शिल्प कौशल का प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि मेघालय के स्टोल का एक समृद्ध इतिहास है और इनकी बुनाई एक प्राचीन परंपरा है, जो पीढ़ियों से चली आ रही है। सूत्रों ने कहा कि मेघालय के स्टोल मूल रूप से खासी और जयंतिया राजघराने के लिए बुने जाते थे, जो इन्हें अपनी शक्ति का प्रतीक मानते थे। उन्होंने कहा कि ये स्टोल औपचारिक अवसरों और त्योहारों के -शेष पृष्ठ दो पर

door graph
Premium Quality Hinges
S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path, Near Dona Planet ABC, G.S. Road, Guwahati - 05
97079-99344

सुप्रभात

जो नास्तिक हैं, उनको वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भगवान में विश्वास करना चाहिए इसी में उनका हित है।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर

न्यूज गैलरी

सोनिया गांधी ने संन्यास का दिया संकेत

नई दिल्ली। छत्तीसगढ़ के नया रायपुर में चल रहे कांग्रेस के 85वां पूर्ण अधिवेशन में सोनिया गांधी ने मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधा है। अधिवेशन के दूसरे दिन कांग्रेस नेता सोनिया ने कहा कि केंद्र सरकार और आरएसएस ने सभी स्वायत्त एजेंसियों पर कब्जा कर लिया है। कांग्रेस नेता ने कहा कि पीएम मोदी देश के लिए नहीं अपने मित्रों के लिए सत्ता चला रहे हैं। सोनिया ने इसी के साथ राहुल गांधी की तारीफ भी -शेष पृष्ठ दो पर

स्टैंडिंग कमेटी चुनाव में दोबारा एचसी ने लगाई रोक

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने स्टैंडिंग कमेटी के दोबारा चुनाव कराने पर रोक लगा दी है। हाईकोर्ट ने एलजी, मेयर और एमसीडी को नोटिस भेजा है। इसी के साथ ही हाईकोर्ट ने मतपत्र, सीसीटीवी फुटेज और अन्य दस्तावेजों को सुरक्षित रखने का भी आदेश दिया है। बता दें कि एमसीडी की स्थायी समिति के चुनाव के दौरान एक वोट को अवैध घोषित करने के मेयर शैली ओबेरॉय के फैसले के खिलाफ भाजपा की दो पार्षद शिखा रॉय -शेष पृष्ठ दो पर

घरेलू हिंसा के खिलाफ एससी सख्त

केंद्र को मुख्य सचिवों की बैठक बुलाने के दिए निर्देश

नई दिल्ली। महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा की घटनाओं को लेकर सुप्रीम कोर्ट सख्त हो गया है। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिए हैं कि वह घरेलू हिंसा के मुद्दे पर सभी राज्यों के मुख्य सचिवों की बैठक बुलाएं। बैठक में महिलाओं को घरेलू हिंसा से बचाने के लिए घरेलू हिंसा कानून लागू कराने पर चर्चा कराने के निर्देश दिए गए हैं। बता दें कि देश की अदालतों में जुलाई 2022 तक घरेलू हिंसा के करीब 4.71 लाख मामले लंबित हैं। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दाखिल की गई है, जिसमें घरेलू हिंसा की -शेष पृष्ठ दो पर

शिक्षा और कौशल अमृतकाल के सबसे महत्वपूर्ण अस्त्र : पीएम

नई दिल्ली। अमृत काल के पहले बजट की योजनाओं-घोषणाओं को धरातल पर उतारने की तैयारी के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्वास जताया है कि यह बजट शिक्षा प्रणाली को पहले की तुलना में अधिक व्यावहारिक और उद्योगोन्मुखी बनाएगा। शिक्षा और कौशल को अमृत काल का महत्वपूर्ण टूल बताते हुए स्पष्ट किया कि युवा शक्ति के सदुपयोग में इनका क्या महत्व है। युवाओं के भविष्य से जुड़ी योजनाओं का उल्लेख करने के साथ ही उन्होंने उन युवाओं के प्रति चिंता जताई, जो स्किल इंडिया मिशन के तहत प्रशिक्षण ले चुके हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन प्रशिक्षित अभ्यर्थियों का डाटाबेस बनाकर डिजिटल प्रौद्योगिकी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में उनका स्किल अपग्रेड करें। *युवा शक्ति का सदुपयोग- निपुणता और शिक्षा* विषय पर शनिवार को शिक्षा मंत्रालय और कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय द्वारा वेबिनार आयोजित किया गया। केंद्रीय बजट 2023 में घोषित योजनाओं के कारगर क्रियान्वयन के लिए सुझाव और विचार आमंत्रित करने के उद्देश्य से आयोजित इस वेबिनार का शुभारंभ प्रधानमंत्री मोदी ने किया। उन्होंने कहा कि ये युवा ही हैं, जो विकसित भारत का दृष्टिकोण लेकर देश की अमृत यात्रा का नेतृत्व कर रहे हैं, इसीलिए अमृत काल के पहले बजट में युवा और उनके भविष्य को सबसे ज्यादा अहमियत दी गई है। इस वर्ष का बजट शिक्षा प्रणाली को अधिक व्यावहारिक और उद्योगोन्मुख बनाकर -शेष पृष्ठ दो पर

नीतीश के लिए भाजपा के सभी दरवाजे बंद : शाह

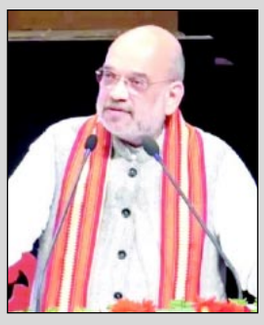

पटना। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने शनिवार को स्वामी सहजानंद सरस्वती जी की जयंती के अवसर पर पटना में *किसान-मजदूर समागम* को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने महागठबंधन पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि बिहार के भीतर नीतीश कुमार का पूरा जीवन सिर्फ कांग्रेस विरोध में गुजरा, वो नीतीश कुमार सिर्फ प्रधानमंत्री बनने की लालच में सोनिया गांधी की शरण में जाकर बैठ गए। अमित शाह ने कहा कि नीतीश जी ने दूसरी बार धोखा दिया है लेकिन अब नीतीश जी हमें धोखा नहीं दे सकते क्योंकि अब हम नीतीश जी को राजग में लेंगे ही नहीं। नीतीश जी के लिए भाजपा के सारे दरवाजे अब बंद हैं। उन्होंने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि बिहार में डेयरी की बहुत संभावनाएं -शेष पृष्ठ दो पर

मृत मां को रो-रो कर उठाने की कोशिश करता रहा छोटा लंगूर

बंगाईगांव। मां एक ऐसा शब्द है जिसे सुनकर हर बच्चे की सारी दुख तकलीफें यूंही कम हो जाती है। संसार में अपनी मां को खोने का दुख असहनीय होता है। इसमें चाहे इंसान हो या जानवर कोई भी अपनी मां को खोना नहीं चाहता है। असम के पश्चिमी क्षेत्र में लुप्तप्राय प्राइमेट के गोल्डन लंगूर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। इस वीडियो को देखकर हर किसी की आंखे नम हो जाएगी। वीडियो में दो महीने का लंगूर हादसे में मृत पड़ी अपनी मां से लग कर खूब रो रहा है। वह लगातार अपनी मां को जगाने की कोशिशें कर रहा है। पश्चिमी असम बंगाईगांव जिले के काकोइजान इलाके में गोल्डन मादा लंगूर(मां) और बच्चा भोजन की तलाश में राष्ट्रीय राजमार्ग पार कर रहे थे। इसी दौरान वहां ईट लेकर गुजर रहे एक ट्रक की टक्कर से बच्चे को लेकर जा रही एक मादा गोल्डेन लंगूर की मौत हो गयी। लंगूर का बच्चा उसकी बाहों से अभी भी चिपटा रहा और अपनी मां को उठाने की कोशिश कर रहा था। जब तक स्थानीय लोगों ने बच्चे को बचाया नहीं, तब तक वह उसे लगभग एक -शेष पृष्ठ दो पर

उंगलियां काटने वाले गैंगस्टरों व पुलिस में मुठभेड़, दो गिरफ्तार

पंजाब। युवक की उंगलियां काटने मामले में मोहाली की सीआईए टीम के हाथ बड़ी कामयाबी लगी है। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार की है। बड़ी कार्रवाई करते हुए पुलिस इन गैंगस्टरों का पीछा कर रही थी। जब पीछा करते हुए पुलिस पटियाला शंभु बार्डर पर पहुंची तो गैंगस्टरों ने गाड़ी रोक ली। इस दौरान बदमाशों व पुलिस में मुठभेड़ हुई जिसमें बदमाशों ने फायरिंग शुरू कर दी। इस दौरान पुलिस ने भी जवाबी फायरिंग की जिसमें एक गैंगस्टर के -शेष पृष्ठ दो पर

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

MURTI AVAILABLE

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc.
ARTCLE WORLD, S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01,
Ph. : 94350-48866, 94018-06952

ट्रक ने तीन बसों को मारी टक्कर 13 की मौत, 50 से ज्यादा घायल

मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख रुपए मुआवजे का एलान

सीधी (हिंस)। मध्य प्रदेश के सीधी जिले में चुरहट थाना क्षेत्र अंतर्गत चुरहट-रीवा नेशनल हाईवे पर मोहनिया टनल के समीप ग्राम बरखड़ा के पास शुक्रवार रात भीषण सड़क हादसा हो गया। यहां एक तेज रफ्तार ट्रक ने तीन बसों को टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि ट्रक की टक्कर से एक बस सड़क किनारे पलटकर गई, जबकि दो बसें अनियंत्रित होकर खाई में गिर गईं। इस हादसे में 13 लोगों की जान चली गई, जबकि 50 से अधिक लोगों के घायल हो गए। हादसा ट्रक का टायर फटने से हुआ। मृतकों में से आठ ने मौके पर ही दम तोड़ दिया था, जबकि बाकी की मौत अस्पताल में हुई। अभी तक मृतकों की शिनाख्त नहीं हो सकी है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हादसे पर दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख रुपए आर्थिक सहायता की घोषणा की है। कांग्रेस नेता कमलनाथ, पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने भी हादसे पर दुख जताया। दरअसल, रविवार को सतना में कोल समाज का महाकुंभ था, जिसमें केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान शामिल हुए थे। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रदेशभर से कोल समाज के लोग बसों से आए थे। रात में ये बसें कार्यक्रम समापन के बाद लोगों को लेकर वापस लौट रही थीं। रामपुर बघेलान और रीवा के रास्ते मोहनिया टनल से एक किलोमीटर दूर सीधी जिले के चुरहट थाना क्षेत्र में बरख ?ा गांव के पास तीन बसें कुछ देर के लिए रोकी गई थीं। यहां यात्रियों के लिए चाय-नाश्ते की व्यवस्था की गई थी। इसी दौरान यह हादसा हो गया। तीनों बसों से 50 से 60 लोग सवार थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, मोहनिया टनल से कुछ दूरी पर एक तेज रफ्तार ट्रक ने तीनों बसों को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि दो बसें 10 फीट गहरी खाई में गिर गईं। वहीं, एक बस हाईवे पर ही पलट गई। ट्रक सीमेंट से भरा था और टक्कर के बाद पलट गया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान रात में सीधी में ही थे। हादसे की सूचना मिलते ही वे आधी रात को घटनास्थल पर पहुंच गए और स्थिति का जायजा लिया। इसके बाद वे अस्पताल भी गए और घायलों से मुलाकात की। उनके साथ प्रदेश भाजपाध्यक्ष वीडी शर्मा भी मौजूद रहे। इससे पहले सीधी कलेक्टर और एसपी ने भी घटनास्थल का जायजा लिया। सीधी सांसद रीति पाठक भी मौके पर पहुंचीं। मुख्यमंत्री चौहान ने मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख रुपये, गंभीर घायलों को 2-2 लाख रुपए और साधारण घायलों को 1-1 लाख रुपए की आर्थिक मदद देने का ऐलान किया। मुख्यमंत्री चौहान ने देर रात ट्वीट करते हुए कहा कि रात में सीधी जिले में हुई दुर्घटना में खड़ी बसों से ट्रक द्वारा टकराने के फलस्वरूप हुई जनहानि और रेस्क्यू प्रयासों की घटनास्थल पर पहुंचकर जानकारी प्राप्त की। प्रशासनिक अधिकारियों, नागरिकों और घटना के प्रत्यक्षदर्शियों से विस्तृत विवरण जाना। दु:ख की इस घड़ी में हम सब साथ हैं। रीवा मेडिकल कॉलेज और संजय गांधी अस्पताल में पहुंचकर शोकाकुल परिजनों को ढांढस बंधाया और घायलों के इलाज के संबंध में चिकित्सकों से जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि घायलों को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। हमारे घायल भाई-बहन शीघ्र पूर्णत: स्वस्थ हों, यही प्रार्थना करता हूं। सीधी में हुई दुर्घटना हृदय विदारक है। रीवा के अस्पताल में घायलों का इलाज जारी है। डॉक्टरों ने बताया कि सभी घायल खतरे से बाहर हैं। घायलों के इलाज की बेहतर से बेहतर व्यवस्था की गई है, फिर भी आवश्यकता पड़ने पर इलाज के लिए बाहर ले जाया जायेगा। हमारी पहली प्राथमिकता है कि घायलों के उपचार की बेहतर व्यवस्था करें। आवश्यकता पड़ने पर घायलों को एयर एंबुलेंस द्वारा भी अन्यत्र उपचार हेतु ले जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना में जो साथी नहीं रहे, उनके परिजनों को 10-10 लाख की राहत राशि दी जाएगी। दिवंगत व्यक्तियों के आश्रित परिजनों को योग्यतानुसार शासकीय सेवा में लिया जाएगा। गंभीर घायलों को 2-2 लाख तथा सामान्य घायलों को 1-1 लाख की सहायता देने की व्यवस्था हम करेंगे। दिवंगत व्यक्तियों के परिवार की पूरी चिंता की

बीस लाख रुपए मूल्य की 104 बोरी बर्मीज सुपारी जब्त

हैलाकांदी (हि.स.)। अवैध रूप से भारत में तस्करी के जरिए लायी जा रही बर्मीज (म्यांमार) सुपारी के खिलाफ हैलाकांदी पुलिस का अभियान जारी है। इस कड़ी में हैलाकांदी पुलिस ने 104 बोरी बर्मीज को जब्त किया है। पुलिस सूत्रों ने शनिवार को बताया कि हैलाकांदी जिला के बिलाईपुर पुलिस ने बिलाईपुर में लालपानी निवासी निजाम उद्दीन लस्कर के गोदाम से 104 बोरी बर्मीज सुपारी को जब्त किया। सूत्रों ने दावा किया है कि लंबे समय से यह निजाम उद्दीन अपने गोदाम से हैलाकांदी जिला के अलग-अलग हिस्सों में बर्मीज सुपारी की तस्करी करते आ रहा था। गुप्त सूचना के आधार पर बीती रात बिलाईपुर पुलिस ने निजाम उद्दीन के गोदाम से सुपारी तो जब्त कर लिया, लेकिन गोदाम का मालिक निजाम उद्दीन को अभी तक पुलिस गिरफ्तार नहीं कर पाई है। हैलाकांदी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बिद्युत दास ने शनिवार को मीडिया को बताया कि जब्त सुपारी का बाजार मूल्य लगभग 20 लाख रुपए के आसपास होगा।

सुकमा में नक्सलियों के साथ मुठभेड़ में 3 जवान शहीद, दो जवान घायल

सुकमा (हिंस)। सुकमा जिले के जगरगुंडा थाना क्षेत्र में शनिवार सुबह साढ़े आठ बजे पुलिस की नक्सलियों से मुठभेड़ हुई जिसमें 3 जवान शहीद और दो जवान घायल हो गए हैं। घायल जवानों को जल्द सुकमा लाया जा रहा है। मुठभेड़ की पुष्टि आई जीपी सुंदरराज ने की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार दंतेवाड़ा और सुकमा से डीआरजी टीम सर्चिंग के लिए निकली थी। बाइक से जा रहे जवानों पर कुंडेर के पास घात लगाकर बैठे नक्सलियों ने अचानक अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। जबतक जवान कुछ समझ पाते, नक्सलियों की गोलीबारी की चपेट में आ गए। जवानों ने मोर्चा संभालते हुए जवाबी कार्रवाई की लेकिन तब तक 5 जवान घायल हो चुके थे। इनमें से 3 जवान शहीद हो गए। मुठभेड़ में जगरगुंडा निवासी डीआरजी एसआई रामूराम नाग, चिंलानार मरकागुड़ा निवासी सहायक आरक्षक वंजाम भीमा, कुंजाम भीमा निवासी जगरगुंडा शहीद हुए हैं।

भारत-बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती इलाके से मादक पदार्थ के साथ तस्कर गिरफ्तार

गुवाहाटी (हि.स.)। सीमा सुरक्षा बल (सीसुब), गुवाहाटी फ्रंटियर के सीमा प्रहरियों ने भारत-बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर एक तस्कर को प्रतिबंधित मादक पदार्थ के साथ गिरफ्तार किया है। सीसुब ने शनिवार को बताया कि पुख्ता खुफिया सूचना के आधार पर सीसुब की गुवहाटी फ्रंटियर के अंतर्गत 45वीं वाहिनी की सीमा चौकी जोरडंगा में तैनात सतर्क सीमा प्रहरियों ने बीती रात भारत-बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय सीमाई इलाके में भारत से बांग्लादेश को तस्करी का प्रयास करते समय एक तस्कर को 3.43 लाख मूल्य की 686 प्रतिबंधित याबा टेबलेट के साथ गिरफ्तार किया। इसी तरह अन्य अभियान में पुख्ता खुफिया सूचना के आधार पर सीसुब के सतर्क सीमा प्रहरियों ने भारत से बांग्लादेश तस्करी के प्रयास को विफल करते हुए 190 बोतल प्रतिबंधित कफ सिरप एवं 11 किलो गांजा तथा अन्य प्रतिबंधित सामग्री जब्त की।

लायंस डिस्ट्रिक्ट का दो दिवसीय अधिवेशन आरोही का उद्घाटन

गुवाहाटी (नसं)। लायन क्लब ऑफ गुवाहाटी के आतिथ्य में आयोजित लायंस जिला 322 जी का दो दिवसीय पांचवा वार्षिक अधिवेशन आरोही का माछखुवा स्थित आआईटीए सेंटर में शुरू हुआ। अधिवेशन की शुरुआत मुख्य अतिथि के रूप में लायंस अंतरराष्ट्रीय निदेशक बम्शीधर बाबू व पूर्व लायंस अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष नरेश अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित करके किया। इस अवसर पर उनके साथ लायंस जिला 322 जी के जिलापाल बीएस राठौड, निवर्तमान जिला पाल शुभंकर सेन, लायंस जिला उपाध्यक्ष (प्रथम) निर्मल भूरा, उपाध्यक्ष (द्वितीय) सीमा गोयंका, पूर्व लायंस जिलापाल डॉक्टर एस के धर, आथित्य शाखा लायंस गुवाहाटी के अध्यक्ष दलजीत सिंह, अधिवेशन स्वागत समिति के

स्वाताध्यक्ष कमल अग्रवाल, स्वागत मंत्री महेश शर्मा, स्वागत समिति कोषाध्यक्ष अनिल थर्ड, लायंस जिला 322 जी के महामंत्री सुनील अग्रवाल, कोषाध्यक्ष प्रकाश सिकरीया, मुख्य सलाहकार पूर्व जिलापाल डीपी बजाज उपस्थित थे इससे पहले लायंस सदस्यों द्वारा आरोही स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। लायंस जिलापाल बी एस राठौड़ ने स्वागत भाषण देकर सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि के संबोधन के पश्चात लायंस जिला का वार्षिक स्थायी पुरस्कार कर्मयोगी पुरस्कार प्रदान किया गया। इस वर्ष 2022 -23 का कर्म योगी पुरस्कार अगरतला के कमल दास गुप्ता को प्रदान किया गय जिसमें एक लाख रुपए का चेक, शॉल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि कमल दास गुप्ता जरूरतमंद व असहाय बच्चों के शिक्षा दान का सारा खर्च वहन कर उन्हें शिक्षित करने के कार्य में कई वर्षों से लगे हुए हैं। इसके अलावा कई लायंस क्लबो को भी पुरस्कृत किया गया। उद्घाटन सत्र में पीस पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम घोषित करते हुए कार्यक्रम संयोजक संजय बजाज ने विजेताओं के नाम घोषित किए। जिसमें पीस पोस्टर का प्रथम पुरस्कार सिलचर कि मृतिका दास, द्वितीय पुरस्कार गुवाहाटी की सागरिका शरणीया और तृतीय पुरस्कार अगरतला के अनुराग भट्टाचार्य को प्रदान किया गया। उद्घाटन सत्र में आतिथ्य शाखा के अध्यक्ष दलजीत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

भाजपा गुवाहाटी महानगर जिला मोर्चा प्रशिक्षण वर्ग आयोजित

गुवाहाटी (हि.स.)। भाजपा गुवाहाटी महानगर जिला समिति के तहत प्रशिक्षण विभाग की पहल पर हेंगराबाड़ी स्थित अटल वाजपेयी भवन जिला कार्यालय में शनिवार को प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण वर्ग में पार्टी के कार्यकर्ताओं को दल के नीति आदर्श, मर्यादा आदि विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भाजपा के इतिहास और विकास, मीडिया प्रबंधन और सोशल मीडिया सही उपयोग, कार्य पद्धति संगठन, संरचना, संगठन को मजबूत करने के क्षेत्र में मोर्चाओं की भूमिका

पर भी चर्चा की। इस अवसर पर जिला भाजपा अध्यक्ष तपन चंद्र दास, जीएमसी मेयर मृगेन सरनिया, अशोक भराली, जिला प्रशिक्षण वर्ग के पदाधिकारी प्रदीप ठाकुरिया, रंजीव शर्मा, प्रदेश मीडिया पैनलिस्ट ब्रज कुमार दास, किशोर उपाध्याय और संयोजक राजीव यादव, गुवाहाटी महानगर जिला प्रशिक्षण विभाग के महासचिव द्वय मानस प्रतीम दास और विजय पाठक आदि उपस्थित थे

पृष्ठ एक का शेष

सीएम ने पूर्वोत्तर ...

सबसे बड़ी परियोजना स्थापित करने जा रहा है। इस परियोजना के माध्यम से प्रतिदिन 5 मीट्रिक टन बॉयोगैस उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उत्पादित बॉयोगैस को इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन को भेजा जाएगा। मुख्यमंत्री के साथ लखीमपुर के विधायक मानव डेका, दिसपुर के विधायक अतुल बोरा और कार्बी आंग्लांग के सीईएम तुलीराम रांगहंग और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद थे।

छात्र अपना बहुमूल्य ...

के संघर्ष की कहानियां बयां करती हैं। मेरा मानना है कि अगर हम इस समस्या का समाधान करना चाहते हैं तो पहला कदम समस्या को स्वीकार करना और पहचानना है। उन्होंने कहा कि वह वकीलों के मानसिक स्वास्थ्य पर जोर देते रहे हैं और उतना ही महत्वपूर्ण छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य भी है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि न केवल शिक्षा पाठ्यक्रम के जरिए छात्रों में करुणा की भावना पैदा करनी चाहिए, बल्कि अकादमिक विद्वानों को भी उनकी चिंताओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि मुझे लगता है कि भेदभाव का मुद्दा सीधे तौर पर शिक्षण संस्थानों में सहानुभूति की कमी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि भारत के प्रधान न्यायाधीश का काम न्यायिक और प्रशासनिक कार्यों के अलावा उन संरचनात्मक मुद्दों पर भी प्रकाश डालना है जो समाज के सामने हैं। उन्होंने कहा कि इसलिए, सहानुभूति को बढ़ावा देना पहला कदम होना चाहिए। शिक्षा संस्थानों को यह कदम उठाना चाहिए।

मेघालय और नगालैंड ...

आयु के 22658 मतदाता हैं। राज्य में पहली बार मतदान करने वाले मतदाताओं की संख्या 81,443 है। दूसरी ओर नगालैंड में भी शनिवार को चुनाव प्रचार शाम को थम गया। यहां पर भी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। नगालैंड में भी चुनाव 27 फरवरी को होने हैं और नतीजे दो मार्च को आएंगे। यहां कुल 60 सीटें हैं, लेकिन इस बार 59 सीटों पर मतदान हो रहे हैं। क्योंकि भाजपा के एक प्रत्याशी निर्विरोध चुने गए हैं। इस बार नगालैंड में चार महिला सदस्यों सहित कुल 183 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। नगालैंड के पुलिस महानिदेशक रुपिन शर्मा ने कहा है कि नगालैंड की सीमाओं को सील कर दिया गया है। सुरक्षा के लिए पुख्ता इंतजाम किए हए हैं। उधर मेघालय के सोहियोंग विधानसभा सीट पर 27 फरवरी को होने वाले मतदान को स्थगित कर दिया है। चुनाव आयोग ने यह फैसला मेघालय के पूर्व गृह मंत्री और सोहियांग विधानसभा क्षेत्र से यूडीपी के उम्मीदवार एचडीआर लिंगदोह की अचानक हुई मौत के बाद लिया है। एक अधिकारी ने शनिवार को इसके बारे में जानकारी दी। निर्वाचन अधिकारी ने एक आदेश में कहा कि 27 फरवरी को सुबह सात बजे से शाम चार बजे तक होने वाले मतदान को (सोहियोंग विधानसभा क्षेत्र में) तब तक के लिए स्थगित किया जाता है जब तक कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदान की नई तारीख अधिसूचित नहीं कर दी जाती है। एचडीआर लिंगदोह का 20 फरवरी की शाम निधन हो गया। वह आगामी चुनाव की तैयारी कर रहे थे। एचडीआर को आमतौर पर माहे के नाम से जाना जाता था।

केंद्रीय मंत्री निसिथ ...

एक मंत्री सुरक्षित नहीं है, तो आप आम आदमी की दुर्दशा की कल्पना कर सकते हैं। यह घटना बंगाल में लोकतंत्र की हालत को दिखाती है। उन्होंने दावा किया, मेरे काफिले पर न केवल पथराव किया गया, बल्कि गोलियां भी चलाई गईं। बम भी फेंके गए। पूरी घटना पुलिस के सामने हुई और वे मूकदर्शक बने रहे। स्थानीय मीडिया की खबरों की मानें तो बीएसएफ की गोलीबारी में कथित रूप से एक आदिवासी की मौत हो गई थी, जिसको लेकर लोगों में गुस्सा था। चूंकी बीएसएफ गृह मंत्रालय के तहत आता है और प्रमाणिक केंद्रीय गृह राज्य मंत्री हैं। इसलिए लोगों ने उनपर पथराव किया। बीते रविवार को टीएम के सैकड़ों समर्थकों ने प्रमाणिक के आवास के बाहर कूचबिहार में प्रदर्शन किया था। उन्होंने उन पर बीएसएफ के कथित अत्याचार के मामले में उदासीनता आरोप लगाया था। तृणमूल कांग्रेस के महासचिव अभिषेक बनर्जी ने भी हाल ही में कूचबिहार में एक रैली में प्रमाणिक पर निशाना साधा था। उन्होंने कहा था कि आदिवासियों की चिंताओं को दूर करने के लिए मंत्री ने कुछ भी नहीं किया। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कहा कि अगर किसी केंद्रीय मंत्री की कार पर इस तरह से हमला किया जाता है तो यह राज्य की निराशाजनक (कानून व्यवस्था) स्थिति को साबित करता है। भाजपा प्रवक्ता समिक भट्टाचार्य ने कहा कि राज्यपाल को केंद्रीय मंत्री के काफिले पर हमले का संज्ञान लेना चाहिए और राज्य में अनुच्छेद 355 लागू करने के लिए कदम उठाने चाहिए। आरोपों का जवाब देते हुए तृणमूल कांग्रेस के प्रदेश महासचिव कुणाल घोष ने बंगाल भाजपा नेतृत्व पर राज्य के शांतिपूर्ण माहौल को बाधित करने के लिए उनके कार्यकर्ताओं को उकसाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं ने दिनहाटा में तृणमूल कांग्रेस के कार्यालय में तोड़फोड़ की और हमारे कार्यकर्ताओं पर हमला किया। उस इलाके के लोग पिछले साल बीएसएफ द्वारा एक राजबंशी युवक की हत्या को लेकर गुस्से में हैं। प्रमाणिक उस विभाग के मंत्री हैं। प्रमाणिक के काफिले पर पिछले साल नवंबर में कूचबिहार के सिताई इलाके में हमला किया गया था और उस समय भाजपा ने आरोप लगाया था कि इस घटना में *टीएमसी से जुड़े गुंडे शामिल हैं। सत्तारूढ़ दल ने उस समय इस आरोप को आधारहीन* करार दिया था। पुलिस ने भी बांग्लादेश की सीमा से लगे उत्तरी बंगाल जिले में ऐसी किसी घटना से इनकार किया था।

त्रिपुरा विस : चुनाव ...

मुख्य निर्वाचन अधिकारी एस बंदोपाध्याय ने बताया कि उनके 28 फरवरी तक त्रिपुरा पहुंचने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि इसका मतलब है कि पोल पैनल ने प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के लिए एक मतगणना पर्यवेक्षक नियुक्त किया है, जो पूर्वोत्तर राज्य में पहला है। बंदोपाध्याय ने कहा कि मुख्य सचिव जे के सिन्हा, गीते किरणकुमार दिनकरराव और डीजीपी अमिताभ रंजन पहले ही सभी 8 जिलों का दौरा कर चुके हैं और जिलाधिकारियों और पुलिस अधीक्षकों के साथ बैठक कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने सभी जिलों के समग्र सुरक्षा परिदृश्य की समीक्षा की है और सुरक्षा व्यवस्था का भी जायजा लिया है। अधिकारी ने कहा कि कड़ी सुरक्षा के बीच 21 मतगणना कक्षों में मतगणना होगी।

पीएम ने जर्मन चांसलर...

दौरान पहने जाते थे और इनके खास डिजाइन एवं जीवंत रंग शाही परिवार की संपत्ति और प्रतिष्ठा को दर्शाते थे। अधिकारियों ने कहा कि खासी और जयंतिया राजा अक्सर इन स्टोल को सद्भावना और सम्मान के प्रतीक के रूप में अन्य शासकों को भेंट करते थे। उन्होंने कहा कि ये स्टोल स्थानीय रूप से प्राप्त ऊन और प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके बनाए जाते हैं। अधिकारियों ने कहा कि नगा शॉल कला का एक उत्कृष्ट रूप है जो सदियों से नगालैंड में जनजातियों द्वारा बुनी जाती रही है। उन्होंने कहा कि ये शॉल अपने जीवंत रंगों, खास डिजाइन और पारंपरिक बुनाई तकनीकों के उपयोग के लिए जानी जाती हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही हैं।

केंद्र को मुख्य सचिवों ...

शिकार महिलाओं को उचित कानूनी मदद मिलने और घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं के लिए शेल्टर होम बनाने की मांग की गई है। इस याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस एसआर शाह और जस्टिस दीपांकर दत्ता की बेंच ने कहा कि घरेलू हिंसा कानून के तहत प्रोटेक्शन ऑफिसर की तैनाती की जाए। कोर्ट ने टिप्पणी करते हुए कहा कि अभी तक इस मामले में जो तस्वीर दिख रही है, वह काफी धुंधली है। बेंच ने कहा कि देश में जितने मामले लंबित हैं, ऐसे में एक प्रोटेक्शन अधिकारी के हिस्से में 500-600 मामलों की सुनवाई आती है। ऐसे में और अधिक संख्या में अधिकारियों की तैनाती की जाए। कोर्ट ने कहा कि केंद्र सरकार को इस मामले में गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। कोर्ट ने निर्देश दिए हैं कि घरेलू हिंसा के मुद्दे पर चर्चा के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के सचिव, सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के सचिवों की बैठक बुलाएं। कोर्ट ने कहा कि मुख्य सचिवों की बैठक में वित्त, गृह और सामाजिक न्याय मंत्रालय के सचिव और राष्ट्रीय महिला आयोग और राष्ट्रीय न्याय सेवा अथॉरिटी के नामित अध्यक्ष भी शामिल हो। अब सुप्रीम कोर्ट आठ हफ्ते बाद इस मामले पर सुनवाई करेगा। सुप्रीम कोर्ट की जज जस्टिस हिमा कोहली कहना है कि परिवार में ही किसी बच्चे का यौन शोषण होना बेहद खेदजनक है और बच्चे के विश्वास और पारिवारिक संबंधों के लिए अक्षम्य अपराध है। जस्टिस कोहली ने कहा कि ऐसे मामलों में पीड़ित बच्चों को समझने और उन्हें पूरा सहयोग करने की जरूरत है। जस्टिस कोहली ने कहा कि ऐसे मामलों में पीड़ित बच्चों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है और यह कई के लिए उसके जीवन का दुर्भाग्यपूर्ण समय बन जाता है। उन्होंने कहा कि परिवार की इज्जत के नाम पर ऐसे मामले रिपोर्ट भी नहीं किए जाते हैं। चिल्ड्रेन फर्स्ट जर्नल को जारी करते हुए बाल अधिकार और सुरक्षा आयोग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट की जज जस्टिस हिमा कोहली ने ये बातें कही।

शिक्षा और कौशल ...

उसकी बुनियाद को मजबूत करेगा। पिछले वर्षों में शिक्षा प्रणाली में लचीलेपन के अभाव पर अफसोस प्रकट करते हुए इसमें बदलाव लाने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि नई शिक्षा नीति में भी लर्निंग और स्किलिंग पर समान जोर दिया गया है। सरकार उन उपायों पर गौर कर रही है, जो हर स्थान से ज्ञान तक सुगमता सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि देश में ऐसी अनेक डिजिटल व प्रौद्योगिकी आधारित पहलें हो रही हैं, जिन्हें राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय से काफी ताकत मिलेगी। हमारे शिक्षकों की भूमिका कक्षाओं तक सिमट कर नहीं रहेगी। देशभर से शिक्षा संस्थानों के लिए विविध शिक्षण सामग्रियां उपलब्ध हो जाएंगी, जो गांव व शहरी स्कूलों के बीच के अंतराल को पाटते हुए शिक्षकों के लिए अवसरों के नए द्वार खोलेंगी। प्रधानमंत्री मोदी ने वेबिनार में बताया कि ऑन द जॉब लर्निंग पर कई देश विशेष जोर देते हैं। अब भारत में भी इंटर्नशिप और अप्रेंटिसशिप पर ध्यान दिया जा रहा है। विश्वास जताया कि अप्रेंटिसशिप हमारे युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करेगी। इससे उद्योगों को ऐसी श्रमशक्ति की पहचान करने में मदद मिलेगी, जो उसके लिए सही कौशल से लैस हो। प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि इस वर्ष के बजट में नेशनल अप्रेंटिसशिप प्रमोशन स्कीम की घोषणा की गई है, जिसमें लगभग 50 लाख युवाओं को स्टाइपेंड दिया जाएगा। दुनिया भारत को मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में देख रही है। यहां निवेश करने के लिए विश्व उत्साहित है। उन्होंने प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 का उल्लेख करते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में लाखों युवाओं को यह योजना स्किल, री-स्किल और अपस्किल करेगी। सरकार उद्योग 4.0 के एआइ, रोबोटिक्स, आइओटी और ड्रोन जैसे सेक्टरों के लिए कुशल श्रमशक्ति बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

मृत मां को रो-रो...

घंटे तक छोड़ने से इनकार कर रहा था। पिछले तीन दिनों में इस क्षेत्र में एक तेज रफ्तार वाहन के चलते गोल्डन लंगूर की यह दूसरी घटना है। गोल्डन लंगूर, एक लुप्तप्राय प्राइमेट यह पश्चिमी असम के एक छोटे से क्षेत्र और पड़ोसी भूटान की तलहटी में पाया जाता है। विशेषज्ञों ने बताया कि इस क्षेत्र से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग के चार-लेन के लिए कई पेड़ काटे गए हैं। इसी कारण प्राइमेट्स को भोजन की तलाश में सड़क पार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। गैर-सरकारी संगठन प्राइमेट रिसर्च सेंटर ने प्रशासन से आग्रह किया है कि वह संवेदनशील क्षेत्रों में आर्टिफिशयल कैनोपी पुल का निर्माण करें। एनजीओ के संस्थापक जीहोसू बिस्वास ने कहा कि उन्हें कोकराझार के नायेकगांव इलाके में ऐसे कुछ आर्टिफिशयल कैनोपी पुल बनाने की अनुमति मिली है।

उंगलियां काटने वाले ...

पांव में गोली लग गई। यह दोनों गैंगस्टर भूप्पी गैंग के बताए जा रहे हैं। उंगलियां काटने के मामले में मुख्यआरोप गौरव उर्फ गोरी और साथी तरुण को काबू किया गया है। मुठभेड़ की सारी घटना टोल प्लाजा की सी.सी.टी.वी. में कैद हो गई है। आपको बता दें मोहाली से एक वीडियो काफी वायरल हो रहा था जिसमें एक युवक की उक्त दोनों बदमाशों ने बड़ी ही बेरहमी से तेजधार हथियार से उंगलियां काट दी। उंगलियां काटने का दिल दहला देने वाला वीडियो बना कर वायरल किया गया।

नीतीश के लिए ...

हैं। बिहार में भूमि है, पानी है और मेहनतकश किसान हैं। बिहार में ढंग से व्यवस्था की जाए, तो पूरे भारत का सबसे ज्यादा दूध उत्पादन करने वाला राज्य बिहार बन सकता है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अब नीतीश के राज में देश का सबसे अधिक दूध उत्पादन वाला राज्य कैसे बिहार बनेगा? क्योंकि दूध उत्पादन के लिए पशु चाहिए और पशु को चारा चाहिए, लेकिन प्रदेश का मुख्यमंत्री चारा चोरी करने वाले लालू की गोद में जाकर बैठ गया है, तो किसानों का भला कैसे होगा? उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार ने सह ?कारिता के माध्यम से 2 लाख पंचायतों में सरकारी डेयरी बनाने का संकल्प किया है। डेयरी के लिए सबसे उपयुक्त जगह बिहार है। यहां भूमि, पानी और मेहनतकश मजदूर हैं। बिहार वालों आप लालू की चिंता मत करो, क्योंकि बिहार में अब चारा चोरी भी नहीं होगा क्योंकि 2025 में यहां भाजपा की सरकार बनेगी। इसी बीच केंद्र में कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकार का उल्लेख करते हुए अमित शाह ने कहा कि 2014 में मनमोहन-सोनिया सरकार के दौरान कृषि का बजट 25 हजार करोड़ रुपया था, 2023 के बजट में मोदी सरकार ने कृषि का बजट बढ़ाकर 1 लाख 25 हजार करोड़ रुपया कर दिया है। यही बताता है कि देश के प्रधानमंत्री ने किसानों को केंद्र में रखा है।

सोनिया गांधी ने ...

की। छत्तीसगढ़ के नया रायपुर में चल रहे कांग्रेस के 85वां पूर्ण अधिवेशन में सोनिया गांधी ने मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधा है। अधिवेशन के दूसरे दिन कांग्रेस नेता सोनिया ने कहा कि केंद्र सरकार और आरएसएस ने सभी स्वायत्त एजेंसियों पर कब्जा कर लिया है। सोनिया गांधी ने अपने भाषण में राहुल गांधी की भी जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि राहुल के नेतृत्व में भारत जोड़ो यात्रा ने बहुत अच्छा काम किया।

स्टैंडिंग कमेटी चुनाव ...

और कमलजीत सहरावत ने दिल्ली हाईकोर्ट का रुख किया था। आज इस मामले को लेकर होईकोर्ट में सुनवाई हुई। मेयर और डिप्टी मेयर के चुनाव के बाद दिल्ली नगर निगम की स्टैंडिंग कमेटी के छह सदस्यों के चुनाव के दौरान जो मंजर बुधवार की शाम से लेकर गुरुवार की सुबह तक सदन में देखने को मिला वहीं नजारा एक बार फिर शुक्रवार को भी दिखा। स्टैंडिंग कमेटी के छह सदस्यों के चुनाव में वोटों की गिनती शुक्रवार को उस समय बाधित हो गई जब बीजेपी ने एक मत को अमान्य किए जाने पर आपत्ति जताई। आप और बीजेपी के सदस्य टेबल पर चढ़ गए और एक-दूसरे के खिलाफ नारेबाजी की। बात बढ़ते-बढ़ते हाथापाई तक जा पहुंची। दोनों पार्टियों के पार्षदों के बीच जमकर मारपीट हुई। यहां तक महिला पार्षद भी इसमें पीछे नहीं रहीं। उन्होंने आपस में एक दूसरे के बाल खींचे। यहां तक पुरुष पार्षदों पर चप्पल से हमला किया। पार्षदों ने सारी हदें पार करते हुए एक दूसरे के खिलाफ अभद्र भाषा का प्रयोग किया। कई पार्षदों को गंभीर चोटें आईं। महिला पार्षदों के साथ धक्का मुक्की व अभद्रता हुई। कई पार्षदों के कपड़े फट गए। एक दूसरे पर जूते चप्पल बरसाए गए। जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के इस तरह के बर्ताव से पूरी दिल्ली आहत है।

स्वर्वेद भाष्य

चतुर्थ मंडल **अष्टम अध्याय**

(योगाभ्यास)

मारे मन भिमान को, जीवन मृतक होय।
तब सद्गुरु का हँस है, काल बुद्धि गइ खोय॥ 61॥

शब्दार्थ : (अभिमान) अहंकार (हँस) आत्मा।

भाष्य : मन के अभिमान को नष्ट कर देने पर जीवन्मृतक हो जाता है और काल-बुद्धि मिट जाती है, तब सद्गुरु का हंस होता है।

नियमित नित सत्संग में, बैठे शांत स्वभाव।
हरि गुरु सुयश श्रवण सुनि, अन्तर प्रेम प्रभाव॥ 62॥

शब्दार्थ : (नियमित) नित्यप्रति (सुयंश) प्रशंसा, गुण कथन (प्रभाव) तेज-बुद्धि।

भाष्य : नियमित रूप से सत्संग में शांत स्वभाव से बैठकर हरि-गुरु का सुयश श्रवण करने से अंतर प्रेम की बुद्धि होती है।

तीन साइबर अपराधी गिरफ्तार 1720 सिम व 11 फोन जब्त

मोरीगांव (हि.स.)। मोरीगांव जिलांतर्गत सगुनबाही गांव से तीन साइबर अपराधियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। अपराधियों के पास से 1720 सिम कार्ड बरामद किए गए हैं। खुफिया सूचना के आधार पर पुलिस की टीम ने मोइराबाड़ी के सगुनबाही गांव में बीती देर रात को अभियान चलाते हुए तीन साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार साइबर अपराधियों की पहचान इशाक अली, रब्बूल इस्लाम और गियास उद्दीन के रूप में हुई है। गिरफ्तार तीनों सगुनबाही गांव के रहने वाले बताये गए हैं। जानकारी के अनुसार पुलिस की टीम ने रात के समय इशाक अली और रब्बूल इस्लाम के घरों पर अलग-अलग छापा मारा और साइबर अपराध में इस्तेमाल होने वाली बड़ी मात्रा में अवैध सामग्री बरामद की। मोइराबाड़ी पुलिस की

मदद मोरीगांव पुलिस ने दोनों के घर से 1720 सिम कार्ड और 11 मोबाइल फोन के साथ-साथ बड़ी मात्रा में अवैध वस्तुएं बरामद की हैं। पुलिस इस संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर तीनों से सघन पूछताछ कर रही है।

सबसे लंबे रिवर क्रूज की यात्रा समाप्ति की ओर

गुवाहाटी/विश्वनाथ (विभास)। दुनिया का सबसे लंबा रिवर क्रूज एम वी गंगा विलास आज सुबह विश्वनाथ पहुंचा। ऐतिहासिक विश्वनाथ घाट पर विश्वनाथ प्रशासन द्वारा विदेशी पर्यटकों का स्वागत किया गया। विदेशी पर्यटकों को जैसे ही एमवी गंगा विलास से एक बोट के जरिए विश्वनाथ घाट लाया गया, विश्वनाथ प्रशासन द्वारा क्षेत्रीय शाल और गायकों के साथ उनका स्वागत किया गया। विश्वनाथ प्रशासन के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ विदेशी पर्यटकों ने सबसे पहले विश्वनाथ घाट स्थित ऐतिहासिक शिव दौल का दौरा किया और इसके धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के बारे में जाना। विश्वनाथ घाट में कई कारीगरों द्वारा बनाई जा रही लाइटों को देखकर पर्यटक प्रभावित होते हैं। इसके बाद पर्यटक विश्वनाथ घाट के मुख्य मंदिर परिसर में पहुंचे। देश में कई अलग-अलग प्रकार के बिहू प्रदर्शन होते हैं वह कई विदेशी पर्यटक हैं जिन्होंने बिहू समूह के साथ बिहू नृत्य किया। उन्होंने विश्वनाथ प्रशासन के अधिकारियों के साथ भी बातचीत की और 27 छोटे और बड़े मंदिरों वाले मंदिरों के शहर ऐतिहासिक विश्वनाथ घाट में कई मंदिरों में जाने के अनुभव को असाधारण बताया। विश्वनाथ प्रशासन ने पर्यटकों को स्मृति चिन्ह के रूप में बांस की पानी की अत्याधुनिक बोतल भी भेंट की। पर्यटकों ने विश्वनाथ मंदिर का भ्रमण किया और रेशम विभाग एवं नाबार्ड के अधीन आयोजित प्रदर्शनी के कलात्मक सौनंदर्य को निहारा। 28 विदेशी पर्यटकों का स्वागत विश्वनाथ के विधायक प्रमोद बारठाकुर, विश्वनाथ उप-विभागीय मजिस्ट्रेट और अतिरिक्त आयुक्त जय शिबानी, विश्वनाथ जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दिगंता वैश्य, पुलिस अधीक्षक नबीन सिंह और अतिरिक्त आयुक्त लिजा तालुकदार, डॉ. सूर्य कमल बोरा और अन्य ने किया। विश्वनाथ पुलिस अधीक्षक नवीन सिंह,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कुलेंद्र नाथ डेका, चुनाव अधिकारी देबाशीष गोस्वामी, सहायक आयुक्त पुष्पंकर पाटीर, सृष्टि कलिता, बिचित्रा दास, पुलिस उपाधीक्षक जयंत बरुआ, विभिन्न विभागों के अधिकारी और कर्मचारी, पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता और बिश्वनाथघाट के स्थानीय लोग .उपस्थित रहे इस दौरान विश्वनाथ प्रशासन ने विदेशी पर्यटकों और पर्यटक गाइडों को बंदरगाह पर लाने की व्यवस्था की। करीब दो घंटे बिश्वनाथघाट में रुकने के बाद पर्यटकों ने वापस डिब्रूगढ़ की यात्रा शुरू की। जहाज से भारत और असम में नदी पर्यटन के क्षेत्र में नई संभावनाएं खुलने की उम्मीद है।मालूम हो कि पीएम मोदी ने 13 जनवरी को हरी झंडी दिखाई थी, जिसके बाद यह रिवर क्रूज वाराणसी से अपनी यात्रा शुरू की थी। आईडब्ल्यूएआई ने

अपने एक बयान में कहा कि एमवी गंगा विलास 28 फरवरी को डिब्रूगढ़ में अपनी यात्रा का समापन करेगा। जानकारी के मुताबिक, 28 फरवरी को डिब्रूगढ़ में भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय के तहत एक स्वागत समारोह आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्री सर्वानंद सोनोवाल अन्य केंद्रीय और राज्य मंत्रियों के साथ शामिल होंगे। 28 फरवरी को पटना साहिब, बोधगया, विक्रमशिला, ढाका, सुदरबन और काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के रास्ते डिब्रूगढ़ पहुंचने के बाद क्रूज 50 दिनों में 3,200 किमी की दूरी तय करेगा। मालूम हो कि क्रूज में 36 पर्यटकों की क्षमता वाले तीन डेक और 18 सुइट हैं। यह अगले दो वर्षों के लिए आने-जाने के लिए पहले से ही बुक है। बंदरगाह और जलमार्ग मंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने कहा कि एमवी गंगा विलास क्रूज ने भारत और बांग्लादेश को दुनिया के नदी क्रूज मानचित्र पर प्रस्तुत किया है। भारतीय उपमहाद्वीप में पर्यटन और माल ढुलाई के लिए एक नया क्षितिज और कार्यक्षेत्र खोल रहा है। आध्यात्मिकता की तलाश करने वाले पर्यटकों को काशी, बोध जैसे स्थलों की यात्रा करने का अवसर मिलता है। गया, विक्रमशिला, पटना साहिब और प्राकृतिक विविधता को देखने के इच्छुक लोग सुंदरवन और काजीरंगा जैसे स्थलों को कवर करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि यह मार्ग भारत और बंगलादेश दोनों के लिए अंतर्देशीय जलमार्गों के माध्यम से माल ढुलाई के लिए एक नए अध्याय की शुरुआत करता है।

महिला की हत्या के आरोप में सेना का अधिकारी गिरफ्तार

तेजपुर/रंगिया (निसं)। एक महिला की हत्या के आरोप में तेजपुर से रक्षा (सेना) प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल एएस वालिया को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। असम पुलिस ने बताया है कि चांगसारी पुलिस ने वालिया को गिरफ्तार किया है। वालिया तेजपुर मिशन चाराली स्थित भारतीय सेना की चौथी (फोर) कोर में रक्षा विभाग के प्रवक्ता के रूप में कार्यरत हैं। शोणितपुर जिला की अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मधुरिमा दास ने शनिवार को बताया कि कामरूप (ग्रामीण) जिला के चांगसारी पुलिस थाने की टीम रक्षा प्रवक्ता को बीती रात तेजपुर से गिरफ्तार किया है। उल्लेखनीय है कि गत 15 फरवरी को चांगसारी में राष्ट्रीय राजमार्ग के बाहरी इलाके में तमिलनाडु की एक महिला का शव मिलने के बाद पुलिस मामले की जांच में जुट गई थी। महिला के गले में लगे लॉकेट से रक्षा प्रवक्ता के साथ संबंधों का पता चला था। पुलिस सूत्रों के अनुसार पता चला है कि बंद्या नाम की महिला लंबे समय से तेजपुर में सेना के शिविर में रह रही थी और महिला के एक बेटे को गुवाहाटी से हावड़ा रेलवे स्टेशन भेजा गया था। पता चला है कि महिला के गले में पड़ा लॉकेट भी दक्षिण भारत के एक मंदिर से लाया गया था। पुलिस ने कथित तौर पर लॉकेट कर्नल वालिया के नाम पर लिए जाने के बाद ऑपरेशन शुरू किया। पूरी तरह से छानबीन के बाद आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

नेहरू युवा केंद्र का जिला स्तरीय युवा-संसद कार्यक्रम आयोजित

रंगिया (निसं)। भारत सरकार के युवा कल्याण और खेल मंत्रालय के अधीनस्थ नेहरू युवा केंद्र, कामरूप के सौजन्य से तथा आई क्यूएसीएनएसएस, भारत स्काउट एंड गाइड, मानवेंद्र शर्मा बालिका महाविद्यालय एवं स्वयंसेवी कार्यक्रम समृद्धि के सहयोग से आज शनिवार को मानवेंद्र शर्मा बालिका महाविद्यालय प्रांगण में जिला स्तर पर नेईबाहुद युवा संसद शीर्षक एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। नेहरू युवा केंद्र के अधिकारी गोपीनाथ दास के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन मानवेंद्र शर्मा बालिका महाविद्यालय की प्राचार्य कनिका गोस्वामी ने किया। कार्यक्रम में रंगिया के विधायक भवेश कलिता के अलावा रंगिया विकास खण्ड के सह- खण्ड उन्नयन अधिकारी चम्पावती दास, राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त प्रशिक्षक हितेंद्र शर्मा, मानवेंद्र शर्मा बालिका महाविद्यालय के प्रवक्ता क्रमश: सैय्यद हबीबुल हक, ड0 मनोज गोस्वामी, सैय्यद तौफिकुर रहमान, रमेन चन्द्र नाथ, रंगिया महाविद्यालय के प्रवक्ता प्रेम किशन सिंग, समृद्धि के सचिव दीकेन डेका सहित मानवेंद्र शर्मा महाविद्यालय के बहुत से प्रवक्ता और यूक्लिड ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के प्रवक्ता और छात्र-छात्राएं, रंगिया महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं और मानवेन्द्र

शर्मा बालिका महाविद्यालय की छात्राएं कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में भाग लेने वाले बहुत से आमंत्रित अतिथियों ने जी-20 और वाई-20 विषय पर भाषण दिया। उपरोक्त भाषण प्रसंग में उन्होंने उपस्थित लोगों को वर्तमान समय मे विभिन्न विभागों द्वारा जारी सरकारी योजनाओं के विषय में बताया। इस मौके पर उन्होंने नौकरी के पीछे घूरकर अपना समय बर्बाद करने के बजाय उद्योग की स्थापना या देश को नेतृत्व देने वाले व्यक्ति के रूप में अपने आप को बनाने के लिए युवक-युवतियों को परामर्श दिया। असम में उद्योगों की काफी संभावना का उल्लेख करते हुए छोटे या छोटे उद्यमों की स्थापना के साथ स्वरोजगार के अलावा समाज के सामने अग्रणी होने का आह्वान किया।

दो ट्रकों के आमने-सामने की टक्कर में एक की मौत, दो घायल

धुबड़ी (हि.स.)। धुबड़ी जिलांतर्गत गोलकगंज के आगमनी में देर रात को हुए भीषण सड़क हादसे में एक चालक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि अन्य दो व्यक्ति घायल हो गए। हादसा दो ट्रकों (एएस-01एचसी-4272 और एचआर-38वाई-356) की आमने-सामने की टक्कर के कारण हुआ। मृतक चालक की पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस सूत्रों ने बताया है कि देर रात करीब डेढ़ बजे राष्ट्रीय राजमार्ग-17 पर आगमनी थाने के लोहे के पुल पर के पास धुबड़ी की ओर जा रहे ट्रक (एएस-01एचसी-42-72) की छगलिया की ओर जा रहे (एचआर-38वाई-1356) ट्रक के साथ आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसे में ट्रक (एचआर-38वाई-1356) के चालक की मौके पर ही मौत हो गई।

ड्रग्स समेत 5 लाख रुपए जब्त एक महिला समेत 7 गिरफ्तार

नगांव (हि.स.)। नगांव जिलांतर्गत जुरिया के नागबांधा में पुलिस ने ड्रग्स के खिलाफ बड़े पैमाने पर कार्रवाई करते हुए ड्रग्स समेत 5 लाख रुपए नगद बरामद किया है। जुरिया पुलिस ने शनिवार को बताया है कि खुफिया सूचना के आधार पर जुरिया पुलिस और सीआरपीएफ ने संयुक्त रूप से बीती रात नागबांधा गांव निवासी सैफुल इस्लाम के घर पर छापेमारी की। इस्लाम के घर से 15 साबुनदानी में छुपाकर रखे गए ड्रग्स के साथ 5 लाख रुपए नकद बरामद किये गए। छापेमारी दल ने एक महिला सहित सात लोगों को ड्रग्स तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया है।

असम माहेश्वरी भवन में एमपीएल सीजन-10 का भव्य शुभारंभ

गुवाहाटी (नसं)। माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा माहेश्वरी प्रीमियर लीग सीजन-10 के कार्यक्रम का आज असम माहेश्वरी भवन के मुख्य हाल में मुख्य अतिथि आनंद मिश्रा (आईपीएस) के कर कमलों से आरंभ किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुवात करते हुए भाई मनोज चांडक ने कार्यक्रम एवं मुख्य अतिथि के बारे में उपस्थित सभी सदस्यों को विस्तार से बताया। कार्यक्रम के तीनों संयोजक भाई मनीष, भाई नितिन एवं भाई राघव, युवा अध्यक्ष आदित्य मुंदड़ा,सचिव कमल मूंधड़ा, सभा उपाध्यक्ष कुशल जी काबरा एवं महिला उपाध्यक्ष सीता झवर को मुख्य अतिथि के साथ मंचासीन करवाया गया। युवा अध्यक्ष ने अपने उदबोधन में सभी टीमों के प्रोमोटर एवं खिलाड़ियों को अग्रिम शुभकामनाएं प्रेषित की तथा खेल भावना को सर्वोपरि रखने की अपिल की। मुख्य अतिथि आनंद सर ने बताया कि माहेश्वरी समाज मे हो रहे सामाजिक कार्य एवं युवाओं के खेल कूद में सहयोग को हमेशा ऐसे ही जारी रखना चाहिए। माहेश्वरी समाज देश का अग्रणी समाज है जिसे देखकर कई अन्य समाज भी आपसे प्रेरणा लेते है। इसके पश्चात आनंद सर ने ट्राफी एवं जर्सी का अनावरण किया साथ ही साथ सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी तथा मंचासीन सभी पदाधिकारियों ने शुभकामनाएं सनंदेश दिया।इस उदघाटन सत्र में समाज के लोगों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। कल के उद्घाटन सत्र के बाद लतासिल फील्ड मैं आज हुए माहेश्वरी प्रीमियर लीग सीजन 10 के चारों लिग मैचों के परिणाम:- पहला मैच: स्पार्टन स्ट्राइकर्स ने दिसपुर फाइटर्स को सात विकेट से हराया। दूसरा मैच: डूंगरगढ़ रॉयल्स ने टीम महेश को आठ विकेट से हराया। तीसरे मैच: स्पार्टन स्ट्राइकर्स ने डूंगरगढ़ रॉयल्स को चार विकेट से हराया। चौथे मैच:दिसपुर फाइटर्स ने टीम महेश को 17 रन से हराकर अपने आप को लिग में बनाये रखा है अब कल यह देखना होगा कि कोनसी टीम जीतती है और कोनसी टीम यह चमचमाती ट्रॉफी अपने नाम करती है।कल के सारे मैच बहुत ही रोमांच से भरे हुए और बहुत ही अहम ओर निर्णायक होंगे।

भारी मात्रा में कीमती लकड़ी जब्त

चिरांग (हि.स.)। चिरांग जिला में भारत-भूटान सीमा से लगने वाले संरक्षित वनों में तस्करों द्वारा वनों की कटाई का सिलसिला जारी है। शनिवार को भी वन विभाग द्वारा गांव से भारी मात्रा में तस्करी की लकड़ी जब्त की गई है। वन विभाग के सूत्रों ने बताया है कि खुफिया जानकारी के आधार पर वन विभाग ने रुनीखाता वन परिक्षेत्र अंतर्गत उडालगुड़ी दो नंबर गांव में छापा मारकर भारी मात्रा में तस्करी की लकड़ी जब्त की है। वन अधिकारियों ने कहा कि जब्त की गई लकड़ी का बाजार मूल्य 3 लाख रुपए से अधिक होने का अनुमान है। वन विभाग ने इस संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर ली है। हालांकि, इस संबंध में किसी की भी गिरफ्तारी नहीं हो पाई है।

वार्षिक उत्सव में मेपल बियर कैनेडियन प्रीस्कूल के बच्चों ने मचाई धूम

गुवाहाटी। महानगर के भंगागढ़ स्थित जीएमसीएच प्रेक्षागृह में शनिवार को मेपल बियर कैनेडियन प्रीस्कूल की ओर से वार्षिक समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने अपने जलवों से सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन एएम टेलीविजन प्रा. लि. समूह की प्रमुख तथा मुख्य अतिथि डॉ. अक्षता नारायण ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर एबीसी स्थित मेपल बियर कैनेडियन प्रीस्कूल की प्रमुख श्रीमती निधि प्रवीण गोयल, कार्यक्रम में वक्ता डॉ. सरोज तिवारी, प्रवीण गोयल सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने बच्चे को शुभकामनाएं देते हुए प्रेरित किया। श्रीमती निधि परवीन गोयल ने कहा कि वार्षिक दिवस की थीम %आज़ादी का अमृत महोत्सव% को चिन्हित करना था, ताकि छोटे बच्चों में देश के प्रति प्रेम और देशभक्ति की लो जगाई जा सके। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का उद्देश्य इन नन्हे मुन्ने बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभा को उजागर करना था। वार्षिक उत्सव में 2 से 6 वर्ष तक की आयु वालों वाले बच्चों ने देश के विभिन्न राज्यों की कला संस्कृति

को दर्शाते हुए शानदार नृत्य की प्रस्तुति दी, जिसे देख दर्शक दीर्घा में बैठे उनके अभिभावकों के चेहरे खिल उठे। कार्यक्रम में क्या हम अपने बच्चों को सुन रहे हैं? विषय पर एक पेरेंटिंग सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें वक्ता के रूप में जानी-मानी बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. सरोज तिवारी ने अभिभावकों को कई अहम बातें बताई। कार्यक्रम का समापन क्लास सीनियर किंडरगार्टन के ग्रेजुएशन सेरेमनी के साथ हुआ जहां अभिभावक व शिक्षक भावुक नजर आए। इस दौरान अभिभावकों ने मेपल बियर द्वारा प्रदान किए गए उत्कृष्ट स्कूल प्रबंधन और शिक्षा के बारे में बात करते हुए अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास पर खुशी जाहिर की। मेपल बीयर अंतरराष्ट्रीय प्री-स्कूल श्रृंखला का एक हिस्सा है, जो कनाडा की कार्यप्रणाली पर आधारित प्री-स्कूल और डे केयर सुविधा प्रदान करता है। साथ ही भारत सरकार की नई शिक्षा नीति 2020 के साथ पूर्ण रूप से मेल खाता है। श्रीमती गोयल ने सभी बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया जिन के सहयोग से वार्षिक समारोह का शानदार आयोजन किया जा सका।

दो किलो से अधिक मॉर्फिन के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

गुवाहाटी (हि.स.)। असम पुलिस और सीआरपीएफ के द्वारा संयुक्त रूप से चलाए गए ड्रग्स विरोधी अभियान के दौरान भारी मात्रा में मार्फिन बरामद करने के साथ ही दो तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्वशर्मा ने ट्विटर पर लिखा है कि असम नशा विरोधी अभियान को एक बड़ी सफलता मिली है। कार्बी आंग्लांग पुलिस ने सीआरपीएफ के साथ मिलकर संयुक्त रूप से राष्ट्रीय राजमार्ग-36 पर डिलाई तलाशी गेट के सामने आज एक कार (डब्ल्यूबी-26बीई-3503) को तलाशी के लिए रोका गया। तलाशी के दौरान वाहन से चार पैकेट्स में छुपाकर लाये गए मॉर्फिन को बरामद किया गया। बरामद मॉर्फिन का वजन 2.013 ग्राम है। मॉर्फिन को ड्राइवर के साइड वाले दरवाजे में छुपाया गया था। वाहन में सवार ड्राइवर समेत दो लोगों को पुलिस ने ड्रग्स तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस इस संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर दोनों तस्करों से गहन पूछताछ कर रही है।

पत्नी की धारदार दाव से पति ने की हत्या, गिरफ्तार

कार्बी आंग्लांग (हि.स.)। कार्बी आंग्लांग जिला के बोकाजान में पति द्वारा पत्नी की निर्मम तरीके से हत्या किये जाने का मामला सामने आया है। शनिवार को मिली जानकारी के अनुसार पति ने धारदार दाव से हमला कर अपनी पत्नी की हत्या कर दी और आम आदमी की तरह बिना किसी पछतावे के घूमता रहा। घटना असम-नगालैंड सीमावर्ती खटखटी थाना क्षेत्र के पक्का फील्ड की नेपाली झुग्गी बस्ती में घटी है। गांव सुरक्षा वाहिनी के सदस्यों ने आज बताया कि हत्या बीती रात करीब 11 बजे के आसपास होने का संदेह है। पुलिस आज तड़के मौके पर पहुंची और हत्यारे पति राजेश शर्मा (46) को गिरफ्तार कर लिया। उसके कबूलनामे के आधार पर, राजेश शर्मा के घर के पास एक तालाब से पत्नी पद्मा शर्मा (30) का शव और हत्या में इस्तेमाल धारदार दाव को पुलिस ने बरामद कर लिया। पुलिस की जांच में ही यह स्पष्ट हो पाएगा कि राजेश शर्मा ने पत्नी की हत्या क्यों और कैसे की। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

पूसीरे कुछ और जोड़ी होली स्पेशल ट्रेनें चलाएगा

गुवाहाटी (हि.स.)। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (पूसीरे) ने यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रण करने के लिए कुछ और जोड़ी होली स्पेशल ट्रेनें चलाने का फैसला किया है। डिब्रूगढ़-गोरखपुर-डिब्रूगढ़ और न्यू जलपाईगुड़ी-गोरखपुर-न्यू जलपाईगुड़ी के बीच होली स्पेशल ट्रेनें दो ट्रिप के लिए चलेंगी। नाहरलगुन- ओखा- नाहरलगुन और न्यू जलपाईगुड़ी-सियालदह-न्यू जलपाईगुड़ी के बीच होली स्पेशल ट्रेनें एक ट्रिप के लिए चलेंगी। पूसीरे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी सब्यसाची डे ने शनिवार को बताया कि होली स्पेशल ट्रेन संख्या 05978 (डिब्रूगढ़-गोरखपुर) डिब्रूगढ़ से 02 और 09 मार्च को 19.25 बजे रवाना होगी और 04 और 11 मार्च को 07.30 बजे गोरखपुर पहुंचेगी। वापसी दिशा में, होली स्पेशल ट्रेन संख्या 05977 (गोरखपुर- डिब्रूगढ़) गोरखपुर से 07 और 14 मार्च को 07.50 बजे रवाना होगी और अगले दिन 21.15 बजे डिब्रूगढ़ पहुंचेगी। होली स्पेशल ट्रेन संख्या 05777 (गोरखपुर-न्यू जलपाईगुड़ी) 04 और 11 मार्च को गोरखपुर से 17 बजे रवाना होगी और अगले दिन 11 बजे न्यू जलपाईगुड़ी पहुंचेगी। वापसी दिशा

में होली स्पेशल ट्रेन संख्या 05778 (न्यू जलपाईगुड़ी-गोरखपुर) 06 और 13 मार्च को न्यू जलपाईगुड़ी से 15.00 बजे रवाना होगी और अगले दिन 06.30 बजे गोरखपुर पहुंचेगी। इन विशेष ट्रेनों में 22 कोचे होंगे। इसमें एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सीटिंग कोचे होंगे। होली स्पेशल ट्रेन संख्या 09525 (ओखा- नाहरलगुन) 07 मार्च को ओखा से 22.00 बजे रवाना होगी और 10 मार्च को 16.00 बजे नाहरलगुन पहुंचेगी। वापसी दिशा में, होली स्पेशल ट्रेन संख्या 09526 (नाहरलगुन-ओखा) 11 मार्च को नाहरलगुन से 10.00 बजे रवाना होगी और 14 मार्च को 03.35 बजे ओखा पहुंचेगी। इस स्पेशल ट्रेन में 24 कोचे होंगे। इसमें एसी 3-टियर, एसी 2-टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सीटिंग कोचे होंगे। होली स्पेशल ट्रेन संख्या 03103 (सियालदह-न्यू जलपाईगुड़ी) 03 मार्च को सियालदह से 23.40 बजे रवाना होगी और अगले दिन 10.45 बजे न्यू जलपाईगुड़ी पहुंचेगी। वापसी दिशा में, होली स्पेशल ट्रेन संख्या 03104 (न्यू जलपाईगुड़ी- सियालदह) 04 मार्च को न्यू जलपाईगुड़ी से 12.15 बजे रवाना होगी और उसी दिन 23.50 बजे सियालदह पहुंचेगी। इस स्पेशल ट्रेन में 16 एसी 3-टियर कोचे होंगे। होली स्पेशल ट्रेन संख्या 03105 (सियालदह-न्यू जलपाईगुड़ी) 04 मार्च को सियालदह से 23.40 बजे रवाना होगी और अगले दिन 10.45 बजे न्यू जलपाईगुड़ी पहुंचेगी। वापसी दिशा में, होली स्पेशल ट्रेन संख्या 03106 (न्यू जलपाईगुड़ी-सियालदह) 05 मार्च को न्यू जलपाईगुड़ी से 12.15 बजे रवाना होगी और उसी दिन 23.50 बजे सियालदह पहुंचेगी। इस विशेष ट्रेन में 19 कोचे होंगे। इसमें एसी 3-टियर, एसी 2-टियर और एसी फर्स्ट क्लास कोचे होंगे।

समान विचारधारा वाले दलों को साथ लेकर चलेगी कांग्रेस : खड़गे

रायपुर/नई दिल्ली, (हि.स.)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनाव में पार्टी समान विचारधारा वाले दलों को साथ लेकर चलेगी। खड़गे ने शनिवार को कांग्रेस के 85वें महाअधिवेशन के दूसरे दिन के प्रथम सत्र को रायपुर में संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस ऐसे सभी दलों को साथ लेकर चलेगी जो भाजपा और आरएसएस की विचारधारा से लड़ने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस देश जोड़ने का काम करती है जबकि भाजपा देश तोड़ना चाहती है। ऐसे में समान विचारधारा के लोगों को एक मंच पर आने की जरूरत है तभी देश के संवैधानिक संस्थानों को बचाया जा सकेगा। खड़गे ने अपने संबोधन के दौरान मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि नोटबंदी, तालाबंदी सहित जीएसटी ने देश की अर्थव्यवस्था तो तबाह कर दिया है। लेकिन मोदी सरकार इन फैसलों को अपनी उपलब्धि बता रही है। खड़गे ने कहा कि आज देश सबसे कठिन चुनौतियों से गुजर रहा है। सत्ता में बैठे लोग संवैधानिक मूल्यों का हनन कर रहे हैं। वे लोग देश की जनता के अधिकारों और भारत के मूल्यों पर हमला बोल रहे हैं। ऐसे समय में देश में एक नए आंदोलन के शुरूआत की जरूरत है।

कांग्रेस की जीत में समाहित है देश की जीत : सोनिया गांधी

कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा कि देश संकट के दौर से गुजर रहा है। वर्तमान की मोदी सरकार और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) देश को कमजोर कर रहे हैं। कांग्रेस देश को जोड़ने वाली पार्टी है।

ऐसे में कांग्रेस की जीत में देश की जीत समाहित है। छत्तीसगढ़ के रायपुर में चल रहे कांग्रेस के 85वें पूर्ण अधिवेशन में शनिवार को दूसरे दिन सोनिया गांधी ने मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधा है। सोनिया गांधी ने कहा कि पीएम मोदी देश के लिए नहीं बल्कि वह अपने कुछ मित्रों के लिए सत्ता चला रहे हैं। देश इस समय संकट के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में कांग्रेस के लोगों को संघर्ष के लिए तैयार रहना चाहिए। कांग्रेस सिर्फ एक राजनीतिक पार्टी ही नहीं बल्कि देश के आम जन की आवाज है। हम लोगों के समानता, स्वतंत्रता और न्याय के लिए लड़ते हैं। यह पार्टी लोगों की आवाज को आगे बढ़ाती है। उन्होंने कहा कि हमारा रास्ता आसान नहीं है लेकिन हम पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के नेतृत्व में जरूर जीतेंगे। सोनिया गांधी ने अपने संबोधन के दौरान भारत जोड़ो यात्रा की तारीफ की। उन्होंने कन्याकुमारी से कश्मीर की यात्रा करने के लिए पार्टी नेता राहुल गांधी को बधाई दी।

नई शिक्षा नीति में शिक्षा और कौशल पर सरकार का बराबर जोर: प्रधानमंत्री

नई दिल्ली, (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि सरकार भविष्योन्मुखी फैसले लेते हुए देश के युवाओं को उद्योगों की जरूरत के अनुरूप कौशल प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में शिक्षा और कौशल दोनों पर बराबर जोर दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी शनिवार को 'युवा शक्ति का उपयोगः कौशल और शिक्षा' विषय पर बजट के बाद के वेबिनार को संबोधित कर रहे थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि वर्तमान बजट ने शिक्षा क्षेत्र की बुनियाद को मजबूत करने का काम किया है। अब इसे अधिक व्यावहारिक और उद्योगों के अनुरूप बनाया जा रहा है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा और कौशल दोनों पर बराबर जोर दिया जा रहा है। भविष्योन्मुखी फैसले जैसे वर्चुअल लैप और राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी सम्पूर्ण शिक्षा क्षेत्र में व्यापक बदलाव लाएंगे। केंद्र सरकार प्रयास कर रही है कि छात्रों को क्लासरूम से बाहर का अनुभव प्राप्त हो इसके लिए इंटर्नशिप और प्रशिक्षण मुहैया कराया जा रहा है। राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत 50 लाख युवाओं को वजीफे का प्रावधान है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि सरकार इंडस्ट्री-4 से जुड़े कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, एलओटी और ड्रोन से जुड़े कौशल जरूरतों को पूरा करने के लिए युवाओं को तैयार कर रही है। उल्लेखनीय है कि यह वेबिनार केंद्रीय बजट-2023 में घोषित पहलों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विचारों और सुझावों की तलाश के लिए सरकार द्वारा आयोजित 12 पोस्ट-बजट वेबिनार की श्रृंखला में से तीसरा है।

पेपर लीक मामले में हिमाचल कर्मचारी चयन आयोग के पूर्व सचिव पर चलेगा केस, सरकार की मंजूरी

शिमला, (हि.स.)। हिमाचल प्रदेश कर्मचारी चयन आयोग के पूर्व सचिव एचएएस अधिकारी डॉ. जितेंद्र कंवर पर विजिलेंस का शिकंजा कसने की तैयारी है। राज्य सरकार ने भी उनके विरुद्ध अभियोजन की मंजूरी दे दी है। ऐसे में विजिलेंस डॉ. कंवर को जल्द पूछताछ के लिए तलब करेगी। एएसपी विजिलेंस हमीरपुर रेणु शर्मा ने बताया कि पेपर लीक मामले में विजिलेंस ने अपनी 626 पन्नों की चार्जशीट के पहले चालान में पूर्व सचिव जितेंद्र कंवर का नाम शामिल किया है। इसके अलावा मुख्य आरोपित उमा आजाद और उसके दो बेटों सहित सभी आठ आरोपितों के नाम पहली चार्जशीट में शामिल किये गए हैं। इनमें चार आरोपित न्यायिक हिरासत में हैं और चार को न्यायालय से जमानत मिल चुकी हैं। कर्मचारी चयन आयोग की ओर से 25 दिसंबर, 2022 को पोस्ट कोड 965 जेओए आईटी की भर्ती परीक्षा प्रस्तावित थी। इसके पहले ही 23 दिसंबर को हमीरपुर विजिलेंस टीम ने चयन आयोग की गोपनीय शाखा की वरिष्ठ सहायक उमा आजाद को पेपर लीक मामले में गिरफ्तार कर लिया। जेओए आईटी के 300 से अधिक पदों को भरने के लिए आयोग ने एक लाख तीन हजार अभ्यर्थियों को एडमिट कार्ड जारी किए थे। पेपर लीक मामला उजागर होने के बाद राज्य सरकार ने चयन आयोग का कामकाज निलंबित कर दिया था। बीते 20 फरवरी को सुक्खू सरकार ने आयोग को बंद करने का कड़ा फैसला लिया है। चयन आयोग का सारा कार्य अब लोकसेवा आयोग के हवाले कर दिया गया है।

सत्येंद्र जैन की जमानत याचिका पर 27 फरवरी को होगी सुनवाई

अजय कुमार

नई दिल्ली। मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में जेल में बंद कैबिनेट मंत्री सत्येंद्र जैन की जमानत याचिका पर दिल्ली हाईकोर्ट प्रवर्तन निदेशालय की अंतिम दलीलों पर 27 फरवरी को सुनवाई करेगा। ईडी की तरफ से पेश हुए अतिरिक्त सालिसिटर जनरल (एएसजी) एसवी राजू ने न्यायमूर्ति दिनेश कुमार शर्मा की पीठ ने अगले हफ्ते एएसजी की अंतिम प्रस्तुतियां लाने के आदेश दिया है। उन्होंने कहा था कि उनका मामला यह है कि सत्येंद्र जैन का इससे कोई लेना-देना नहीं है। इससे पहले 13 फरवरी को उच्च न्यायालय ने सत्येंद्र जैन और सह आरोपी अंकुश जैन और वैभव जैन की जमानत याचिका पर सुनवाई स्थगित कर दी थी। और वैभव जैन की ओर से पेश हुए अधिवक्ता सुशील कुमार गुप्ता ने न्यायमूर्ति शर्मा की पीठ के समक्ष अपनी दलीलें पूरी की थीं। उन्होंने कहा था कि यह अपराध और मनी लॉन्ड्रिंग का मामला नहीं और यह कि ईडी ने कथित रूप से आय से अधिक संपत्ति (डीए) का मामला स्थापित किया था लेकिन यह उनका मामला नहीं हो सकता क्योंकि एजेंसी को पहले एक अपराध के अस्तित्व को स्थापित करना होगा। अदालत के विजय मदन लाल फैसले का हवाला देते हुए गुप्ता ने तर्क दिया था कि ईडी ने मौजूदा मामले में उनके मुवक्किलों को जो भूमिका दी है वह सीबीआई मामले से अलग होनी चाहिए लेकिन ईडी ने उन पर आरोप लगाया है उसी नियम के आधार पर है।

क्रैप के गोदाम में आग, लाखों का कबाड़ राख, दो ट्रक भी जले

नई दिल्ली (ईएमएस)। ग्रेटर नोएडा दादरी थाना क्षेत्र के चचेड़ा गांव में आर्मी नॉर्थलैंड मैनेजमेंट कॉलेज के पास कबाड़े के गोदाम में शुक्रवार रात अचानक आग लग गई। आग ने भीषण रूप धारण कर लिया। पहले तो लोगों ने आग पर पानी डाल कर बुझाने का प्रयास किया, लेकिन बेकाबू होती आग को देख फायर बिग्रेड को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही फायर बिग्रेड की आधा दर्जन गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने लगीं। कई घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। आग की चपेट आ कर दो ट्रक समेत चार गाड़ियां भी जल कर खाक हो गईं। गोदाम में आग लगने के बाद उठ रही लपटें बहुत भीषण थीं। गोदाम में प्लास्टिक के सामान आदि रखे होने के कारण आग तेजी से फैली और पूरे गोदाम में अपनी चपेट में ले लिया। चीफ फायर ऑफिसर ने बताया कि चचेड़ा गांव में आर्मी नॉर्थलैंड मैनेजमेंट कॉलेज के पास कबाड़ के

गोदाम में आग लगने की सूचना 12.23 मिली। सूचना मिलते ही फायर सर्विस यूनिट घटना स्थल के लिए रवाना हो गई। 6 गाड़ियों की मदद से आग पर नियंत्रण कर लिया गया।

आईटीओ के पास अवैध निर्माण पर प्रहार मंदिर और मस्जिद पर पीडीडब्लूडी की गिरी गाज

राकेश शर्मा

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली के महरौली में डीडीए के अतिक्रमण विरोधी अभियान के बाद शनिवार को आईटीओ के पास अतिक्रमण विरोधी कार्रवाई जारी है। इस बार अतिक्रमण के खिलाफ दिल्ली विकास प्राधिकरण नहीं बल्कि केंद्रीय लोक निर्माण विभाग ने की है। अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई को अंजाम देते हुए राजधानी के व्यस्ततम और लुटियन जोन इलाके में स्थित एक मंदिर और एक मस्जिद को ध्वस्त कर दिया है। स्थानीय लोगों ने इसका विरोध किया लेकिन दिल्ली पुलिस की सुरक्षा में पीडीडब्लूडी विभाग की टीम का अवैध निर्माण के खिलाफ अभियान जारी रहा। दिल्ली के आईटीओ में अतिक्रमण की कार्रवाई को अंजाम देने से पहले केंद्रीय लोक निर्माण विभाग ने संबंधित पक्षों को नोटिस भी जारी किया था। इतना ही नहीं पीडब्लूडी विभाग ने अतिक्रमण को हटाने के लिए कुछ दिनों पहले होर्डिंग्स भी लगाए थे। आवश्यक सूचना के नाम से जारी आदेश में पीडब्लीडी के बोर्ड पर स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि यह भूमि केंद्रीय लोक निर्माण विभाग की है। इस पर किसी प्रकार का अतिक्रमण दंडनीय अपराध है। यह सूचना पीडब्लडी के कार्यपालक अभियंता की ओर से जारी है। बता दें कि हाल ही में दिल्ली विकास प्राधिकरण ने महरौली के घौसिया स्लम कॉलोनी में पांच दिनों तक अवैध निर्माण के खिलाफ अभियान चलाया था। अतिक्रमण विरोधी अभियान के दौरान डीडीए ने सैकड़ों बहुमंजिला इमारतों को ढहा दिया था। भारी विरोध के बाद एलजी विनय सक्सेना के आदेश पर डीडीए ने अभियान को रोकने का फैसला लिया। अब यह मामला दिल्ली हाईकोर्ट में लंबित है।

नौसेना अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए बढ़ाएगी जहाजों, पनडुब्बियों का बुनियादी ढांचा

- वार्षिक रिफिट सम्मेलन में बुनियादी ढांचे के विस्तार की योजनाओं पर चर्चा की गई
- परिचालन उपलब्धता के लिए नवीनतम तकनीकों के इस्तेमाल करने का आह्वान

नई दिल्ली, (हि.स.)। भारतीय नौसेना ने अपने वार्षिक रिफिट सम्मेलन में जहाजों, पनडुब्बियों की परिचालन उपलब्धता और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए बुनियादी ढांचा बढ़ाने का फैसला लिया है। नौसेना का यह वार्षिक बुनियादी ढांचा एवं स्वदेशीकरण सम्मेलन (एआईआईसी) पूर्वी नौसेना कमान, विशाखापत्तनम में 23-24 फरवरी को हुआ। इसकी अध्यक्षता चीफ ऑफ मैटेरियल (सीओएम) वाइस एडमिरल संदीप नैथानी ने की। सम्मेलन के दौरान मरम्मत योजनाओं, भारतीय नौसेना के जहाजों, पनडुब्बियों की परिचालन उपलब्धता और भारतीय नौसेना की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बुनियादी ढांचे के विस्तार की योजनाओं पर चर्चा की गई। मटेरियल प्रमुख ने नौसेना प्लेटफार्मों की मशीनरी, हथियार और सेंसर के रखरखाव में प्रगति को सराहा। उन्होंने तकनीकी बिरादरी से आग्रह किया कि वे मौजूदा चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करके रखरखाव अवधि में कमी लाने का प्रयास करें। उन्होंने जहाजों और पनडुब्बियों की बढ़ी हुई परिचालन उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ब्लॉकचेन, क्वांटम कम्प्यूटेशन, आईओटी के लिए 5जी, रोबोटिक्स आदि जैसी नवीनतम तकनीकों का उपयोग करने का आह्वान किया।

उन्होंने भविष्य में भारतीय नौसेना की बढ़ती भूमिका और बेस पोर्ट से दूर जहाजों की विस्तारित तैनाती पर प्रकाश डाला, जो गुणवत्ता आउटपुट देने के लिए मरम्मत अधिकारियों पर अधिक निर्भरता की मांग करता है। एआईआईसी बैठक के दौरान मटेरियल प्रमुख ने विभिन्न तकनीकी और समुद्री बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने भारतीय नौसेना में मरम्मत और रीफिटिंग सुविधाओं को बढ़ाने के उद्देश्य से चल रही तकनीकी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर संतोष व्यक्त किया।

बैठक के दौरान अगले 15 वर्षों में शामिल किए जाने वाले भविष्य के प्लेटफार्मों के लिए अतिरिक्त बर्थिंग स्पेस के निर्माण सहित विभिन्न समुद्री बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की समीक्षा की गई। सम्मेलन के दौरान स्वदेशीकरण पर एक विशेष सत्र आयोजित किया गया, जो भारत सरकार की 'आत्मनिर्भर भारत' की पहल के अनुरूप है। सम्मेलन में नौसेना मुख्यालय, तीन नौसेना कमानों, त्रि-सेवाओं अंडमान और निकोबार कमान, महानिदेशक नौसेना परियोजनाओं, नौसेना डॉकयार्ड, मरम्मत यार्ड और भारतीय नौसेना के सामग्री संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भाजपा ने मेयर को 'खल-नायिका' बताते हुए पोस्टर जारी किया

आशीष वर्मा

नई दिल्ली। एमसीडी सदन में आम आदमी पार्टी और भाजपा पार्षदों के बीच जमकर हुए हंगामें और मारपीट के बाद अब पोस्टर वार शुरू हो गया है। सबसे पहले दिल्ली भाजपा की तरफ से पोस्टर जारी किया गया है, जिसमें मेयर शैली ओबेरॉय को 'खल-नायिका' बताया गया है। पोस्टर में राजेंद्र नगर से विधायक दुर्गेश पाठक, विधायक अतिशी और नवनिर्वाचित मेयर शैली ओबरॉय की फोटो लगी है। जिसके ऊपरी हिस्से में लिखा है कि आप फिल्म्स प्रेजेंट्स अब तक की सबसे चर्चित 2023 की सभी को चौका देने वाली नौटंकी खलनायिका। इस पोस्टर को फिल्म के पोस्टर की तरह बनाया गया है। साथ ही पोस्टर के एक हिस्से में अरविंद केजरीवाल कृत खलनायिका भी लिखा हुआ है। सदन में हंगामा और मारपीट के बाद देर रात दिल्ली मेयर और आप पार्षद के साथ-साथ आम आदमी पार्टी के कई नेताओं ने थाना जाकर बीजेपी पार्षदों के खिलाफ शिकायत दर्ज करवा सकते हैं। वहीं दूसरी तरफ सदन के बाहर पोस्टर वार शुरू हो गया है। भाजपा पोस्टर के माध्यम से आम आदमी पार्टी के पार्षदों और अन्य नेताओं का सच जनता के बीच लाना चाहती है। उल्लेखनीय है कि महापौर शैली ओबेरॉय ने दिल्ली भाजपा के कुछ सदस्यों पर जानलेवा हमला करने का आरोप लगाया है। वहीं भाजपा नेताओं का साफ तौर पर आरोप है कि सदन में हंगामें और मारपीट की कार्रवाई आतिशी के इशारे पर शुरू हुई। जिसमें भाजपा पार्षद की कोई गलती नहीं है और वह भी आप नेताओं के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं।

गाजियाबाद रैपिड रेल के टिकट की कीमतों का खुलासा

नई दिल्ली (ईएमएस)। दिल्ली-मेरठ मेट्रो का काम तेजी से हो रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक रैपिड रेल सिस्टम के साहिबाबाद-दुहाई सेक्शन पर ऑटोमैटिक फेयर कलेक्शन सिस्टम लगाया जाएगा। यह प्रणाली यात्रा किए गए किलोमीटर के आधार पर स्वचालित रूप से यात्रियों के किराए में कटौती करेगी। इससे यात्रियों का समय बचेगा और स्टेशनों पर भीड़ नहीं लगेगी। यात्रियों के पास सामान्य कागजी टिकट होंगे या फिर वे क्यूआर कोड वाले ऑनलाइन टिकट भी खरीद सकेंगे अथवा उनके पास नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड या ओपन लूप कॉन्टैक्टलेस कार्ड होगा जिसके जरिए वे यात्रा कर सकेंगे। जानकारी के अनुसार यात्री स्टेशनों पर क्यूआर कोड वाले टिकट खरीद सकते हैं। वे डिजिटल टिकट खरीदने के लिए एनसीआरटीसी के मोबाइल एप्लिकेशन का भी उपयोग कर सकते हैं। एएफसी सिस्टम आरआरटीएस के दुहाई स्टेशन पर पहुंच गया है और इसका परीक्षण किया जा रहा है। मोबिलिटी कार्ड का उपयोग इंटरसिटी और इंट्रासिटी यात्रा दोनों के लिए किया जाएगा। यह टिकट प्रणाली अधिकारियों के दृष्टिकोण से टिकट की लागत को कम करने में भी सक्षम होगी। पूरा कॉरिडोर 82 किमी लंबा होगा। इस कॉरिडोर में 25 स्टेशन होंगे। दुहाई-साहिबाबाद लाइन प्राथमिकता खंड है। इस साल जून तक इसके शुरू होने की उम्मीद है।

भाजपा ने एमसीडी में हुए बवाल पर निगम भंग करने की उठाई मांग

अजय त्यागी

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) सदन में शुक्रवार देर शाम हुए हंगामा, मारपीट की घटना के बाद आरोप-प्रत्यारोप जारी है। शनिवार को दिल्ली भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने एक मंच पर आकर प्रेस वार्ता कर कहा कि जिस तरह के हालात हैं और मेयर शैली ओबरॉय ने नियमों का पालन नहीं किया, ऐसे में प्रावधान है कि निगम को भंग कर दिया जाए। सभी नेताओं ने इसकी पुरजोर तरीके से मांग की। भाजपा ने प्रेस वार्ता में मारपीट का वीडियो भी दिखाया है। दिल्ली भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि मेयर शैली ओबरॉय उस समय अपना मोबाइल चेक कर रही थीं, उन्हें पार्टी से जो निर्देश मिलता था वही वो काम करती थीं। जिस भाषा का इस्तेमाल सदन में आप पार्षदों द्वारा हुआ है वो बेहद शर्मनाक है। इतने सालों में जो निगम में नहीं हुआ वो आम आदमी पार्टी कर रही है। एमसीडी में जैसे मनमानी चल रही है, वह निगम के एक्ट में स्पष्ट है। दिल्ली म्युनिसिपल एक्ट 490 के तहत दिल्ली नगर निगम को केंद्र सरकार भंग कर सकती है। हमारी मांग है कि मेयर टेक्निकल कमेटी की रिपोर्ट को स्वीकार करें, नहीं तो भाजपा निगम को भंग करने की मांग करती है। अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करने पर केंद्र सरकार द्वारा निगम को भंग किया जा सकता है। सचदेवा ने आगे कहा कि स्थायी समिति चुनाव के बाद निगम की टेक्निकल कमेटी ने जो रिजल्ट दिया है, उसे घोषित करें। अगर ऐसा नहीं किया है तो भाजपा इसका विरोध करेगी। डीएमसी एक्ट की धारा 490 कहती है कि यदि निगम अपनी शक्तियों का गलत प्रयोग करता है तो निगम को भंग किया जा सकता है। वहीं दिल्ली भाजपा के महामंत्री हर्ष मल्होत्रा ने प्रेस वार्ता में कहा कि स्थायी समिति के सदस्यों के चुनाव का रिजल्ट मेयर को दिया जाता है। सारे वोट काउंट होने के बाद, आप और भाजपा के तीन-तीन सदस्यों की जीत का उसमें जिक्र है, लेकिन शैली ओबेरॉय अलोकतांत्रिक तरीके से चलना चाहती हैं, इसलिए रिजल्ट घोषित नहीं करती हैं और बैलट पेपर निकालती हैं और कहती हैं कि ये वोट मान्य नहीं है। जबकि टेक्निकल कमेटी उस वोट को भी मान्य बताती है। इस मुद्दे पर चार घंटे तक एक ही बात चलती रहती है, भाजपा के पार्षद अमान्य वोट को वैध बताते हैं, लेकिन चार घंटे के बाद आप के पार्षदों का धैर्य खत्म होता है और आम आदमी पार्टी के बड़े नेताओं के निर्देश पर वे भाजपा पार्षदों से हाथापाई करने लगते हैं।

सीधी बस हादसा में मृतकों की संख्या बढ़कर 14 हुई, 10 की शिनाख्त

भोपाल, (हि.स.)। मध्यप्रदेश के सीधी जिले में चुरहट-रीवा नेशनल हाईवे पर शुक्रवार रात हुए सड़क हादसे में मृतकों की संख्या बढ़कर 14 हो गई है। इनमें से आठ ने मौके पर ही दम तोड़ दिया था, जबकि बाकी की मौत अस्पताल में हुई। रीवा और सीधी अस्पताल में कुल 60 यात्रियों को भर्ती कराया गया है। इनमें 10 की हालत गंभीर है। अब तक 10 मृतकों की पहचान हो पाई है। दरअसल, शुक्रवार को सतना में शबरी माता जयंती पर कोल समाज के महाकुम्भ में शामिल होने के लिए प्रदेशभर से कोल समाज के लोग बसों से यहां पहुंचे थे। शाम को कार्यक्रम के समापन के बाद लोग बसों से वापस लौट रहे थे। सभी बसें सतना से रामपुर बघेलान और रीवा के रास्ते मोहनिया टनल होकर सीधी जा रही थीं। टनल से एक किलोमीटर दूर सीधी जिले के चुरहट थाना क्षेत्र में बरखड़ा गांव के पास तीन बसें कुछ देर के लिए रोकी गई थीं। यहां यात्रियों के लिए चाय-नाश्ते की व्यवस्था की गई थी। इसी बीच पीछे से आ रहे सीमेंट से भरे बेकाबू ट्रक ने तीनों खड़ी बसों को पीछे से टक्कर मार दी थी। सीधी एएसपी अंजुला पटले ने शनिवार को बताया कि हादसे में अभी तक 14 लोगों की मौत हुई है। इनमें आठ शव चुरहट अस्पताल, दो सीधी अस्पताल और चार रीवा

मेडिकल कॉलेज में रखे गए हैं। इनमें से 10 लोगों की शिनाख्त हो गई है, शेष मृतकों की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। रीवा कलेक्टर मनोज पुष्प का कहना है कि तीन घायलों को एयर लिफ्ट किया जा रहा है। इनमें से दो को सतना से और एक को खजुराहो से हायर इलाज के लिए भेजा जा रहा है। एएसपी पटले के अनुसार, मृतकों की पहचान गिरीराज (36) शरण जायसवाल पुत्र उदयभान जायसवाल निवासी कतरवार थाना मझौली। हाल पता बालक छात्रावास अधीक्षक लुरभुटी तहसील कुसमी जिला सीधी, राजकुमारी कोल (55) पत्नी छोटेलाल कोल निवासी चोभरा थाना रामपुर नैकिन जिला सीधी, चूणामणि कोल (45) पुत्र छोटेलाल कोल निवासी चोभरा थाना रामपुर नैकिन जिला सीधी, मूलचंद रावत (20) पुत्र आनंद रावत निवासी बगहा थाना जमोड़ी जिला सीधी, लाल कुमार रावत (30) पुत्र रामलाल रावत निवासी वार्ड क्र. 12 बगैहा थाना जमोड़ी जिला सीधी, सरदार कोल (50) पुत्र मंझिला कोल निवासी ग्राम गांधी ग्राम थाना जमोड़ी जिला सीधी, मनऊ कोल (60) पुत्र छोट्टा कोल निवासी चोभरा थाना रामपुर नैकिन जिला सीधी, कुमरिया संवत (49) पत्नी मुन्ना रावत निवासी निवासी चोभरा थाना रामपुर नैकिन जिला सीधी, रामराज रावत (30) पुत्र वैशाखू रावत निवासी पडखुडी थाना जमोडी जिला सीधी और जमुना कोल (60) पुत्र मुडिया कोल निवासी ग्राम बाघड थाना रामपुर नैकिन जिला सीधी के रूप में हुई है। तीन मृतकों के नाम मुन्नी बैस, छोटे कोल और ममता कोल बताए गए हैं। इनकी पूरी डिटेल नहीं मिली है, जबकि एक की शिनाख्त नहीं हो पाई है।

मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख रुपये की आर्थिक सहायता - गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव (एसीएस) डॉ. राजेश राजोरा ने हादसे में 14 लोगों के मरने और 60 यात्रियों के घायल होने की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि घायलों में तीन की हालत बेहद गंभीर है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों को 10-10 लाख रुपये की आर्थिक मदद देने का ऐलान किया। उन्होंने यह भी कहा कि मृतक व्यक्तियों के परिजनों को सरकारी नौकरी भी दी जाएगी। गंभीर रूप से घायलों को दो-दो लाख रुपये और सामान्य रूप से घायलों को एक-एक लाख रुपये मुआवजा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि मृतक के परिजनों को कई कल्याणकारी योजनाओं का लाभ भी दिया जाएगा।

देश स्वच्छ और सुंदर होगा तब जाकर एक भारत श्रेष्ठ भारत बनेगा: सांसद

देवरिया, (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने जनपद के सभी नगर पालिकाओं एवं नगर पंचायतों के वार्डों में शनिवार को स्वच्छता अभियान चलाया। इसी के तहत सदर सांसद डॉ.रमापतिराम त्रिपाठी एवं निवर्तमान नगर पालिका अध्यक्ष अलका सिंह ने सोमनाथ वार्ड के शिवधाम पर कार्यकताओं के साथ स्वच्छता अभियान में भाग लिया। इस दौरान सांसद ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने जिस जनजागरूकता के उद्देश्य के साथ देश के अन्दर स्वच्छता अभियान का शुभारंभ किया,वो आज जन आन्दोलन बन चुका है। देश स्वच्छ एवं सुंदर होगा तो देश स्वस्थ्य भी रहेगा और तब जाकर एक भारत श्रेष्ठ भारत बनेगा।

अलका सिंह ने कहा कि स्वच्छता अभियान से आज देश का हर गांव,शहर सुन्दर हो रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के स्वच्छता अभियान का शुरूआत करने बाद आज लोग स्वच्छता के प्रति सजग हुए हैं। बैतालपुर में मण्डल अध्यक्ष जितेंद्र सिंह,प्रभारी राजन यादव,गौरीबाजार में मण्डल अध्यक्ष बृजेश गुप्ता, प्रभारी राजेश कुमार मिश्र, मदनपुर में मण्डल अध्यक्ष कमलेश सिंह, प्रभारी अखण्ड सिंह के नेतृत्व में भाजपा कार्यकताओं ने स्वच्छता अभियान चलाया। इस दौरान संजय पाण्डेय, अम्बिकेश पाण्डेय, गोविन्द चौरसिया, मार्कंडेय गिरी, राधेश्याम शुक्ला, सर्वेश नाथ त्रिपाठी, विट्टू चौरसिया, संतोष चौरसिया उपस्थित रहे।

आयकर के इतने जटिल कानूनों को समझना बहुत बड़ी बात : कमिश्नर

वाराणसी, (हि.स.)। वाराणसी परिक्षेत्र के मंडलायुक्त कौशलराज शर्मा ने आयकर इनकम टैक्स बार एसोसिएशन से जुड़े अधिवक्ताओं की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि इनकम टैक्स के इतने जटिल कानूनों को समझना बहुत बड़ी बात है। बड़े शहरों की तरह यहां काशी में भी बौद्धिक क्षमता मौजूद है। कमिश्नर शनिवार को इनकम टैक्स बार एसोसिएशन के 78वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे। छावनी क्षेत्र स्थित एक होटल में आयोजित समारोह में शामिल मंडलायुक्त ने स्थापना दिवस की बधाई देकर बार एसोसिएशन के द्वारा किए जा रहे कार्यों की तारीफ की। मंडलायुक्त ने कहा कि इतने लंबे अर्से बाद भी उन नौ लोगों ने जिन्होंने इस फाउंडेशन की नींव रखी उनको आज भी याद रखना काबिले तारीफ है। कमिश्नर ने कहा कि वाराणसी बिजनेस हब के रूप में उभर रहा है। इससे यहां पर आने वाले कॉपोरेट लोगों को भी बार एसोसिएशन की जरूरत पड़ेगी। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रयासों से पिछले 9 वर्षों में लगभग 19000 करोड़ बनारस परिक्षेत्र में खर्च हुआ है। इससे सभी को फायदा मिल रहा तथा

निकट भविष्य में मिलेगा। मंडलायुक्त ने कहा कि इस शहर को विकसित करने में आप सभी भी अपना योगदान दें तथा हम भी हमेशा उपलब्ध हैं। उन्होंने कार्यक्रम में आगामी जी-20 सम्मेलन की भी बात रखी। कमिश्नर ने कहा कि वाराणसी में जी-20 की छह बैठकें होंगी। आप जिस हिसाब से चाहें उसमें भाग ले सकते हैं। आप सभी शहर के विकास में भी निरंतर भाग लें। इसके पहले एसोसिएशन के आशुतोष भारद्वाज ने अतिथियों का स्वागत किया। मंडलायुक्त ने अधिवक्ता कृष्ण गोपाल द्वारा तैयार डायरी का विमोचन किया। बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष सुभाष सिंह तथा मदन मोहन पारिक ने मंडलायुक्त को मोमेंटो देकर स्वागत किया।

मुख्यमंत्री की सुरक्षा में तैनात मुख्य आरक्षी की गोली लगने से मौत

बाराबंकी, (हि.स.)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सुरक्षा में तैनात मुख्य आरक्षी संदीप यादव की गोली लगने से मौत हो गई। यह हादसा उस वक्त हुआ जब उनकी सर्विस रिवॉल्वर से अचानक फायर हो गया और गोली सीधे उनके सिर में लगी। उनकी मौके पर ही मौत हो गई। संदीप यादव शनिवार से ड्यूटी पर लौटने वाले थे। पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि पिस्टल की सफाई करते वक्त गोली चलने की संभावना है। हर पहलू की जांच की जा रही है।अयोध्या जिले के इनायत नगर थाना क्षेत्र स्थित ग्राम कदमपुर निवासी

वेद प्रकाश यादव का पुत्र संदीप यादव बाराबंकी बहराइच राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित ग्रीन गार्डन सिटी में निजी मकान बनाकर रह रहे थे। उनके परिवार में पत्नी निशा और आठ साल की बच्ची अर्पिता हैं। वर्तमान समय में संदीप मुख्यमंत्री की सुरक्षा में तैनात थे। शुक्रवार शाम करीब 07 बजे वह अपनी सरकारी पिस्टल को साफ कर रहे थे। तभी अचानक गोली चली और आरक्षी के सिर में जा लगी, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पाकर मौके पर प्रभारी निरीक्षक शिव नारायण सिंह पहुंचे। उन्होंने घटनास्थल का जायजा लेते हुए घटना के संबंध में उच्च अधिकारियों को सूचना दी। परिजनों के आ जाने के बाद शव पोस्टमार्टम के लिए भेजकर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

राज्य के 11,381 गांवों में प्राकृतिक खेती के लिए किसानों को जागरूक कर रही सरकार

लखनऊ, (हि.स.)। इस समय उत्तर प्रदेश सरकार का प्राकृतिक खेती पर बहुत जोर है। राज्य सरकार प्रदेश के 56 जिलों में इसे अभियान के रूप में प्रचारित कर रही है। वर्तमान में 1970 क्लस्टर बनाए गए हैं। इसके माध्यम से 11,381 ग्रामों में 86,448 हेक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक खेती की तैयारी चल रही है। प्रदेश में सिर्फ सब्जियां ही नहीं, धान, मक्का, बाजरा, उर्द और तिल के साथ ही गेहूं, राई, चना मटर व मसूर की खेती भी प्राकृतिक ढंग से हो रही है। कृषि वैज्ञानिक डॉ. एबी सिंह का कहना है कि इसी तरह से जागरूक करने की प्रक्रिया जारी रही तो आने वाले दिनों में मिट्टी में पौष्टिकता आ जाएगी। इससे उत्पादन में अच्छी वृद्धि के साथ ही लोगों को बीमारियों से भी बहुत हद तक निजात मिलेगी। इस समय प्रदेश में 1,04,972 किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित है। इन किसानों को सरकार प्रशिक्षण भी दे रही है। इसके साथ ही प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को खेतों का सरकार भ्रमण कराती है, जिससे किसान उस तरफ जागरूक हो सकें। इसके लिए सरकार ने फील्ड स्कूल भी खोले हैं, जो गांवों में जाकर किसानों को जागरूक करते हैं।

कार्य की गुणवत्ता से कोई समझौता न करें कार्यदाई संस्थाएं : जिलाधिकारी

वाराणसी, (हि.स.)। जिलाधिकारी एस.राजलिंगम ने शनिवार को विकास भवन सभागार में सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना की प्रगति की समीक्षा बैठक की। बैठक में अनुपस्थित अधिकारियों से स्पष्टीकरण लेते हुए कार्य में लापरवाही करने पर अधिशासी अभियंता ट्यूबवेल का वेतन रोकने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने यूपीएसआईसी के कार्यों की समीक्षा करते हुए शिथिलता बरतने पर एक्सियन के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने का निर्देश दिया। 32 कार्य अधूरा पाये जाने और समय से पूरा न किये जाने पर 75 प्रतिशत कार्यदाई संस्था, ठेकेदार तथा 25 प्रतिशत धनराशि जिम्मेदार अभियंता से तीन किस्तों में वसूलने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने इन कार्यों की समीक्षा के लिए पीडी की अध्यक्षता में कमेटी गठित करने का

निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने भुगतान रोक कर रखने वाले बाबुओं को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि किसी का भुगतान समय से नहीं किया गया तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी। जल निगम के अधिशासी अभियंता के बिना जिलाधिकारी की अनुमति के जिले से बाहर जाने पर स्पष्टीकरण देने का निर्देश दिया। नेडा, सीएनडीएस, जल निगम, आरईएस सहित अन्य कार्यदाई संस्थाओं के कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि जिसके कार्य में समयबद्धता और गुणवत्ता नहीं पायी जाएगी, उसके खिलाफ एफआईआर कराने के लिए नोटिस जारी की जाय।

काशी विश्वनाथ मंदिर में विदेशी श्रद्धालुओं के लिए अलग गेट से प्रवेश देने की मांग

वाराणसी, (हि.स.)। धर्म नगरी काशी में घरेलू पर्यटन को उड़ान देने के लिए केंद्र सरकार लगातार प्रयासरत है। दो दिवसीय दौरे पर यहां आए केंद्रीय पर्यटन एवं रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट ने शुक्रवार देर शाम तक सर्किट हाउस में होटल उद्यम और ट्रैवेल्स एजेंट (पर्यटक स्टेकहोल्डर) के साथ बैठक कर शहर में अबतक पर्यटन की दृष्टि से किए गए परियोजनाओं की जानकारी ली। इस दौरान मांग उठायी गई कि बाबा विश्वनाथ मंदिर में विदेशी श्रद्धालुओं के लिए अलग गेट से प्रवेश दिया जाना चाहिए। डीएम एस. राजलिंगम ने चल रही विभिन्न परियोजनाओं के निर्माण कार्य का प्रजेंटेशन दिया। जिलाधिकारी ने लाइट एंड साउंड शो, बुद्धा थीम पार्क, सारंगनाथ तालाब, गुरुधाम में अष्टकोणीय मंदिर का जीर्णोद्धार, राजघाट में पार्किंग और

सुलभ शौचालय, पंचकोसी परिक्रमा के अंतर्गत रामेश्वर मंदिर में किए गए निर्माण कार्य की जानकारी दी। इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने होटल एवं ट्रैवेल्स एसोसिएशन के प्रतिनिधियों से संवाद कर वाराणसी के विकास के लिए सुझाव मांगे। इस पर पदाधिकारियों ने सुबह 4 से 6 बजे तक की बजाय 8 बजे तक टूरिज्म बसों को गंगा तट तक जाने के लिए परमिट दिए जाने का अनुरोध किया। इस पर केंद्रीय राज्यमंत्री ने एसीपी ट्रैफिक और जिलाधिकारी को ट्रेवल्स एसोसिएशन के साथ बैठक कर इस पर सहमति बनाने का निर्देश दिया। इसी क्रम में बाबा विश्वनाथ मंदिर में विदेशियों के लिए अलग गेट से एंट्री का मुद्दा उठाया गया। इस पर जिलाधिकारी ने बताया कि मंदिर एक हाई रिस्क जोन है, फिर भी उसका समाधान निकाला जाएगा। बैठक में भारत माता मंदिर में टॉयलेट, चौराहों पर भीख मांगने वालों की भीड़ को रोकने, सुगम यातायात का मामला भी उठाया गया। जिलाधिकारी ने बताया कि यातायात को लेकर एलिवेटेड हाई-वे एवं कई फ्लाईओवर के निर्माण पर मंथन चल रहा है। इन महत्वपूर्ण परियोजनाओं के पूर्ण हो जाने पर यह मुद्दा पूरी तरह सुलझ जाएगा। बैठक में पर्यटन विभाग के सहायक निदेशक अमित गुप्ता ने केंद्रीय राज्यमंत्री भट्ट, पूर्व मेयर रामगोपाल मोहले और जिलाधिकारी राजलिंगम को बुके देकर सम्मानित किया।

धनबाद स्टेशन रोड पर अतिक्रमण हटाने के खिलाफ फुटपाथ दुकानदारों का हंगामा, लाठीचार्ज

-दुकानदारों ने आगजनी कर सड़क पर लगाया जाम, आत्मदाह का किया प्रयास

धनबाद, (हि.स.)। रेल प्रबंधन ने शनिवार को धनबाद के स्टेशन रोड से डीआरएम चौक तक अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया। इस दौरान फुटपाथ दुकानदारों ने जमकर हंगामा किया। दुकानदारों ने न सिर्फ आगजनी कर स्टेशन रोड पर जाम लगा दिया, बल्कि कुछ दुकानदारों ने अपने ऊपर तेल छिड़कर आत्मदाह का भी प्रयास किया। इसके बाद धनबाद रेल पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। जानकारी के अनुसार धनबाद रेल प्रबंधन ने शुक्रवार को लाउडस्पीकर से स्टेशन रोड से डीआरएम चौक तक के दुकानदारों को अपनी दुकान वहां से हटा लेने के लिए मुनादी करवाई थी। इसके बाद आज रेल प्रशासन डोजर और सुरक्षा बलों के साथ स्टेशन रोड से अतिक्रमण हटाने के लिए पहुंचा। फुटपाथ दुकानदार एकजुट होकर इसके विरोध में सड़क पर उतर आए। दुकानदारों ने आगजनी कर स्टेशन रोड पर जाम लगा दिया। इसके बावजूद रेल प्रशासन का अतिक्रमण हटाओ अभियान नहीं रुकता देख कुछ दुकानदार अपने ऊपर तेल छिड़ककर आत्मदाह करने का प्रयास करने लगे, जिसे रेल पुलिस ने विफल कर दिया। इसके बाद दुकानदार दुकान तोड़ रहे डोजर को रोकने के लिए सड़क पर लेट गए। साथ ही कुछ दुकानदार डोजर के सामने खड़े हो गए। इसके बाद डोजर को वहां से पीछे हटना पड़ा और कुक समय के लिए इस अभियान को रोकना पड़ा। इसके बाद रेल प्रशासन ने दुकानदारों को मौके से हटाने के लिए लाठीचार्ज किया। फुटपाथ दुकानदार समिति के अध्यक्ष राम नारायण सिंह ने कहा कि तीन पीढ़ियों से ढाई सौ दुकानदार स्टेशन रोड के किनारे दुकान लगाकर जीविकोपार्जन करते आ रहे हैं लेकिन आज अचानक बिना किसी नोटिस के उनके दुकानों को उजाड़ा जा रहा है जबकि यह भूमि रेल प्रशासन की भी नहीं है। यह जमीन धनबाद जिला प्रशासन के अधीन है। बिना पुनर्वास के दुकानदारों को यहां से उजाड़ देना असंवैधानिक है। उन्होंने कहा कि इससे पूर्व में भी धनबाद के सांसद पशुपतिनाथ सिंह ने उन्हें आश्वासन दिया था कि बिना पुनर्वास के उन्हें यहां से उजाड़ा नहीं जाएगा। दूसरी ओर धनबाद रेल प्रशासन का कहना है कि बीते शुक्रवार को यहां अतिक्रमण कर दुकान चला रहे दुकानदारों को मुनादी के जरिए सूचना दे दी गई थी कि वे अपनी-अपनी दुकानों को यहां से हटा लें। अतिक्रमण हटाने पहुंचे धनबाद अंचल निरीक्षक श्यामलाल मांझी ने कहा कि दुकानदार यहां से हटने को तैयार नहीं थे। साथ ही उन्होंने हंगामा भी किया। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है।

झारखंड में नौ नक्सलियों पर चलेगा देशद्रोह का मुकदमा, राज्य सरकार ने दी अनुमति

रांची, (हि.स.)। राज्य सरकार ने झारखंड में नौ नक्सलियों पर देशद्रोह का मुकदमा चलाने की अनुमति दे दी है। पुलिस की जांच रिपोर्ट और अनुशंसा के आधार पर सरकार से मुकदमा चलाने की अनुमति मिली है। यह मुकदमा भाकपा माओवादी नक्सली संगठन के पोलित ब्यूरो मेंबर के पद पर रहे प्रशांत बोस सहित नौ नक्सलियों पर चलेगा। अन्य नक्सलियों में सरायकेला-खरसावां के दारूदा निवासी महाराज प्रमाणिक उर्फ राज, गिरिडीह जिले के पीरटांड़ निवासी सेंट्रल कमेटी के नक्सली पति राम मांझी उर्फ अनल उर्फ रमेश, तमाड़ थाना क्षेत्र के तमराना निवासी अमित मुंडा उर्फ चुका मुंडा, खूंटी जिले के रनिया थाना क्षेत्र निवासी जीवन कंडुलना, अड़की थाना क्षेत्र के हरदलामा निवासी प्रभात मुंडा उर्फ मुखिया, विमल लोहरा उर्फ निलेश लोहरा, कुचाई थाना क्षेत्र के जमबीरा निवासी नेल्सन कंडीर और सुलेमान कंडीर शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि नक्सलियों के खिलाफ देशविरोधी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप में 16 दिसंबर, 2018 को टोकलो थाना में केस दर्ज हुआ था। पुलिस को इस बात की सूचना मिली थी कि संबंधित नक्सली देश विरोधी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए थाना क्षेत्र के एक नक्सल प्रभावित इलाके में जुटे हैं। केस दर्ज करने के बाद जब पुलिस ने अनुसंधान शुरू किया, तब पुलिस ने आरोप को सही पाया।

सुगौली चीनी मिल 27 फरवरी को करेगा पेराई सत्र का समापन

-किसान भाई हर हाल में 27 तक कर ले गन्ना की आपूर्त्ति:जीएम -27 फरवरी से 2मार्च तक मिल में होगा किसानो का प्रशिक्षण

मोतिहारी, (हि.स.)। जिले में एकमात्र चल रहे चीनी मिल सुगौली एचपीसीएल बॉयोफ्यूल्स लिमिटेड इकाई ने सत्र 2022-23 के पेराई का समापन अगामी 27 फरवरी को करने जा रही है। इस आशय की जानकारी हिन्दुस्थान समाचार को देते हुए मिल के महाप्रबंधक विजय दीक्षित ने बताया कि पर्याप्त मात्रा में गन्ना की उपलब्धता न होने कारण बार-बार लम्बी अवधि तक मिल को नो केन का सामना करना पड़ रहा है। जिससे इकाई को काफी आर्थिक क्षति हो रही है।ऐसे में मिल का पेराई कार्य जारी रख पाना मिल हित में नहीं है।

उन्होंने बताया कि किसान भाई के हित का ख्याल रखते हुए पूर्व में दो सूचना पेराई समापन को लेकर दिया गया था।लेकिन अब अंतिम सूचना जारी किया गया है, उन्होने किसान भाईयो से आग्रह किया कि हर हाल में अपने गन्ना आपूर्ति 27 फरवरी तक करना सुनिश्चित कर ले,अन्यथा अवशेष ईख की जवाबदेही मिल प्रबंधन की नही स्वयं कृषक की होगी। उन्होंने बताया कि आगामी 27 फरवरी से 2 मार्च तक मिल में मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना के तहत किसानों को गन्ना के आधुनिक खेती के लिए प्रशिक्षण दिये जायेगे।जिसमें समान्य वर्ग के 600 किसान व अनुसूचित जाति के 200 किसान भाग लेगे।उन्होंने बताया कि इस अवसर पर किसानों को गन्ना को बोरर कीट से बचाव के लिए 50 फीसदी अनुदान पर कोराजन व मिल द्धारा तैयार बायो कंपोस्ट भी उपलब्ध कराए जायेंगे।

झारखंड स्टेट बार काउंसिल ने एडवोकेट एसोसिएशन को लिखा पत्र

रांची, (हि.स.)। झारखंड हाई कोर्ट ने वकीलों की अनुपस्थिति को लेकर नाराजगी जाहिर की है। इसको लेकर झारखंड स्टेट बार काउंसिल ने हाईकोर्ट एडवोकेट एसोसिएशन को पत्र लिखकर जानकारी दी है। जानकारी के मुताबिक हाई कोर्ट में कोर्ट नंबर 9 में बड़ी संख्या में अधिवक्ता जो विभिन्न दीवानी मामलों में विरोधी पक्षों और प्रतिभागियों का पक्ष रखते हैं वह निर्धारित तिथि पर अदालत में उपस्थित नहीं हो रहे हैं। इस मामले को लेकर काउंसिल ने गंभीरता जताते हुए कहा है कि यह अधिवक्ता समुदाय की प्रतिष्ठा और पेशेवर हित से संबंधित मामला है जो सीधे-सीधे पक्षकारों को न्याय से वंचित रखने जैसा है। अदालत से मिली जानकारी के बाद एसोसिएशन को इस पर आवश्यक उपाय करने का अनुरोध किया गया है। अदालत के असंतोष और स्टेट बार काउंसिल की चिंता अधिवक्ताओं के समक्ष रखने की बात कही गई है। पूरे मामले की जानकारी काउंसिल को मिलने के बाद काउंसिल ने झारखंड हाई कोर्ट एडवोकेट एसोसिएशन को पत्र लिखकर कहा है कि अधिवक्ताओं को सूचित किया जाए कि वह अदालत में अपने पक्षकारों के लिए उपस्थित हों।

बिहार की महागठबंधन सरकार ने लोकतंत्र के इतिहास में काला अध्याय लिखा : गिरिराज

बेगूसराय, (हि.स.)। केंद्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री गिरिराज सिंह ने असदुद्दीन ओवैसी के बयान को नफरत फैलाने वाला बताने के साथ ही बिहार सरकार पर भी जोरदार हमला किया है। उन्होंने कहा कि बिहार की महागठबंधन सरकार ने लोकतंत्र के इतिहास में काला अध्याय लिख दिया है। गिरिराज सिंह ने शनिवार को बेगूसराय में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि सीमांचल बारूद के ढेर पर है। वर्तमान बिहार सरकार की तुष्टीकरण की राजनीति के कारण सीमांचल जल रहा है। हिंदू डरे हुए हैं। महागठबंधन के लोग वहां जाकर तुष्टीकरण की राजनीति के कारण खास धर्म को संरक्षण देते हैं। पूर्णिया में आज हो रही महागठबंधन की रैली का परिणाम होगा कि कुछ दिन बाद वहां हिंदुओं को प्रताड़ित किया जाएगा। गिरिराज ने कहा कि जहां-जहां अमित शाह की रैली होती है, वहां से आतंकवादी, पीएफआई, कट्टरपंथी भाग जाते हैं और दंगा रुक जाता है। विगत सितम्बर माह में अमित शाह पूर्णिया गए थे तो सभी दंगाई भाग गए थे। अब नीतीश कुमार वहां जाकर सभी दंगाई को जमा कर रहे हैं। बांग्लादेशी, रोहिंग्या और उग्रवादी सरकार का एजेंट बनकर पूर्णिया में लोगों को जुटा रहे हैं। पूर्णिया की

रैली में खास समुदाय के ऐसे लोगों को लाया जा रहा है, जिसके नुमाइंदे पीएफआई एवं उग्रवादी की मदद करते हैं। गिरिराज ने कहा कि बिहार ही नहीं, देश की जनता जानती है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार सबका साथ, सबका विकास के मूल मंत्र पर चलती है। सरकार के केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आज लौरिया में कार्यकताओं से संवाद कर रहे हैं।

भाजपा एकमात्र पार्टी है, जिसके गृह मंत्री कार्यकताओं से मुलाकात करने आते हैं। उन्होंने कहा है कि असदुद्दीन ओवैसी ने अपराधियों के मारे जाने के बाद गौरक्षा और धर्मांतरण को लेकर जो बातें कही है यह आपत्तिजनक और देश में विषमता फैलाने वाला है। दुख होता है कि आजादी के समय धर्म के आधार पर देश का बंटवारा हुआ था। उस समय सभी मुसलमान पाकिस्तान चले जाते और सभी हिंदू हिंदुस्तान चले आते तो आज वह स्थिति नहीं होती। पाकिस्तान में हिंदू बचा नहीं है लेकिन हिंदुस्तान में जो मुस्लिम हैं वह जिन्ना के रास्ते पर चल रहे हैं। गिरिराज सिंह ने कहा कि जहर उगलने वालों को यह बताना चाहिए कि सर तन से जुदा करने की बात किसने कही। क्या कभी किसी हिंदू ने ताजिया में पत्थर, तलवार, गोली चलाया लेकिन सनातन की आस्था के हनुमान और महावीर जयंती जुलूस में तलवारें चलती है। पत्थर फेंके जाते हैं, गोली चलाए जाते हैं, यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है।

जंगलराज से मुक्ति चाहिए तो 2024 में फिर से केंद्र में मोदी सरकार : अमित शाह

पटना/पश्चिम चंपारण, (हि.स.)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि बिहार में जंगलराज से मुक्ति पाना है, तो 2024 में एक बार फिर से नरेन्द्र मोदी सरकार को केंद्र की सत्ता पर बिठाना होगा। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार के लिए भाजपा के दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो गए हैं। चंपारण वालों जोरो से बोलो..जंगल राज से मुक्ति चाहिए या नहीं ? वे बिहार के पश्चिम चंपारण जिले के लौरिया में शनिवार को भाजपा की जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। शाह ने कहा कि यह महर्षि वाल्मीकि की भूमि है। गांधी की धरती है। चंपारण की भूमि को मैं प्रणाम करता हूं। मैं पूछने आया हूं कि विधानसभा चुनाव में आपने भारतीय जनता पार्टी को सबसे बड़ी पार्टी बनाया था। ज्यादा सीटें भाजपा की थी। फिर भी मोदी ने डबल इंजन की सरकार चलाने और अपने वादे के अनुरूप नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनाया लेकिन नीतीश बाबू भी ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें हर तीन साल में प्रधानमंत्री बनने का सपना आता है। अमित शाह ने कहा कि नीतीश बाबू की प्रधानमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा ने बिहार का बंटाधार कर दिया है। नीतीश कुमार राज्य का पैसा विमान खरीदने में

लगा रहे हैं। आज पूरे बिहार की स्थिति अराजक हो गई है। अपराध फिर से चरम पर जा रहा है। कानून व्यवस्था ध्वस्त हो गई है। हत्या, अपहरण, डकैती, बलात्कार दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। बोलने वाले पत्रकारों की हत्या चालू हो गई है। बालू माफिया, शराब माफिया के ग्रुप जिंदा हो रहे हैं।

हथियारों के जखीरे पकड़े जा रहे हैं। पीएफआई जैसे संगठन बिहार के अंदर केंद्र बना रहे। फिर भी नीतीश बाबू चुप हैं। गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि नरेन्द्र मोदी ने पीएफआई पर बैन लगा कर पूरे देश को सुरक्षित किया है। इससे पार पाने का एकमात्र रास्ता है। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2024 में फिर से दो तिहाई बहुमत से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बने। नीतीश ने शराबबंदी की उससे हमको कोई मतलब नहीं लेकिन यहां नकली शराब से लोग मारे जा रहे हैं। शाह से आम लोगों से पूछा कि नकली शराब की बिक्री रुकनी चाहिए या नहीं ? इस क्षेत्र की सीमा नेपाल से सटी है। आप एक बार मोदी को फिर से प्रधानमंत्री बना दें। अमित शाह ने कहा कि 15 हजार करोड़ के तीन हाईवे प्रोजेक्ट बिहार के इस इलाके में दिए हैं लेकिन नीतीश बाबू पर अब लालू प्रसाद यादव का दबाव है। इसलिए तीनों हाईवे प्रोजेक्ट के लिए जमीन ही नहीं दे रहे। आप बताएं क्या यह तीनों प्रोजेक्ट होने चाहिए या नहीं? रक्सौल में बनने वाले हवाई अड्डे के लिए भी भूमि उपलब्ध नहीं कराई जा रही है। मैं नीतीश कुमार से कहना चाहता हूं जब प्रधानमंत्री बनना हो बनना लेकिन जमीन तो दे दें। रोड़ा मत बनिए वरना बिहार की जनता आपका हिसाब-किताब कर देगी। अमित शाह ने कहा कि नीतीश कुमार ने तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाने का वादा किया है लेकिन तारीख नहीं बता रहें है। राजद के विधायक आंसू बहा रहे हैं। गृह मंत्री ने कहा कि पश्चिमी चम्पारण बहुत जल्द रामायण सर्किट से जुड़ेगा और हजारों पर्यटक रोज आएंगे। उन्होंने कहा कि बिहार को दो लाख 38 करोड़ रुपये दिया गया है। केंद्र सरकार के इस राशि का उपयोग अब राजद करेगी। मैं मोदी सरकार का हिसाब दे रहा हूं। नीतीश बाबू आप भी राजद और कांग्रेस का हिसाब दीजिये।

संपादकीय

नेता जी, जुबान संभाल के...

कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा को दिल्ली हवाई अड्डे पर अत्यंत नाटकीय ढंग से गिरफ्तार किया गया, उनकी ट्रांजिट रिमांड के लिए द्वारका कोर्ट में पेश भी किया गया, लेकिन उसी दौरान सर्वोच्च अदालत ने उन्हें अंतरिम जमानत भी दे दी। संदर्भ प्रधानमंत्री मोदी के दिवंगत पिता का गलत नाम लेकर अपमान करने का था। असम पुलिस पवन खेड़ा को गिरफ्तार करने दिल्ली तक आई थी। बड़े नाटकीय ढंग से खेड़ा को विमान से उतारा गया। फिर गिरफ्तारी की घोषणा के बाद कांग्रेस नेता हवाई अड्डे के रन-वे के करीब ही धरने पर बैठ गए। बहरहाल अभी यह बवंडर थमा नहीं है, क्योंकि बदजुबानी और अमर्यादित भाषा का प्रयोग हमारी राजनीतिक संस्कृति बन चुके हैं। इस पूरे परिप्रेक्ष्य में दिलचस्प और सवालिया यह रहा कि सर्वोच्च अदालत ने कुछ ही मिनटों में खेड़ा का केस सुन भी लिया और उन्हें जमानत भी दे दी। शीर्ष अदालत में ही 69,000 से अधिक मामले अब भी लंबित हैं। देश की विभिन्न अदालतों में कुल करीब 7 करोड़ मामले आज भी विचाराधीन हैं। अदालतों में चप्पलें घिसते न जाने कितनी उम्रें गुजर जाती हैं और अंतिम सांस तक इंसाफ नहीं मिल पाता। यकीनन यह सिर्फ अदालतों पर ही सवाल नहीं है, हमारी पूरी व्यवस्था ही छिद्र वाली है, जिसमें से 'न्याय' टपकता रहता है। पवन खेड़ा बेहद भाग्यशाली और अतिविशिष्ट नागरिक साबित हुए कि कुछ ही मिनटों में उनकी स्वतंत्रता की रक्षा हो गई। देश के आम नागरिक की कौन सुनता है! शीर्ष अदालत ने जोशीमठ शहर के घरों में दरारें और उनके ढहने की आशंकाओं का मामला सुनने से इंकार कर दिया था और उन्हें निचली अदालत में जाने के निर्देश दे दिए थे। बहरहाल खेड़ा को राहत न्यायिक पीठ की चेतावनी के साथ मिली है। उन्होंने जो भी बयानबाजी की थी, वह जुबान फिसलने का केस नहीं था, क्योंकि उनके चेहरे के हाव-भाव व्यंग्यात्मक थे, लिहाजा उनकी मंशा भी समझ में आती है। खेड़ा ने ऐसी बदजुबानी की थी कि उनके वकील एवं कांग्रेस के राज्यसभा सांसद अभिषेक मनु सिंघवी ने अदालत के सामने उन शब्दों को दोहराना भी नैतिक नहीं समझा। न्यायाधीशों ने ऑडियो सुना और मामला समझा। खेड़ा के वकील ने अदालत को इतना आश्वस्त जरूर किया कि उनके मुवक्किल ने पहले भी माफी मांग ली है और अब भी बिना शर्त माफी मांगने को तैयार हैं। वकील ने यह जरूर कहा कि ऐसे शब्द बोले नहीं जाने चाहिए थे। अदालत ने खेड़ा को चेतावनी दी कि बयानबाजी और बातचीत स्तर की होनी चाहिए। शीर्ष अदालत की यह चेतावनी हमारी समूची राजनीतिक बिरादरी के लिए भी है-'नेताओ! जरा जुबान संभाल कर बोलें!' खेड़ा की रिहाई के बाद ही यह चेतावनी काफूर होती लगी, क्योंकि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडग़े ने ही सर्वोच्च अदालत के आदेश को सरकार पर 'करारा तमाचा' करार दिया। उनके बाद पार्टी प्रवक्ता टीवी चैनलों पर बदजुबानी की हदें पार करते दिखाई दिए। दांत पीस-पीस कर दलीलें देते रहे कि मोदी ने नेहरू-गांधी परिवार के बारे में इतने आपत्तिजनक शब्द कहे हैं, लेकिन उन पर तो कोई केस दर्ज नहीं किया गया। यहां तक कि संसद में भी अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल किया गया, लेकिन उन पर कभी आक्षेप नहीं। बहरहाल मौजूदा संदर्भ में कांग्रेस के अधिकृत ट्विटर हैंडल से भीड़ का एक नारा जारी किया गया है-'मोदी तेरी कब्र खुदेगी।' सवाल है कि क्या विरोध की राजनीति को 'बदजुबानी' का कोई लाइसेंस मिला है? अब सुप्रीम कोर्ट क्या कहेगी और क्या कार्रवाई कर सकती है? कांग्रेस में प्रधानमंत्री मोदी पर निजी हमला करने वाले नेता तो पुरस्कृत होते हैं। अब पवन खेड़ा भी बड़े नेता बनाए जा सकते हैं। कांग्रेस प्रवक्ता तो सार्वजनिक मीडिया पर प्रधानमंत्री को 'सीरियल ऑफेंडर' (क्रमिक हत्यारा) तक कह रहे हैं। उनकी जुबान कौन बंद करवा सकता है? हमारे देश में एक नेता दूसरे नेता को अकसर नीचा दिखाते हुए गाली-गलौज में लगा रहता है। ऐसा लगता है जैसे इसके सिवा कोई मुद्दा ही नहीं है। जनता से जुड़े मसले हल किए जाने चाहिए।

देश की विभिन्न अदालतों में कुल करीब 7 करोड़ मामले आज भी विचाराधीन हैं। अदालतों में चप्पलें घिसते न जाने कितनी उम्रें गुजर जाती हैं और अंतिम सांस तक इंसाफ नहीं मिल पाता। यकीनन यह सिर्फ अदालतों पर ही सवाल नहीं है, हमारी पूरी व्यवस्था ही छिद्र वाली है, जिसमें से 'न्याय' टपकता रहता है। पवन खेड़ा बेहद भाग्यशाली और अतिविशिष्ट नागरिक साबित हुए कि कुछ ही मिनटों में उनकी स्वतंत्रता की रक्षा हो गई। देश के आम नागरिक की कौन सुनता है! शीर्ष अदालत ने जोशीमठ शहर के घरों में दरारें और उनके ढहने की आशंकाओं का मामला सुनने से इंकार कर दिया था और उन्हें निचली अदालत में जाने के निर्देश दे दिए थे। बहरहाल खेड़ा को राहत न्यायिक पीठ की चेतावनी के साथ मिली है। उन्होंने जो भी बयानबाजी की थी, वह जुबान फिसलने का केस नहीं था, क्योंकि उनके चेहरे के हाव-भाव व्यंग्यात्मक थे, लिहाजा उनकी मंशा भी समझ में आती है। खेड़ा ने ऐसी बदजुबानी की थी कि उनके वकील एवं कांग्रेस के राज्यसभा सांसद अभिषेक मनु सिंघवी ने अदालत के सामने उन शब्दों को दोहराना भी नैतिक नहीं समझा।

कुछ अलग

बाइडन यूक्रेन तो हो आये, लेकिन इससे खुद अमेरिका को क्या हासिल हुआ?

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की यूक्रेन-यात्रा ने सारी दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया है। वैसे पहले भी कई अमेरिकी राष्ट्रपति जैसे जॉर्ज बुश, बराक ओबामा और डोनाल्ड ट्रंप इराक और अफगानिस्तान में गए हैं लेकिन उस समय तक इन देशों में अमेरिकी फौजों का वर्चस्व कायम हो चुका था लेकिन यूक्रेन में न तो अमेरिकी फौजें हैं और न ही वहां युद्ध बंद हुआ है। वहां अभी रूसी हमला जारी है। दोनों देशों के डेढ़ लाख से ज्यादा सैनिक मर चुके हैं। हजारों मकान ढह चुके हैं और लाखों लोग देश छोड़कर परदेश भागे चले जा रहे हैं। यूक्रेन फिर भी रूस के सामने डटा हुआ है। आत्म-समर्पण नहीं कर रहा है। इसका मूल कारण अमेरिका का यूक्रेन को खुला समर्थन है। अमेरिका के समर्थन का अर्थ यही नहीं है कि अमेरिका सिर्फ डॉलर और हथियार यूक्रेन को दे रहा है, उसकी पहल पर यूरोप के 27 नाटो राष्ट्र भी यूक्रेन की रक्षा के लिए कमर कसे हुए हैं। बाइडेन तो युद्ध शुरू होने के साल भर बाद यूक्रेन पहुंचे हैं लेकिन फ्रांस के राष्ट्रपति इम्नुएल मैक्रों, जर्मन चासंलर ओलफ शुल्ज, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और वर्तमान प्रधानमंत्री ऋषि सुनक भी यूक्रेन की राजधानी कीव जाकर वोलोदोमीर जेलेंस्की की पीठ थपथपा चुके हैं। राष्ट्रपति बाइडन का कीव पहुंचना इसलिए भी आश्चर्यजनक रहा क्योंकि इस समय रूसी हमला बहुत जोरों पर है और बाइडन के जीवन को कोई भी खतरा हो सकता था। इसीलिए यह यात्रा बिल्कुल गोपनीय रही लेकिन अमेरिकी शासन ने यात्रा के कुछ घंटे पहले मास्को को चेताया कि बाइडन कीव जा रहे हैं ताकि इस युद्ध को समाप्त किया जा सके। लेकिन बाइडन ने वहां जाकर क्या किया? जेलेंस्की की पीठ ठोंकी और 500 मिलियन डॉलर के हथियार और सौंप दिए। इसके अलावा उन्होंने रूस और चीन को चेतावनियां दे डालीं। अमेरिकी प्रवक्ता ने चीन पर आरोप लगाया कि वह रूस को हथियार सप्लाई कर रहा है। चीन ने इस आरोप को खारिज कर दिया और अमेरिका से कहा कि वह यूक्रेन को भड़काने की बजाए समझाने का काम करे। अमेरिका के भी कुछ रिपब्लिकन नेता बाइडन की नीतियों को गलत बता चुके हैं। मुझे संदेह है कि बाइडन ने जेलेंस्की को कोई ऐसे सुझाव दिए होंगे, जिनसे यह युद्ध बंद हो सके। वास्तव में विश्व महाशक्ति बनते हुए चीन से अमेरिका ने ऐसा पंगा ले रखा है कि वह इस युद्ध को चलते रहता ही देखना चाहता है। इससे अमेरिका का शास्त्रास्त्र उद्योग भी परम प्रसन्न रहता है।

बाइडेन तो युद्ध शुरू होने के साल भर बाद यूक्रेन पहुंचे हैं लेकिन फ्रांस के राष्ट्रपति इम्नुएल मैक्रों, जर्मन चासंलर ओलफ शुल्ज, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और वर्तमान प्रधानमंत्री ऋषि सुनक भी यूक्रेन की राजधानी कीव जाकर वोलोदोमीर जेलेंस्की की पीठ थपथपा चुके हैं। राष्ट्रपति बाइडन का कीव पहुंचना इसलिए भी आश्चर्यजनक रहा क्योंकि इस समय रूसी हमला बहुत जोरों पर है और बाइडन के जीवन को कोई भी खतरा हो सकता था।

विगत नौ वर्ष में ऐसी गरीब कल्याण की योजनाओं को लागू किया गया है

मुफ्त की बजाय गरीबों का आर्थिक स्वावलम्बन जरूरी

ललित गर्ग

भारत अमीर-गरीब के बीच बढ़ रहा फासला एक चिन्ता का कारण ही नहीं, बल्कि बड़ा राजनीतिक मुद्दा होना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य से यह मुद्दा भकी भी राजनीतिक मुद्दा नहीं बना। शायद राजनीतिक दलों की दुकानें इन्हीं अमीरों के बल पर चलती है और गरीबी कायम रहना उनको सत्ता दिलाने का सबसे बड़ा हथियार है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश में अमीर अधिक अमीर हो रहे हैं और गरीब अधिक गरीब। विपक्ष के सामने इससे अच्छा क्या मुद्दा हो सकता है? इस मामले में राहुल गांधी ने पहली बार अपनी भारत जोड़ो यात्रा में यह मुद्दा उठाकर अपने राजनीतिक कद को तनिक ऊंचाई दी है। उनके कारण कम से कम अमीर और गरीब के बीच बढ़ती हुई खाई का सवाल देश के मानस पटल पर दर्ज हुआ है। राजनीति से इतर अर्थशास्त्रियों और विश्व की नामचीन संस्थाओं की रपटों में यह सवाल लगातार रेखांकित हो रहा है।

आजादी के अमृत काल में सशक्त भारत एवं विकसित भारत को निर्मित करते हुए गरीबमुक्त भारत के संकल्प को भी आकार देना होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार ने वर्ष 2047 के आजादी के शताब्दी समारोह के लिये जो योजनाएं एवं लक्ष्य तय किये हैं, उनमें गरीबी उन्मूलन के लिये भी व्यापक योजनाएं बनायी गयी है। विगत नौ वर्ष में ऐसी गरीब कल्याण की योजनाओं को लागू किया गया है, जिससे भारत के भाल पर लगे गरीबी के शर्म के कलंक को धोने के सार्थक प्रयत्न हुए है एवं गरीबी की रेखा से नीचे जीने वालों को ऊपर उठाया गया है। वर्ष 2005 से 2020 तक देश में करीब 41 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आए हैं तब भी भारत विश्व में एकमात्र ऐसा देश है जहां गरीबी सर्वाधिक है। वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक के अनुसार भारत में कुल 23 करोड़ गरीब हैं। यह स्पष्ट संकेत है कि तमाम कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद गरीबी उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नए विचारों एवं कल्याणकारी योजनाओं पर विमर्श के साथ गरीबों के लिये आर्थिक स्वावलम्बन-स्वरोजगार की आज देश को सख्त जरूरत है। गरीबों को मुफ्त की रेवड़यिा बांटने एवं उनके वोट बटोरने की स्वार्थी राजनीतिक मानसिकता से उपरत होकर ही संतुलित समाज संरचना की जा सकती है। गरीबी के आंकड़ों में कमी के लिए इनदिनों दो घटनाक्रमों का जिक्र सुनने को मिल रहा हैं। पहला, ग्रामीण रोजगार गारंटी जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए बड़ी मात्रा में नगद भुगतान और दूसरा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना एवं उज्ज्वला योजना के तहत सब्सिडी युक्त ईंधन एवं मुफ्त अनाज। गरीबी के स्तर पर इन कार्यक्रमों के प्रभाव को मापने का एक आधार है। मसलन, इन कार्यक्रमों से लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है और उन्हें मजदूरी से आय मिलती है, यह गरीबी दूर करने का प्रभावी तरीका है। कल्याणकारी योजनाओं के रूप में सस्ती गैस का अर्थहै एक प्रमुख घरेलू खर्च की बचत। वहीं मुफ्त खाद्यान्न का अर्थ है भोजन पर होने वाले खर्च में बचत यानी बढ़ी हुई आय। भारत अमीर-गरीब के बीच बढ़ रहा फासला एक चिन्ता का कारण ही नहीं, बल्कि बड़ा राजनीतिक मुद्दा होना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य से यह मुद्दा कभी भी राजनीतिक मुद्दा नहीं बना। शायद राजनीतिक दलों की दुकानें इन्हीं अमीरों के बल पर चलती है और गरीबी कायम रहना उनको सत्ता दिलाने का सबसे बड़ा हथियार है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश में अमीर अधिक अमीर हो रहे हैं और गरीब अधिक गरीब। विपक्ष के सामने इससे अच्छा क्या मुद्दा हो सकता है? इस मामले में राहुल गांधी ने पहली बार अपनी भारत जोड़ो यात्रा में यह मुद्दा उठाकर अपने राजनीतिक कद को तनिक ऊंचाई दी है। उनके कारण कम से कम अमीर और गरीब के बीच बढ़ती हुई खाई का

सवाल देश के मानस पटल पर दर्ज हुआ है। राजनीति से इतर अर्थशास्त्रियों और विश्व की नामचीन संस्थाओं की रपटों में यह सवाल लगातार रेखांकित हो रहा है। लेकिन मोदी सरकार बिना शोर-शराबे के गरीबी उन्मूलन के मिशन पर लगी है। नया भारत-सशक्त भारत बनाने की जरूरत यह नहीं है कि चंद लोगों के हाथों में ही बहुत सारी पूंजी इकट्ठी हो जाये, पूंजी का वितरण ऐसा होना चाहिए कि विशाल देश के लाखों गांवों एवं करोड़ों लोगों को आसानी से उपलब्ध हो सके। लेकिन क्या कारण है कि महात्मा गांधी को पूजने वाला पूर्व सत्ताशीर्ष का नेतृत्व उनके ट्रस्टीशीप के सिद्धान्त को बड़ी चतुराई से किनारे करता रहा है। यही कारण है कि एक ओर अमीरों की ऊंची अट्टालिकाएं हैं तो दूसरी ओर फुटपाथों पर रेंगती गरीबी। एक ओर वैभव ने व्यक्ति को विलासिता दी और विलासिता ने व्यक्ति के भीतर क्रूरता जगाई, तो दूसरी ओर गरीबी तथा अभावों की त्रासदी ने उसके भीतर विद्रोह की आग जला दी। वह प्रतिशोध में तपने लगा, अनेक बुराइयां बिन बुलाए घर आ गईं। नई आर्थिक प्रक्रिया को आजादी के बाद दो अर्थों में और बल मिला। एक तो हमारे राष्ट्र का लक्ष्य समग्र मानवीय विकास यानी गरीबी उन्मूलन के स्थान पर आर्थिक विकास रह गया। दूसरा सारे देश में उपभोग का एक ऊंचा स्तर प्राप्त करने की दौड़ शुरू हो गई है। इस प्रक्रिया में सारा समाज ही अर्थ प्रधान हो गया है। लेकिन मोदी सरकार अर्थ की दौड में दुनिया की सर्वोच्च आर्थिक ताकत बनने के साथ गरीबी को दूर करने के लिये भी ठोस काम कर रही है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी आर्थिक असंतुलन एवं गरीबी को दूर करने एवं समतामूलक समाज की स्थापना के लिये प्रतिबद्ध है। संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में भारत के सार्थक प्रयास से सुरक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, खाद्यान्न सहित कई क्षेत्रों में प्रगति की है। भारत विश्व में आर्थिक रूप से संपन्न 5 देशों में शामिल हो चुका है। कई क्षेत्रों में प्रगति करने के बाद भी देश में गरीबी एक राक्षस के रूप में खड़ी है। जिस तरह हम विजयादशमी के दिन राक्षस रूपी पुतला का वध कर बुराई पर अच्छाई को स्थापित करने का संकल्प लेते हैं उसी तरह हमें इस गरीबी पर विजय पाने का प्रण लेना होगा। इसके लिए देश में सभी को नौकरी सरकार या निजी संस्थाएं दे नहीं सकती हैं। इसलिए हमें स्वरोजगार एवं स्व उद्यमिता पर जोर देना होगा। स्वदेशी जागरण मंच की ओर से स्वावलंबी भारत के लिये संघ प्रयासरत है। संघ के प्रयासों से भी गरीबी दूर करने के लिये सकारात्मक वातावरण बनाया जा रहा है। भारत के गरीब बढ़ती महंगाई के कारण अधिक परेशानी झेलते हैं। भारत में मुद्रास्फीति दर पिछले दस महीनों से केंद्रीय रिजर्व बैंक के ऊपरी सहनशीलता स्तर (6 प्रतिशत) से अधिक रही है। वैश्विक बाजारों में राजनीतिक एवं कोरोना महामारी से आई उथल-पुथल और उससे आपूर्ति श्रृंखला में आए व्यवधान इसका प्रमुख कारण हैं। बढ़ती महंगाई से मध्यमवर्गीय परिवारों की पूंजी में गिरावट आई है, जिससे यह वर्ग गरीबी के चपेट में आया है तथा गरीब वर्ग और गरीब हुआ है। बढ़ती बेरोजगारी भी गंभीर समस्या बनी हुई है। वैश्विक महामारी के बाद सबसे अधिक बेरोजगारी असंगठित क्षेत्र में फैली है, क्योंकि इस क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक सामाजिक सुरक्षा लाभों से वंचित रहते हैं और उन पर श्रम कानून लागू नहीं होते। इस श्रेणी में, प्रधानतः छोटे व लघु उद्योग आते हैं। जाहिर है कि इन परिस्थितियों में महंगाई एवं बेरोजगारी के समाधान गरीबी उन्मूलन में मील का पत्थर हो सकते हैं। महंगाई का समाधान एक ज्वलंत मुद्दा है, मौद्रिक मोर्चे पर केंद्रीय रिजर्व बैंक के प्रयासों के अतिरिक्त केंद्र व राज्य सरकारों से और अधिक प्रयास अपेक्षित हैं जैसे उत्पादन शुल्क, वैट आदि करों में कटौती, आवश्यक वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति, कालाबाजारी पर रोक, आयात में सीमा शुल्क कटौती द्वारा सरलीकरण, बड़े औद्योगिक एवं व्यापारिक घराने की बजाय निचले स्तर पर व्यापार एवं उद्यम को प्रोत्साहन इत्यादि। इससे गरीब की जमा-पूंजी व आय सुरक्षित होगी और उसके गरीबी रेखा से बाहर आने का रास्ता तैयार होगा। जापान एवं चीन जैसे देशों की तरह भारत के हर नागरिक को उत्पाद एवं उद्यम से जोड़ना होगा। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजनाओं का लाभ अधिकाधिक युवाओं एवं गरीब तबके तक पहुंचे। कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने के लिए सघन प्रौद्योगिकीकरण को अपनाया जाए तथा खाद्य प्रसंस्करण, पशुपालन, कुटीर उद्योग, ग्रामीण गैर-कृषि रोजगार, कृषि अनुसंधान आदि में निवेश को बढ़ावा मिले। एक और प्रभावी कदम उठाये जाने की भी अपेक्षा है, और वह है श्रम कानूनों में उदारीकरण द्वारा बड़े व श्रम प्रधान उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाए। यह उत्साहवर्धक है कि हाल ही में केंद्र सरकार की ओर से महत्त्वाकांक्षी उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना लाई गई है। मनरेगा की तर्ज पर राष्ट्रीय स्तर की शहरी रोजगार गारंटी योजना लागू करना भी लाभदायक हो सकता है।

वोट बटोरने का साधन बने अपराधी

उत्तर प्रदेश की पुलिस ने कई कुख्यात बदमाशों और माफियाओं को ढेर कर दिया। इतना ही नहीं, पुलिस ने अपना इकबाल इस कदर कायम किया कि कुछ बदमाशों ने तो जमानत पर जेल से रिहा होने तक से इंकार कर दिया कि कहीं पुलिस उनका एनकाउंटर नहीं कर दे। पुलिस में यह साहस आया सरकार की दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण। यही पुलिस समाजवादी और बहुजन समाजवादी पार्टी के सत्ता में रहने पर कुछ नहीं कर पाई। इससे जाहिर है कि जब तक पुलिस को अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई करने की पूरी स्वायत्तता नहीं मिलेगी तब तक पुलिस अपनी वर्दी का खौफ अपराधियों में पैदा नहीं कर पाएगी। राजनीति में अपराधियों की घुसपैठ के कारण सामाजिक वातावरण बिगड़ता है और पुलिस के लिए अपराधी तत्त्वों के खिलाफ कार्रवाई करना मुश्किल हो जाता है। डरी हुई पुलिस का अपराधियों में खौफ बनाना मुश्किल कार्य है।

राजनीतिक दल वोट बैंक साधने के लिए गैंगेस्टर, माफिया और डकैतों का इस्तेमाल करते रहे हैं। गौ तस्करी के आरोपियों की निर्मम हत्या के प्रमुख आरोपी मोनू मनेसर सहित अन्य आरोपियों के मामले में भी यही हुआ। मोनू मनेसर के कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए, जिनमें वह हथियारों का प्रदर्शन करता नजर आता है। इसके अलावा उसके नेताओं के साथ फोटो भी सोशल मीडिया पर मौजूद हैं। मोनू की गिरफ्तारी नहीं हो, इसके लिए महापंचायत ने फैसला लिया। भिवानी के लोहारू में दो लोगों की बोलेरो के अंदर जली हुई लाशें मिली थी। दोनों के गौ तस्कर होने का शक जताया गया था। भिवानी में मोनू के समर्थन में महापंचायत की गई और इस महापंचायत में राजस्थान पुलिस को यह धमकी दी गई कि वह गांव में कदम तक न रखे। इसमें कहा गया कि यदि पुलिस ने मोनू मानेसर के खिलाफ किसी भी तरह का एक्शन लिया तो पुलिस अपने पैरों पर वापस नहीं जा पाएगी। महापंचायत में मोनू मानेसर को हिंदुओं का हितैषी बताया गया। इस मुद्दे पर हरियाणा और राजस्थान की पुलिस आमने-सामने आ गई। दोनों राज्यों में अलग दलों की सरकारें हैं। राजस्थान में यह चुनावी साल है। ऐसे में दोनों सरकारों का यही प्रयास है कि मृतकों और उनके आरोपियों के मामले में एक-दूसरे को दोषी ठहरा कर क्षेत्रीय और जातिगत वोट बैंक को मजबूत किया जाए। कुख्यात अपराधियों का जाति-संप्रदाय और क्षेत्र विशेष का सहारा लेने का पुराना इतिहास रहा है। राजनीतिक दल इसका फायदा वोट बैंक के लिए उठाते रहे हैं। जाति और संप्रदायों ने गैंगेस्टर, माफियाओं और यहां तक कि चंबल के डकैतों तक को शरण प्रदान की है। डकैत चाहे चंबल के रहे हों या फिर शहरों में रहने वाले अपराधी हों, सबने अपनी-अपनी जातियों, संप्रदाय और क्षेत्रीयता को अपने बचाव की ढाल के तौर पर इस्तेमाल किया है। इस तरीके के महिमामंडन में अपराधी अपने जाति या संप्रदाय में रॉबिन हुड की छवि कायम करने के लिए उदार तौर-तरीके अपनाते रहे हैं। दस्यु सुंदरी रही फूलन देवी ने अपने साथ हुई ज्यादती का बदला सामूहिक हत्याकांड को अंजाम देने के बाद अपनी जाति में ऐसी ही छवि बनाई थी। इतना ही नहीं, फूलन देवी को इसका राजनीतिक फायदा भी मिला। उसने समाजवादी पार्टी की टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़ कर जीत तक हासिल कर ली। अपराधों को जातिगत आधार बनाने की कीमत भी फूलन को चुकानी पड़ी। दूसरी जाति से दुश्मनी के कारण फूलन देवी की हत्या हो गई। माफिया, सरगनाओं और चंबल के डकैतों ने भी राजनीतिक दलों को मोहरा बनाया है। ऐसे कुख्यात अपराधियों का अपराध का ही नहीं बल्कि राजनीति का भी लंबा इतिहास रहा है, जिसकी आड़ में उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई न हो सके। अपने काले कारनामों पर लारेंस बिश्नोई, आनंदपाल, मोनू मानेसर, मुख्तार अंसारी और लवली आनंद जैसे अपराधियों ने जाति का सहारा लेकर अपराधों के काले कारनामों को गौरवान्वित करने का प्रयास किया है। ऐसे अपराधी अपनी राबिन हुड की छवि को बनाने का प्रयास करते हैं। जाति के अलावा इसमें यदि सांप्रदायिक रंग भी मिल जाए तो अपराधी को बचने के लिए एक मजबूत सहारा मिल जाता है। राजनीतिक दलों के लिए ऐसे अपराधी वोट जुटाने और सांप्रदायिक आधार पर वोटों को ध्रुवीकरण करने का काम करते हैं। जातिगत शरण लेने वाले अपराधी का आधार सिर्फ अपनी जाति तक सीमित रहता है, जबकि अपराध के बाद सांप्रदायिक आधार पर बांटने से अपराधी के राजनेता बनने के रास्ते भी खुल जाते हैं। राजनीति का चोला पहन कर सांप्रदायिक घटनाओं को अंजाम देना ज्यादा आसान होता है। बिहार और उत्तरप्रदेश में कुख्यात माफिया लंबे अर्से तक राजनीतिक कवच की आड़ में अपराधों की सजा से बचते रहे हैं। हालांकि अब दोनों राज्यों की स्थिति में सुधार है। उत्तरप्रदेश में भाजपा की योगी सरकार ने मुख्तार अंसारी सहित दूसरे माफिया और गैंगस्टर को सलाखों के पीछे भेजने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। इतना ही नहीं, ऐसे अपराधियों की सम्पत्ति कुर्क करने और अतिक्रमण को ढहाने को भी अंजाम दिया गया, ताकि दूसरे अपराधी भी इससे सबक सीख सकें। ऐसा ही बिहार में माफियाओं के साथ किया गया। माफियाओं को इस बात का बखूबी एहसास कराया गया कि जाति, धर्म और क्षेत्र की आड़ लेकर अपराधों पर पर्दा डालना आसान नहीं है। इसके बावजूद राजनीतिक दल ऐसे कुख्यात अपराधियों की छवि भुनाने में पीछे नहीं हैं। मुख्तार अंसारी के मामले में एआईएमआईएम के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी योगी सरकार पर संप्रदाय के आधार पर कार्रवाई करने का आरोप लगा कर अल्पसंख्यकों का वोट बैंक रिझाने का प्रयास करते रहे हैं। ऐसे दुर्दांत अपराधियों के मामले में पुलिस की हालत कठपुतली की तरह होती है। पुलिस राज्यों सरकारों के अधीन काम करती है। पुलिस की कार्रवाई राज्य सरकार की मंशा के बगैर नहीं हो सकती। इसका बड़ा उदाहरण उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश की पुलिस ने कई कुख्यात बदमाशों और माफियाओं को ढेर कर दिया। इतना ही नहीं, पुलिस ने अपना इकबाल इस कदर कायम किया कि कुछ बदमाशों ने तो जमानत पर जेल से रिहा होने तक से इंकार कर दिया कि कहीं पुलिस उनका एनकाउंटर नहीं कर दे। पुलिस में यह साहस आया सरकार की दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण। यही पुलिस समाजवादी और बहुजन समाजवादी पार्टी के सत्ता में रहने पर कुछ नहीं कर पाई। इससे जाहिर है कि जब तक पुलिस को अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई करने की पूरी स्वायत्तता नहीं मिलेगी तब तक पुलिस अपनी वर्दी का खौफ अपराधियों में पैदा नहीं कर पाएगी। राजनीति में अपराधियों की घुसपैठ के कारण सामाजिक वातावरण बिगड़ता है और पुलिस के लिए अपराधी तत्त्वों के खिलाफ कार्रवाई करना मुश्किल हो जाता है। डरी हुई पुलिस का अपराधियों में खौफ बनाना मुश्किल कार्य है। इसलिए पुलिस को राजनीति का संरक्षण मिलना चाहिए।

देश दुनीया से

जानमाल का सर्वाधिक नुकसान यूक्रेन को हुआ और प्रतिष्ठा रूस की धूमिल हुई

रूस यूक्रेन युद्ध को एक साल पूरा हो गया है। इस युद्ध ने दोनों देशों को बड़ा नुकसान पहुँचाया है। दोनों देशों के लगभग डेढ़ लाख सैनिक मारे गये हैं, यूक्रेन में बमबारी से हजारों इमारतें और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान जमींदोज हो चुके हैं, हजारों लोग मारे गये हैं, लाखों लोग यूक्रेन छोड़कर अन्य देशों में शरणार्थी जीवन जीने को मजबूर हो गये हैं, जिस युद्ध का परिणाम एक सप्ताह में ही निकल आने की उम्मीद थी वह एक साल तक खिंच चुका है और अभी यह पता नहीं है कि यह कितना लंबा खिंचेगा। देखा जाये तो यह युद्ध अब रूस और यूक्रेन के बीच का युद्ध रह ही नहीं गया है। बल्कि यह रूस और पश्चिमी देशों के बीच का युद्ध है जिसमें माध्यम की भूमिका यूक्रेन निभा रहा है। इस युद्ध से सिर्फ यही दो देश प्रभावित हुए हों, ऐसा नहीं है। इस युद्ध की वजह से सप्लाई चेन बाधित हुई है जिसका असर पूरी दुनिया झेल रही है। दुनिया भर में तेल, गैस और अन्य वस्तुओं की महंगाई बढ़ गयी है जिससे पहले ही महामारी से प्रभावित अर्थव्यवस्थाएं और दबाव झेलने को मजबूर हो गयी हैं। युद्ध के परिदृश्य पर गौर करें तो यूक्रेन को सिर्फ अमेरिका ही नहीं बल्कि यूरोप के 27 नाटो राष्ट्र भी पूरी मदद दे रहे हैं। हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन कीव के दौरे पर आये थे। उनसे पहले फ्रांस के राष्ट्रपति इम्नुएल मैक्रों, जर्मन चासंलर ओलफ शुल्ज, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और वर्तमान प्रधानमंत्री ऋषि सुनक भी कीव जाकर वोलोदोमीर जेलेंस्की की पीठ थपथपा चुके हैं और उन्हें अपना समर्थन जता चुके हैं। देखा जाये तो इस युद्ध में अब तक जानमाल का सर्वाधिक नुकसान भले यूक्रेन को हुआ हो लेकिन प्रतिष्ठा का नुकसान सर्वाधिक रूस को हुआ है। रूसी सेना के हाथ से कई जीते हुए इलाके निकल गये, रूसी सेना की रणनीतियां कई मोर्चों पर नाकामयाब रहीं, रूसी सेना के बड़े-बड़े कमांडर युद्ध में मारे गये, युद्ध के बीच में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को सैन्य नेतृत्व में बदलाव तक करने पड़ गये, जो रूस दुनिया के कई देशों को हथियार देता है उसे ईरान और चीन से भी हथियार लेने पड़ें तो रूस के महाशक्ति होने पर सवाल उठेंगे ही। वर्तमान में देखा जाये तो यूक्रेन का पलड़ा भारी बना हुआ है, भले ही रूस के सशस्त्र बलों ने हाल ही में दोबारा कुछ रफ्तार हासिल की हो। लेकिन आने वाले महीनों में कीव को दो प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। सबसे पहले उसे अपने स्वयं के आक्रामक अभियानों का संचालन करना होगा साथ ही उसे रूसी हमलों को झेलने के लिए पश्चिमी देशों के भारी हथियारों, लंबी दूरी की मारक क्षमताओं और संभवतः वायु शक्ति की आवश्यकता होगी। दूसरा, यूक्रेन को यह सुनिश्चित करने के लिए निरंतर अंतर्राष्ट्रीय सहायता और समर्थन की आवश्यकता होगी कि आर्थिक पतन के परिणामस्वरूप उसकी सामाजिक व्यवस्था नहीं टूटे और वह अपने महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को और अधिक नुकसान को कम करने में सक्षम हो सके। इसके विपरीत, रूस को अपने सशस्त्र बलों के निराशाजनक प्रदर्शन को उलटना होगा। देखा जाये तो यूक्रेन के दक्षिण पूर्व में वुहलेदार पर हाल के रूसी हमले की विफलता पुतिन के लिए कोई अच्छा संकेत नहीं है। देखा जाये तो रूस की पूरी जमीनी सेना का अनुमानित 80 प्रतिशत अब संघर्ष में शामिल है, साथ ही दसियों हज़ारों की संख्या में नई लामबंदी सामने आ रही है। ऐसे में सैन्य नेतृत्व के शीर्ष पर बैठे लोगों पर तेजी से परिणाम हासिल करने का दबाव बढ़ रहा है। माना जा रहा है कि व्लादिमीर पुतिन घरेलू मोर्चे पर कुछ बड़े फैसले लागू कर सकते हैं और चीन के इरादों को भी परख सकते हैं।

दोनों देशों के लगभग डेढ़ लाख सैनिक मारे गये हैं, यूक्रेन में बमबारी से हजारों इमारतें और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान जमींदोज हो चुके हैं, हजारों लोग मारे गये हैं, लाखों लोग यूक्रेन छोड़कर अन्य देशों में शरणार्थी जीवन जीने को मजबूर हो गये हैं, जिस युद्ध का परिणाम एक सप्ताह में ही निकल आने की उम्मीद थी वह एक साल तक खिंच चुका है और अभी यह पता नहीं है कि यह कितना लंबा खिंचेगा। देखा जाये तो यह युद्ध अब रूस और यूक्रेन के बीच का युद्ध रह ही नहीं गया है। बल्कि यह रूस और पश्चिमी देशों के बीच का युद्ध है जिसमें माध्यम की भूमिका यूक्रेन निभा रहा है। इस युद्ध से सिर्फ यही दो देश प्रभावित हुए हों, ऐसा नहीं है।

नागरिक बोध

विश्व बैंक की अर्थशास्त्री हरियाणा की डॉ अनुकृति महिलाओं-युवाओं के लिए प्रेरणा-स्रोत

अनुकृति को देखकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि साधारण-सी दिखने वाली यह लड़की विश्व बैंक, वाशिंगटन डीसी (अमेरिका) में अर्थशास्त्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित डॉ एस अनुकृति है। लेकिन यह सच है। कुछ समय पूर्व ही विश्वबैंक, वाशिंगटन डीसी (अमेरिका) में बतौर अर्थशास्त्री ज्वाइन करने के साथ ही अनुकृति विश्व की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने वाली इस सर्वोच्च बैंकिंग संस्था की दस सदस्यीय मानव संसाधन समिति की सदस्य भी बन गई हैं, जो पूरे विश्व में मानव संसाधन विकास का जिम्मा संभालती है। इससे पूर्व सात वर्षों तक बीसी यूनिवर्सिटी, बोस्टन (अमेरिका) में अर्थशास्त्र की प्रोफ़ेसर रही अनुकृति के पति सिद्धार्थ रामलिंगम पहले से ही विश्वबैंक में कंसल्टेंट के पद पर कार्यरत हैं। डॉ अनुकृति साधारण होकर भी असाधारण हैं। अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के कारण वह आज महिलाओं और युवाओं के लिए प्रेरणा-स्रोत बन चुकी हैं। इन्होंने अपने माता-पिता से न कभी एक रुपया जेबखर्च लिया और न ही कभी सड़क पर खड़े होकर किसी ठेली-रेहड़ी वाले से कुछ खरीदा-खाया। एक दिन भी ट्यूशन नहीं किया, फिर भी हर कक्षा में प्रथम रहीं। जन्म नारनौल में हुआ, लेकिन अठारह वर्ष हिसार में और सात वर्ष दिल्ली में रहीं; अब सोलह वर्षों से अमेरिका जैसे विकसित और संपन्न देश में रह रही हैं। लेकिन दिखावा या आडंबर इन्हें छू तक भी नहीं पाया है। गर्मी हो या सर्दी, भारत आते ही यहां के परिवेश के अनुरूप ढल जाती हैं। सोलह वर्षों से हवाई जहाज से सफर करती हैं, लगभग दो दर्जन देशों की यात्रा कर चुकी हैं, लोकल में भी ट्रेन या एसी बस से जाती-आती हैं, लेकिन साइकिल के अतिरिक्त एक्टिवा तक इन्हें चलानी नहीं आती। वरिष्ठ साहित्यकार और शिक्षाविद् डॉ रामनिवास 'मानव' तथा अर्थशास्त्र की पूर्व प्रवक्ता डॉ कांता भारती की लाडली बेटी तथा जन्मजात विशिष्ट प्रतिभा की धनी अनुकृति की उपलब्धियां वैश्विक स्तर की रही हैं। दिल्ली के सेंट स्टीफेन्स कॉलेज से बीए इकोनॉमिक्स (ऑनर्स) और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से एमए (अर्थशास्त्र) करने के उपरांत विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में से एक कोलंबिया विश्वविद्यालय, मैनहैट्टन (अमेरिका) से एमए (अर्थशास्त्र) और पीएचडी की तीन उपाधियां एकसाथ प्राप्त कीं।

व्हाइट हाउस ने कहा, रूस ईरान को लड़ाकू विमान मुहैया करा सकता है, अमेरिका कर रहा इसकी निगरानी

वाशिंगटन।

अमेरिका के व्हाइट हाउस ने शुक्रवार को कहा कि रूस और ईरान के बीच बढ़ते रक्षा संबंधों के तहत रूस ईरान को लड़ाकू विमान मुहैया करा सकता है।

मॉस्को ईरान को लड़ाकू जेट विमान दे सकता है: किर्बी – व्हाइट हाउस के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (एनएससी) के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने एक वर्चुअल प्रेस वार्ता में संवाददाताओं से कहा कि अमेरिका के पास अतिरिक्त जानकारी है कि यूक्रेन में चल रहे युद्ध के लिए ईरान की ओर से रूस का समर्थन बढ़ रहा है। किर्बी ने आगे कहा कि रूस ईरान को अभूतपूर्व समर्थन की पेशकश कर रहा है और अमेरिकी सरकार का मानना है कि मॉस्को ईरान को लड़ाकू जेट विमान प्रदान कर सकता है। ईरान रूस से अरबों डॉलर के उपकरण जैसे हेलीकॉप्टर और रडार खरीदना चाहता है।

अमेरिका इस मामले की निगरानी कर रहा है: किर्बी – किर्बी ने कहा कि यह जानने के लिए हम बहुत करीब से इस पर नजर रख रहे हैं कि वास्तव में मामला क्या है और हकीकत में क्या लेन-देन होता है। किर्बी ने कहा, ईरान और रूस के बीच रक्षा सहयोग बढ़ रहा है और इससे निश्चित रूप से न सिर्फ यूक्रेन में चीजों को और अधिक कठिनाई होगी, बल्कि यह निश्चित रूप से मध्य पूर्व में सुरक्षा स्थिति को और कठिन बना सकता है।

पहले भी व्हाइट हाउस ने दी थी चेतावनी – बता दें कि इससे पहले भी व्हाइट हाउस ने यूक्रेन पर रूस के जारी आक्रमण के बीच रूस और ईरान के बीच सैन्य संबंधों को गहराने की चेतावनी दी थी। पिछले साल जुलाई में अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन ने कहा था कि ईरान यूक्रेन में उपयोग के लिए रूस को सैकड़ों मानवरहित ड्रोन देने की तैयारी कर रहा है। इसके बाद सीएनएन ने भी नवंबर में बताया था कि ईरान रूस को अतिरिक्त हथियार भेजने की तैयारी कर रहा है, जिसमें कम दूरी की मिसाइलें भी शामिल हैं।

किर्बी ने दिसंबर में कहा था कि अमेरिका का मानना है कि मॉस्को और तेहरान रूस में घातक ड्रोन बनाने के लिए संयुक्त रूप से उत्पादन इकाई की स्थापना पर विचार कर रहे हैं।

हाल ही में ईरान ने पहली बार स्वीकार किया था कि उसने यूक्रेन युद्ध से महीनों पहले रूस को ड्रोन प्रदान किए थे। सीएनएन ने बताया था कि ईरानी विदेश मंत्री होसैन अमीर-अब्दोलाहियन ने राजधानी तेहरान में संवाददाताओं से कहा कि ईरान ने यूक्रेन युद्ध से महीनों पहले रूस को सीमित संख्या में ड्रोन दिए थे। ईरान के विदेश मंत्री का यह बयान तेहरान द्वारा पिछले खंडन के बाद आया था। इससे पहले तेहरान ने इस बात का खंडन किया था कि उसने रूस को यूक्रेन में उपयोग के लिए हथियारों की आपूर्ति की थी। तेहरान ने कहा था कि उसने ऐसा नहीं किया है और न ही आगे करेगा।

न्यूज ब्रीफ

ब्रिटेन के विदेश मंत्री ने भारत की जमकर की तारीफ, जी-20 की अध्यक्षता पर कही ये बड़ी बात

लंदन। ब्रिटेन के विदेश मंत्री जेम्स क्लेवरली ने शुक्रवार को भारत की जमकर तारीफ की। भारत को मिली जी-20 की अध्यक्षता समेत कई मुद्दों पर खुलकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा, भारत को जी-20 की अध्यक्षता ऐसे समय मिली है, जब पूरी दुनिया रूस-यूक्रेन युद्ध, वैश्विक खाद्य आपूर्ति में बाधा और चीन की मुखर होती कार्रवाईयों जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे समय जी-20 की अध्यक्षता मिलना काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने यह भी बताया कि अगले हफ्ते नई दिल्ली में होने वाली जी-20 विदेश मंत्रियों की बैठक में शामिल होने के लिए भारत आएंगे। ब्रिटेन के विदेश मंत्री क्लेवरली ने से कहा, भारत न केवल आर्थिक समृद्धि बल्कि कूटनीतिक प्रभाव बढ़ाने वाला अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी है। उन्होंने आगे कहा, यह एक अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण साल है, क्योंकि हम न केवल यूक्रेन में संघर्ष देख रहे हैं, बल्कि पूरी दुनिया में खाद्य आपूर्ति में व्यवधान का संकट और चीन की बढ़ती कार्रवाईयों को भी देख रहे हैं। इसलिए भारत को ज-20 अध्यक्षता अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण समय पर मिली है। उन्होंने कहा कि वह भारत की अध्यक्षता में जी-20 की पूर्ण सफलता की कामना करते हैं। क्लेवरली ने कहा, भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इस जी-20 सम्मेलन में हम दुनिया के सामने आने वाले सभी मुद्दों पर बहस करें, न कि केवल उन मुद्दों पर जो शायद इस समय सुर्खियों में हैं। क्लेवरली ने भारत के साथ द्विपक्षीय चर्चा के सवाल पर कहा कि मेजबान के तौर पर भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर काफी बहुत व्यस्त होंगे, लेकिन शायद मैं हमारे संबंधों का दुरुपयोग करूंगा और यह सुनिश्चित करने की कोशिश करूंगा कि हम लोगों की द्विपक्षीय चर्चा हो सके।

पाकिस्तान में खुलेआम घूमता दिखा हिजबुल का मुखिया सलाउद्दीन , एफएटीएफ ने कह दी ये बड़ी बात

इस्लामाबाद। आर्थिक संकट से जूझ रहा पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। वैश्विक संगठनों के तमाम प्रतिबंधों के बावजूद यहां सड़कों पर खुलेआम आतंकी घूमते नजर आ रहे हैं। ताजा मामला हिजबुल मुजाहिद्दीन के मुखिया सलाउद्दीन का सामने आया है। मीडिया रिपोर्ट्स से मालूम चला है कि सलाउद्दीन को पाकिस्तान के रावलपिंडी में सार्वजनिक कार्यक्रमों में देखा गया है। अब इसको लेकर फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स की कड़ी टिप्पणी सामने आई है। एफएटीएफ ने साफ कर दिया है कि आंतकवाद वित्तपोषण के खिलाफ पाकिस्तान की प्रतिबद्धता और कार्रवाई पर संगठन की पूरी नजर बनी हुई है। पिछले साल अक्तूबर में ही एफएटीएफ ने पाकिस्तान को ग्रे लिस्ट से बाहर किया था। तब पाकिस्तान ने एफएटीएफ के दो कार्ययोजनाओं को अपने यहां लागू करने का दावा किया था। इसमें आतंकी फंडिंग रोकने और आतंक रोधी वित्तपोषण पर लगाम लगाने की बात कही थी। उस दौरान एफएटीएफ ने पाकिस्तान को ग्रे लिस्ट से बाहर करते हुए कहा था कि पाकिस्तान को आतंकी वित्तपोषण और मनी लॉन्ड्रिंग से निपटने के लिए सिस्टम को और मजबूत बनाने के लिए काम जारी रखना होगा। पाकिस्तान को एफएटीएफ की तरफ से दो एक्शन प्लान के साथ कुल 34 कार्यमद दिए गए हैं। एफएटीएफ की टीम ने इसको लेकर पाकिस्तान का दौरा भी किया था। फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स के अध्यक्ष टी राजा कुमार ने पेरिस में मीडिया से बातचीत की। इस दौरान मीडिया ने हिजबुल के मुखिया सलाउद्दीन के पाकिस्तान में खुलेआम घूमने को लेकर सवाल किया।

ब्रिस्बेन में वाणिज्य दूतावास पर लगाया खालिस्तानी झंडा, भारत ने की शिकायत

मेलबर्न । ऑस्ट्रेलिया के ब्रिस्बेन शहर में भारत के मानद वाणिज्य दूतावास को खालिस्तान समर्थकों द्वारा निशाना बनाए जाने की खबरें सामने आई हैं। अलगाववादियों ने भारतीय वाणिज्य दूतावास के कार्यालय पर खालिस्तान का झंडा लगा दिया। शुक्रवार को एक मीडिया रिपोर्ट में यह बात कही गई। भारत ने इस हरकत पर कड़ी आपत्ति दर्ज कराते हुए पुलिस प्राधिकरण पर दृढ़ विश्वास जताया और शिकायत की है। घटना विदेश मंत्री एस. जयशंकर द्वारा देश का दौरा किए जाने और ऑस्ट्रेलिया में भारतीय समुदाय को लक्षित करने वाली 'कट्टरपंथी गतिविधियों' के खिलाफ सतर्कता की आवश्यकता पर जोर दिए जाने के कुछ दिन बाद हुई है।

इंसानों में बर्ड फ्लू का खतरा

कंबोडिया में लड़की की मौत के बाद पिता की रिपोर्ट भी पॉजिटिव, डब्ल्यूएचओ ने दी चेतावनी

जेनेवा ।

दक्षिण पूर्व कंबोडिया के प्री वेंग प्रांत की 11 वर्षीय लड़की के पिता को भी एच5एन1 मानव एवियन इन्फ्लूएंजा से संक्रमित पाया गया है। जिसके बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एच5एन1 मानव एवियन इन्फ्लूएंजा बर्ड फ्लू के बारे में चिंता जाहिर की है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि लड़की के पिता की रिपोर्ट आने के बाद एच5एन1 मानव एवियन इन्फ्लूएंजा के मानव-से-मानव संचरण की आशंका बढ़ गई है। गौरतलब है कि एच5एन1 मानव एवियन इन्फ्लूएंजा से पीड़ित लड़की की मौत हो गई थी।

मृतक लड़की के पिता भी रिपोर्ट आई पॉजिटिव – कंबोडिया के स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, दक्षिण पूर्व कंबोडिया के प्री वेंग प्रांत की 11 वर्षीय लड़की में 16 फरवरी को बुखार, खांसी और गले में खराश के लक्षण मिले थे। जिसके बाद बुधवार को बर्ड फ्लू वायरस के कारण उसकी मौत हो गई थी। इसके बाद अधिकारियों ने उसके संपर्क में आए 12 लोगों के नमूने लिए थे। इन नमूनों की जांच में लड़की के 49 वर्षीय पिता की रिपोर्ट पॉजिटिव पाई गई। अधिकारियों ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी।

डब्ल्यूएचओ ने जाहिर की चिंता – डब्ल्यूएचओ ने इस पर चिंता जाहिर की है। संगठन ने कहा कि वह कंबोडियाई अधिकारियों के साथ इस स्थिति को लेकर निकट संपर्क में है। संगठन ने कहा कि मनुष्यों को शायद ही कभी बर्ड फ्लू होता है। हालांकि अगर ऐसा होता है तो इसका कारण आमतौर पर संक्रमित पक्षियों के सीधे संपर्क में आना है। अब कंबोडिया में जांचकर्ता यह जानने की कोशिश में लगे हैं कि क्या लड़की और पिता संक्रमित पक्षियों के संपर्क में आए थे। जांच के बाद जल्दी ही यह पता चल जाएगा कि क्या यह मानव-से-मानव संचरण है। डब्ल्यूएचओ महामारी और रोकथाम निदेशक सिल्वी ब्रायंड ने इस स्थिति के बारे में कहा कि अभी तक यह कहना जल्दबाजी होगी कि यह मानव-से-मानव संचरण या समान पर्यावरणीय परिस्थितियों के संपर्क में है।

की जा रही है जानकारी की समीक्षा – इस महीने की शुरुआत में डब्ल्यूएचओ के प्रमुख टेडरोस अदनहोम गेब्रेहेसुस ने कहा था कि मनुष्यों को बर्ड फ्लू का खतरा कम है। उनके इस बयान का समर्थन करते हुए ब्रायंड ने जोर देकर कहा कि यह आकलन नहीं बदला है। हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन यह देखने के लिए उपलब्ध जानकारी की समीक्षा कर रही है कि क्या इसके प्रभाव के मूल्यांकन की समीक्षा करने की जरूरत है। ब्रायंड ने कहा कि दुनिया भर में पक्षियों में वायरस के व्यापक प्रसार और मनुष्यों सहित स्तनधारियों में मामलों की बढ़ती रिपोर्ट को देखते हुए वैश्विक एच5एन1 स्थिति चिंताजनक है।

सतर्कता बरतने का आग्रह – उन्होंने कहा कि डब्ल्यूएचओ ने वायरस के प्रभावों को गंभीरता से लिया है। साथ ही सभी देशों से इस बीमारी को लेकर सतर्कता बढ़ाने का आग्रह भी करता है। ब्रायंड ने कहा कि अब तक, मनुष्यों में बर्ड फ्लू के मामले बेहद कम थे, लेकिन अब इसके कई संभावित मामले हैं, ऐसे में इसे लेकर सतर्क रहने की जरूरत है कि क्या प्रारंभिक मामले ने बीमारी को अन्य मनुष्यों तक पहुंचा दिया है

इंसानों के लिए भी खतरनाक है यह बीमारी – बर्ड फ्लू एक ऐसी बीमारी है, जो सिर्फ पक्षियों को ही नहीं, बल्कि जानवरों और इंसानों के लिए भी उतना ही खतरनाक है। इस बीमारी से संक्रमित पक्षियों के संपर्क में आने वाले जानवर और इंसान आसानी से इससे संक्रमित हो जाते हैं। इससे मौत भी हो सकती है।

इंसान कैसे हो जाते हैं इससे संक्रमित – बर्ड फ्लू को एवियन इंफ्लूएंजा के नाम से भी जाना जाता है। यह एक प्रकार का वायरल इंफेक्शन (संक्रमण) होता है। वैसे तो बर्ड फ्लू कई प्रकार हैं, लेकिन एच5एन1 पहला ऐसा बर्ड फ्लू वायरस था, जिसने पहली बार इंसान को संक्रमित किया था। इसका पहला मामला साल 1997 में हांगकांग में सामने आया था, जबकि पहली बार 1996 में चीन में बर्ड फ्लू का पता चला था। यह बीमारी संक्रमित पक्षी के मल, नाक के स्राव, मुंह के लार या आंखों से निकलने वाले पानी के संपर्क में आने से इंसानों में होती है।

बर्ड फ्लू के लक्षण

- खांसी (आमतौर पर सूखी खांसी)
- गले में खराश, बंद नाक या नाक बहना
- थकान, सिरदर्द
- ठंड लगना, तेज बुखार
- जोड़ों में दर्द, मांसपेशियों में दर्द, गले में दर्द
- नाक से खून बहना
- सीने में दर्द

इजरायल ने फिर साबित की डिफेंस तकनीक में अपनी महारत, बनाया आधुनिक हथियारों से लैस टैंक मर्कोवा

तेल अवीव ।

इजरायल वह देश है जिसकी डिफेंस टेक्नोलॉजी का लोहा दुनिया मानती है। इस देश ने अब एक ऐसा टैंक तैयार कर लिया है, जो अमेरिका और यूरोप पर भारी पड़ने वाला है। यूरोप और अमेरिका के टैंक सन् 1970 के जमाने की डिजाइन पर बने हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि इजरायल का यह नया टैंक इन पुराने पड़ चुके हथियारों पर भारी पड़ेगा। इस नए टैंक के साथ ही इजरायल डिफेंस टेक्नोलॉजी के लिहाज से कहीं ज्यादा आगे निकल गया है। इस नए इजरायली टैंक का नाम मर्कवा है और इसे टैंक टेक्नोलॉजी का बाप करार दिया जा रहा है। रक्षा विशेषज्ञों इसे पुराने इजरायली टैंकों की तुलना में कहीं ज्यादा बेहतर करार दिया है। इस टैंक में ऐसे मॉर्डन और इंटीग्रेटेड हथियार हैं, जिसकी वजह से यह दुश्मन पर भारी पड़ेगा। इसके साथ ही इसकी ऑपरेशनल क्षमता और इसका 360 डिग्री एक्टिव डिफेंस सिस्टम इसे अन्य के मुकाबले काफी ताकतवर बनाता है। इन खूबियों की वजह से ही इजरायली टैंक अपने सभी प्रतिद्वंदियों से आगे हैं। यहां तक कि रूस का नया टैंक टी-14 अरमाता भी इसके आगे फेल है। मर्कावा का मॉडल नेम बराक है। हिब्रू में बराक का मतलब होता है बिजली। मर्कावा टैंक को इस मकसद से तैयार किया गया है कि यह क्रू की रक्षा कर सके। यही इसका प्राथमिक लक्ष्य है और बाद में दुश्मन पर हमला करे। मर्कावा का पांचवां संस्करण सबसे एडवांस्ड है। इसमें रडार सिस्टम, ऑप्टिकल वॉर्निंग सिस्टम, कैमरा और बाकी सेंसर इसे सुरक्षा के लिहाज से नंबर वन बनाते हैं। रक्षा विशेषज्ञों के मुताबिक टैंक के सेंसर और डिजिटल प्रोसेसिंग भी वॉरजोन में बाकी टैंकों और हथियारों के साथ आपस में जुड़े रहते हैं। इस वजह से मर्कवा वी नेटसेंट्रिक क्षमताओं वाला पहला टैंक बन गया है। इस टैंक को यूरोप और अमेरिका के टैंकों की तुलना में बेहतर बताया जा रहा है। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार अमेरिका और यूरोप के टैंक पर अगर दुश्मन निशाना लगाता है तो क्रू के बचने की कोई संभावना नहीं होती है। जबकि मरकावा टैंक में ऐसा नहीं है। मर्कावा वी की डिजाइन मर्कावा चार की ही तरह है। इसमें चार लोगों का क्रू आसानी से आ सकता है जिसमें ड्राइवर, कमांडर, गनर और लोडर शामिल होते हैं। मर्कावा एक 120 एमएम की बोर गन से लैस है जिसे इजरायल मिलिट्री इंडस्ट्रीज ने ही तैयार किया है।

ईरान का दावा - अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति को मारने के लिए बनाई क्रूज मिसाइल

वॉशिंगटन।

ईरान से बड़ी खबर आ रही है। यहां ईरान के टॉप कमांडर ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जान से मारने की धमकी दी है। इसके लिए 1650 किलोमीटर दूर तक वार करने की क्षमता रखने वाली एक क्रूज मिसाइल तैयार करने का भी दावा किया है। शुक्रवार को ईरान के टॉप कमांडर अमीराली हाजीजादेह ने ट्रम्प को मारने की धमकी देते हुए कहा कि जल्द ही वो अपने कमांडर की हत्या का बदला लेंगे। रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच ईरान की इस धमकी ने पश्चिमी देशों और अमेरिका की चिंता बढ़ा दी है। बता दें कि 2020 में अमेरिकी ड्रोन हमले में ईरान के तत्कालीन सैन्य कमांडर कासिम सुलेमानी की मौत हो गई थी। इसके जवाबी कार्रवाई में ईरान ने अमेरिकी सेना पर बैलिस्टिक मिसाइल से हमला किया था। ईरान के रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स एयरोस्पेस फोर्स के प्रमुख अमीराली हाजीजादेह ने कहा कि शीर्ष कमांडर रहे कासिम सुलेमानी की मौत का बदला लेने के लिए ईरान तैयार है। एक स्टेट टीवी चैनल से बातचीत में अमीराली ने कहा, हम उस शख्स को मारने के

लिए तैयार हैं, जिसके आदेश पर हमारे कमांडर सुलेमानी की हत्या की गई थी। हम अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को नहीं छोड़ेंगे। उन्हें मारना चाहते हैं।

अमीराली ने आगे कहा, 1650 किलोमीटर की दूरी तक मारक क्षमता रखने वाली क्रूज मिसाइल को इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान के मिसाइल शस्त्रागार में जोड़ा गया है। उन्होंने कहा, 2020 में बेकसूर जवानों को मारने का उनका कोई ईरादा नहीं था, लेकिन जब उसने (अमेरिका) बगदाद में ड्रोन हमला किया और हमारे सैन्य कमांडर सुलेमानी की हत्या कर दी तो जवाबी कार्रवाई में हमें उनपर बैलिस्टिक मिसाइल दागना पड़ा।

2030 तक रोबोट करेंगे घरों के 40प्रतिशत काम: एआई एक्सपर्ट बोले दुकानों में इंसानों की जरूरत नहीं होगी, लेकिन प्राइवेसी खतरे में

लंदन।

तकनीक ने दुनिया को तेजी से बदला है। अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वजह से इस बदलाव की रफ्तार में और तेजी आई है। संभव है कि दशक भर में ही दुनिया इतनी बदल जाए जिसकी कल्पना करना भी अभी मुश्किल है। इस दशक के अंत तक दुकानों पर इंसानों की जरूरत नहीं होगी। खरीदारी में खर्च होने वाले समय में 60प्रतिशत तक कमी हो जाएगी। एआई के जरिए दुकान-मॉल की सुरक्षा से लेकर बिलिंग, सफाई से लेकर स्टोरेज तक सारी चीजें रोबोट करेंगे। घरों के ज्यादातर काम ऑटोमेशन पर होंगे। विशेषज्ञ कहते हैं कि झाड़ू-पोछा, बर्तन धोना, खाना बनाने जैसे घरों के 39प्रतिशत काम रोबोट करेंगे। हालांकि बच्चों और बूढ़ों की देखभाल में इस दशक के अंत तक एआई की बहुत ज्यादा मदद मिलने की उम्मीद नहीं है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में एआई और सोसायटी की प्रोफेसर एकटैरिना हरटॉग कहती हैं- स्मार्ट तकनीक के इस दौर में निजता पर सबसे बड़ा सवाल पैदा हो गया है। एलेक्सा जैसे ऑटोमेशन डिवाइस हर चीज रिकॉर्ड करते हैं। बातों से लेकर

हरकतों तक हर चीज पर एक तरह का सर्विलांस हो गया है। एआई तकनीक जैसे-जैसे स्मार्ट होती जा रही है, हमारी निजता खतरे में पड़ती जा रही है। इस दशक के अंत तक इंसानों के लिए अपनी निजता बचाए रख पाना मुश्किल होगा। वे कहती हैं- यह निजता पर ऐसा हमला है, जिसके लिए सोसायटी बिल्कुल तैयार नहीं है। लेकिन हरटॉग यह भी कहती हैं कि इससे समाज में महिला-पुरुष में समानता का स्तर बढ़ेगा। वे जापान का उदाहरण देती हैं, जहां पुरुषों के मुकाबले महिलाएं घर का पांच गुना अवैतनिक काम करती हैं। इस वजह से उनके पास खाली समय नहीं होता।

एआई तकनीक के सस्ते होने में लगेगा समय – दूसरी रिपोर्ट बताती है कि सारी दुनिया में घरों के काम की वजह से महिलाएं पुरुषों के बराबर तरक्की नहीं कर पातीं। स्मार्ट घरों में महिलाओं के पास भी पुरुषों जितना खाली समय होगा, जिससे समाज में समानता आएगी। हरटॉग कहती हैं- एआई के इतने प्रभावी होने के बावजूद यह सबके लिए सुलभ नहीं होगी। एआई तकनीकों के सस्ते होने में लंबा समय लगेगा। इस दशक के अंत तक यह इतनी महंगी होगी कि दुनिया में कुछ समृद्ध लोग ही इसका इस्तेमाल कर सकेंगे। ज्यादातर स्मार्ट तकनीकें आम लोगों की पहुंच से बाहर होंगी। यह रिपोर्ट शोध पत्रिका प्लस वन में छपी है।

क्रोएशिया के रेस्टोरेंट में रोबोट बनाता है खाना, स्वाद लाजवाब – यूरोपियन देश क्रोएशिया के जगरेब रेस्टोरेंट में इंसान नहीं बल्कि रोबोट शेफ खाना बनाते हैं। इनके बनाए खाने के स्वाद में भी कमी नहीं है। अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में अमेजन सुपरमार्केट में एक शिफ्ट में सिर्फ 6 इंसानों की जरूरत पड़ती है।

अमेरिकी विदेश मंत्री ने लगाया चीन पर रूस का साथ देने का आरोप, अब बाइडन बोले- इसके सबूत नहीं

वॉशिंगटन ।

यूक्रेन-रूस युद्ध को शुरू हुए एक साल हो चुका है बावजूद इसके दोनों देशों के बीच जारी इस संघर्ष के खत्म होने की कोई उम्मीद नहीं दिख रही है। इसी बीच चीन ने लड़ाई खत्म करने के लिए 12 सूत्रीय प्रस्ताव पेश किया है। इसमें उसने रूस के खिलाफ लगाए गए प्रतिबंधों को खत्म करने की भी बात कही है। जिसका व्यापक विरोध हुआ है और उस पर रूस का साथ देने के आरोप लगाए गए हैं। इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा है कि इस बात के कोई सबूत नहीं हैं कि यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में चीन रूस का साथ देगा। उन्होंने शुक्रवार को यह बात कही।

रूस की सहायता को लेकर चीन के खिलाफ सबूत नहीं- बाइडन

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि उन्होंने इस बारे में अपने चीनी समकक्ष शी जिनपिंग से लंबी बातचीत की है। जिसके बाद अब तक इस बात का कोई सबूत नहीं मिले है कि उसने रूस का साथ दिया है। उन्होंने आगे कहा कि अभी तक सामने नहीं आया है कि चीन को रूस को घातक सैन्य सहायता की आपूर्ति की हो। पेंटागन के प्रेस सचिव वायु सेना ब्रिगेडियर जनरल पैट राइडर ने भी इस बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि चीन के पास स्पष्ट रूप से उन्नत क्षमताएं और घातक हथियार हैं। इसके बाद भी उसने सार्वजनिक रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर अपनी तटस्थता की घोषणा की है। अमेरिका के रुख को लेकर कहा कि इस मुद्दे पर बाइडन प्रशासन ने चीन को साफ स्पष्ट कर दिया है कि वह रूस को घातक हथियार मुहैया कराने के लिहाज से इस युद्ध में शामिल नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर चीन ऐसा करता है तो यह कुछ ऐसा होगा जिसके बारे में अमेरिका को गंभीर चिंता है। इससे गेम चेंज भी हो सकता है। अमेरिकी राजदूत लिंडा थॉमस ने आगे कहा कि हालांकि चीन ने अब तक ऐसा नहीं किया है। हम

आशा करते हैं कि वे आगे भी इस संदेश का पालन करेंगे।

चीन ने पेश किया प्रस्ताव

रूस-यूक्रेन युद्ध के एक साल होने पर चीन ने शुक्रवार को एक 12-सूत्रीय शांति प्रस्ताव जारी किया। इसे जर्मनी के म्यूनिख में आयोजित सुरक्षा सम्मेलन में पेश किया गया। यूक्रेन संकट के राजनीतिक समाधान पर चीन की स्थिति शीर्षक वाले इस शांति प्रस्ताव में 12 बिंदु हैं। सबसे अहम बिंदु के रूप में इसमें युद्धविराम, शांति वार्ता और रूस के खिलाफ प्रतिबंधों को खत्म करने को कहा गया है।

प्रस्ताव के माध्यम से चीन ने रूस पर प्रतिबंध लगाने वाले देशों से कहा है कि इनको एकतरफा प्रतिबंधों का दुरुपयोग बंद करना चाहिए और रूस-यूक्रेन संकट को कम करने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। रूस या यूक्रेन का उल्लेख किए बिना कहा गया कि सभी देशों की संप्रभुता को बरकरार रखा जाना चाहिए। अन्य बिंदुओं में संघर्ष विराम, शांति वार्ता, युद्ध के कैदियों के लिए सुरक्षा और नागरिकों पर हमलों को रोकने के साथ-साथ परमाणु ऊर्जा संयंत्रों को सुरक्षित रखने और अनाज निर्यात को सुविधाजनक बनाने के लिए कहा गया है।

प्रस्ताव पर अमेरिका का रुख

अमेरिकी अधिकारियों और कुछ विश्लेषकों ने इस प्रस्ताव की आलोचना भी की है। म्यूनिख बैठक में, अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने प्रस्ताव जारी होने से पहले चीन की स्थिति के बारे में संदेह व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि चीन द्वारा दी गई गैर-घातक सहायता रूस के युद्ध के प्रयासों का समर्थन करती है। हालांकि, चीन ने आरोप को गलत बताया और कहा कि इसमें सबूतों की कमी है। उधर अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन ने प्रस्ताव की अधिकांश सामग्री को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा, मेरी पहली प्रतिक्रिया यह है कि युद्ध एक बिंदु पर रुक सकता है जब सभी देशों की संप्रभुता का सम्मान किया जाए।

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन ने चीन को बताया खतरा

रविवार को प्रसारित एक साक्षात्कार में अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन ने कहा कि अमेरिकी खुफिया एजेंसी ने जानकारी दी है कि चीन रूस को हथियार और गोला-बारूद उपलब्ध कराने पर विचार कर रहा है जो कि आने वाले समय में मुश्किलें खड़ा कर सकता है। एंटनी ब्लिंकन ने आगे कहा कि चीन रूस की कार्रवाई की ना तो आलोचना करता है ना ही वो रूस पर यूक्रेन के हमले को गलत मानता है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि चीन की तरफ से कोई भी हथियार आपूर्ति सिर्फ पश्चिमी देशों के लिए ही नहीं दुनिया के अन्य देशों के लिए भी मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं।

बेहतर ज्ञान अर्जित कर राष्ट्र और समाज के विकास में योगदान दें विद्यार्थी : राज्यपाल

बीकानेर, (हि. स.)। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि दीक्षांत समारोह, विद्यार्थियों के लिए नए जीवन की शुरूआत है। जीवन में सदैव सीखने के लिए तत्पर रहते हुए विद्यार्थी, अपने ज्ञान से समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दें। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के शनिवार को आयोजित हुए 19वें दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने यह उद्गार व्यक्त किए। राज्यपाल मिश्र ने कहा कि भारत को खाद्यान्न आपूर्ति में अग्रणी राष्ट्र बनाने में कृषि अनुसंधानों की महत्ती भूमिका रही है। जलवायु परिवर्तन और खाद्यान्न आवश्यकता के अनुरुप कृषि विश्वविद्यालयों में निरंतर अनुसंधान किया जा रहा है। राज्यपाल ने कहा कि किसानों तक नवीनतम कृषि अनुसंधानों और कृषि प्रौद्योगिकी का लाभ पहुंचे, इसके लिए विश्वविद्यालयों को और प्रयास करने होंगे। पोषण सुरक्षा से जूझ रहे देशों की मदद के लिए तकनीक हस्तांतरण में भी कृषि विश्वविद्यालयों को अहम भूमिका निभानी होगी। शिक्षकों से अध्ययनशील रहने की अपील करते हुए राज्यपाल ने कहा कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक रूप से किसानों के निकट ले जाएं तथा पारंपरिक खेती, जलवायु संरक्षण के ज्ञान से विद्यार्थियों को जोड़ें। उन्होंने कहा कि किसान देश के विकास की धुरी हैं, सशक्त किसान से ही राष्ट्र सशक्त बन सकता है। विश्वविद्यालय के एकेडमी इंडस्ट्री इंटरफेस, कृषि हाट, किसान सम्मान, किसान चौपाल जैसे नवाचारों की सराहना करते हुए राज्यपाल मिश्र ने कहा कि केशवानंद विश्वविद्यालय द्वारा किए गए सराहनीय हैं। कृषि शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को रोजगार के अधिक अवसर मिलें, इस दिशा में और प्रयास किए जाएं। रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के चांसलर प्रो. पंजाब सिंह ने कहा कि हरित क्रांति और श्वेत क्रांति ने भारत को खाद्यान्न और दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाते हुए में विश्व में पहले स्थान पर पहुंचाया है। वर्तमान में युवाओं को रोजगार के अधिकाधिक अवसर देने के लिए कृषि प्रबंधन में दक्ष युवाओं को तैयार करने की आवश्यकता है। जैविक खेती को बढ़ावा देने पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि इससे पर्यावरण सुरक्षा के साथ खेती, पशुपालन में रोजगार के नए विकल्प भी सृजित हो सकेंगे। कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा सिंचाई और जल संरक्षण के लिए भी अनुसंधान करने पर विशेष ध्यान दिया जाए। विशिष्ट अतिथि के रूप में असम विश्वविद्यालय, जोरहट के पूर्व कुलपति प्रो. अमरनाथ मुखोपाध्याय ने भी विचार रखे। इससे पहले राज्यपाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह की शुरूआत की। उन्होंने संविधान की प्रस्तावना एवं मूल कर्त्तव्यों का वाचन किया। राज्यपाल का पुष्पगुच्छ व श्रीफल भेंट कर, शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। डॉ. अरुण प्रकाश ने विश्वविद्यालय का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के 19वें दीक्षांत समारोह में 1 हजार 793 विद्यार्थियों को स्नातक उपाधियां तथा 42 विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर उपाधियां प्रदान की गई हैं। इसी प्रकार 22 विद्यार्थियों को विद्यावाचस्पति की उपाधियां प्रदान की गई। राज्यपाल ने इस दौरान विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों का विमोचन किया। समारोह में विभिन्न विषयों में सर्वश्रेष्ठ रहने वाले 14 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक एवं एक विद्यार्थी को कुलाधिपति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। प्रो. पंजाब सिंह व प्रो. अमरनाथ मुखोपाध्याय को कृषि क्षेत्र में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के लिए विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ साईन्स उपाधि से नवाजा। इस दौरान महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार सिंह, बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अंबरीश शरण विद्यार्थी, संभागीय आयुक्त डॉ. नीरज के. पवन, पुलिस महानिरीक्षक ओम प्रकाश, जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद कलाल, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम, पूर्व कुलपति प्रो. आर.पी. सिंह सहित विश्वविद्यालय के डीन-डायरेक्टर, विद्यार्थी, स्टाफ सदस्य सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

अपराध के मामले में राजस्थान देश में नंबर वन पर : रामलाल शर्मा

बांसवाड़ा, (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता और चौमूं विधायक रामलाल शर्मा शनिवार को अपने एकदिवसीय दौरे पर बांसवाड़ा पहुंचे। भाजपा कार्यालय पहुंचने पर भाजपा जिलाध्यक्ष गोविन्द सिंह राव और अन्य पदाधिकारियों सहित कार्यकर्ताओं ने रामलाल शर्मा का स्वागत किया। प्रदेश प्रवक्ता रामलाल शर्मा ने राज्य की गहलोत सरकार पर जमकर निशाना साधा। रामलाल शर्मा ने कहा कि गहलोत सरकार अपनी 90 प्रतिशत बजट घोषणाएं पूरी करने का दावा कर रही है, लेकिन धरातल पर हकीकत कुछ और ही है। लोगों को सरकार की योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है। वहीं अपराध के मामले में राजस्थान राज्य देश में नंबर वन पर आ गया है। रामलाल शर्मा ने आरोप लगाया कि ज्यादातर योजनाओं का पैसा भारत सरकार दे रही है। राज्य सरकार झूठी वाहवाही लूट रही है। इतना ही नहीं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बार-बार केंद्र सरकार पर राज्य के हिस्से का बजट नहीं देने का आरोप लगाकर प्रदेश की जनता को गुमराह कर रहे हैं। प्रवक्ता रामलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान के कई विभागों में करीब 50 प्रतिशत पद खाली पड़े हैं। बेरोजगार नौकरी के लिए दर-दर भटक रहे हैं। पेपर लीक की घटनाओं से युवाओं का समय और पैसा भी बर्बाद हो रहा है।

मॉडल स्कूलों में प्रवेश प्रक्रिया तीन मार्च से, एक अप्रैल से लगेगी कक्षाएं

जयपुर, (हि.स.)। शिक्षा विभाग ने प्रदेश के विवेकानंद मॉडल स्कूलों में नए शिक्षा सत्र 2023-24 में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दे दिए हैं। निदेशालय की ओर से इस संबंध में निर्देश दिए गए हैं। इन स्कूलों में छठीं से आठवीं कक्षा में रिक्त पदों पर प्रवेश की प्रक्रिया शुरू की जानी है। कक्षाएं एक अप्रैल से आरंभ कर दी जाएगी और इससे पूर्व प्रवेश की प्रक्रिया पूरी करनी होगी। स्कूल प्रवेश के लिए तीन मार्च को विज्ञप्ति जारी कर सकेंगे जबकि आवेदन पत्र भरने की प्रक्रिया 8 मार्च से 16 मार्च तक पूरी करनी होगी। चयनित आवेदकों की सूची निर्धारण का काम 22 मार्च को किया जाएगा और उनकी सूची 27 मार्च को जारी की जाएगी। चयनित आवेदकों से प्रवेश फॉर्म 31 मार्च तक भरवाए जा सकेंगे और कक्षाओं का संचालन एक अप्रैल से शुरू होगा। निदेशालय ने निर्देश दिए है कि एडमिशन के लिए प्रवेश कमेटी का गठन किया जाएगा। इसमें मॉडल स्कूलों के समीप राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल के प्रधानाचार्य को अध्यक्ष, ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी या सीबीईओ नामित एबीईओ, स्थानीय ब्लॉक से एक जनप्रतिनिधि को सदस्य बनाया जाएगा। मॉडल स्कूल का प्रधानाचार्य सदस्य सचिव के रूप में कमेटी में शामिल होंगे। प्रवेश प्रक्रिया को पूरा करवाने का दायित्व कमेटी का होगा।

आंदोलन 15 दिन स्थगित : राहट टू हेल्थ बिल को लेकर दस मार्च तक सरकार के रूख का इंतजार करेंगे निजी चिकित्सक

जयपुर, (हि.स.)। प्रदेश में सभी निजी अस्पतालों में बंद सरकारी योजनाओं को वापस शुरू कर दिया गया है। हालांकि इसका फैसला शुक्रवार को स्टेट ज्वाइंट एक्शन कमेटी की बैठक में दिन में हो गया था। लेकिन, कमेटी की ओर से देर रात इसके लिए आदेश जारी किए गए। मरीजों को इस आदेश से बड़ी राहत मिलेगी। स्टेट ज्वाइंट एक्शन कमेटी के चेयरमैन डॉ सुनील चुघ ने बताया कि हमारी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से वार्ता हुई है। इसके बाद हमने बिल को लेकर बैठक की। बैठक में कमेटी के सभी सदस्यों ने सरकारी योजनाओं को वापस शुरू करने को लेकर सहमति जाहिर की। ऐसे में अब निजी अस्पतालों में 10 मार्च तक सरकारी योजनाओं के बॉयकॉट को स्थगित किया गया है। अब 10 मार्च तक सरकार के रूख का इंतजार करेंगे। इसके बाद आगामी निर्णय लिया जाएगा। अगर उनकी मांगें पूरी नहीं हुई तो फिर निजी अस्पतालों की ओर से आंदोलन किया जाएगा। डॉ चुघ ने बताया कि निजी अस्पतालों में सरकारी योजनाओं के बॉयकॉट से मरीजों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। हम नहीं चाहते कि हमारी वजह से मरीज परेशान हो। लेकिन, हमारे पास कोई विकल्प नहीं था। ऐसे में हमने मरीजों की परेशानी को देखते हुए सरकारी योजनाओं को वापस अस्पतालों में शुरू करने का निर्णय किया है। लेकिन, राइट टू हेल्थ बिल का विरोध अब भी जारी रहेगा। अभी इस मामले में कमेटी सीएस उषा शर्मा व वित्त सचिव अखिल अरोड़ा से मिलेगी। जिनसे बिल को लेकर वार्ता होगी। प्रदेश में निजी अस्पतालों की ओर से 11 फरवरी को सरकारी योजनाओं का बॉयकाट किया गया था। 14 दिन तक अस्पतालों में सरकारी योजनाएं बंद रही। इसके चलते मरीजों को नगद देकर इलाज कराना पड़ा या फिर मेडिक्लेम पॉलिसी के आधार पर अस्पतालों में इलाज हुआ। मुख्यमंत्री चिरंजीवी बीमा योजना का लाभ नहीं मिलने से निजी अस्पतालों में मरीजों को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ा। इस दौरान सरकारी अस्पतालों में मरीजों की संख्या बढ़ गई थी।

राजस्थान में महावीर जयंती पर अब तीन अप्रैल को रहेगा सार्वजनिक अवकाश

जयपुर, (हि.स.)। राजस्थान में अब तीन अप्रैल को महावीर जयंती के अवसर पर सार्वजनिक अवकाश रहेगा। पूर्व में चार अप्रैल 2023 को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया था। इसमें अब संशोधन किया गया है। सामान्य प्रशासन विभाग ने संशोधित आदेश जारी कर दिए है। सामान्य प्रशासन विभाग के ग्रुप-6 द्वारा जारी आदेश के अनुसार चार अप्रैल 2023 को संपूर्ण राज्य में कार्य दिवस रहेगा। राज्य सरकार ने पहले महावीर जयंती के उपलक्ष्य में 4 अप्रैल को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया था। लेकिन, अब इसमें संशोधन किया गया है। संशोधित आदेश जारी कर दिए गए है। पिछले साल सरकारी कर्मचारियों के लिए वर्ष 2023 का कैलेंडर गहलोत सरकार ने जारी किया था। इसके अनुसार 29 सार्वजनिक अवकाश और 21 ऐच्छिक अवकाश होंगे। कर्मचारियों को 21 ऐच्छिक अवकाश में से 2 अवकाश लेने की ही सुविधा मिलेगी। इस कैलेंडर के तहत 9 बार ऐसा मौका आएगा जब सोमवार या शुक्रवार का अवकाश है। जिससे सरकारी कर्मियों को एक साथ 2 - 3 दिन का अवकाश मिलेगा। खास बात यह है कि होली पर तीन तो दीपावली पर एक दिन का अवकाश मिलेगा।

लंबित मांगों को लेकर आंगनवाडी वर्करों ने दिया धरना, किया प्रदर्शन

उधमपुर, (हि.स.)। आंगनवाड़ी वर्करों द्वारा अपनी लंबित मांगों को लेकर शनिवार को शहीद भगत सिंह पार्क में एकत्रित होकर सरकार के विरुद्ध धरना दिया एवं जोरदार नारेबाजी कर प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर आंगनबाड़ी वर्करों का कहना था कि उन्हें पुराना बकाया वेतन दिया जाए तथा उनका वेतन बढ़ाया जाए। उन्होंने कहा कि आपने आदेश दिया जा रहा है की आंगनवाड़ी वर्कर दो केंद्रों पर कार्य कर सकती हैं परंतु उसके लिए लिखित आदेश नहीं दिया जा रहा। उसका लिखित आदेश दिया जाए ताकि उसके उनका अनुसार कार्य प्रारंभ कर सकें। उनका कहना था कि सरकार उनका शोषण कर रही है तथा उचित वेतन नहीं दे रही और ना ही समय पर वेतन उपलब्ध हो रहा है। उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि वह उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार करे ताकि उनका भविष्य सुरक्षित हो सके।

जम्मू के त्रिकुटा नगर इलाके से 2.5 करोड़ के जाली नोट बरामद

जम्मू, (हि.स.)। जम्मू के त्रिकुटा नगर इलाके से पुलिस ने शनिवार को 2.5 करोड़ के जाली नोट बरामद किए हैं। इसके साथ ही पुलिस ने इस मामले में पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। एडीजी मुकेश सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपितों में से चार कश्मीर तथा एक दिल्ली का रहने वाला है। यह सभी बठिंडी इलाके में एक किराए के कमरे पर ठहरे हुए थे। इनके पास से 2.5 करोड़ के जाली नोट मिले हैं। इसमें से पांच लाख के नोट असली हैं। पुलिस की विशेष टीम पांचों आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

साहिबजादा अजीत सिंह नगर, रूपनगर व श्री फतेहगढ़ साहिब होगा शिक्षा केंद्र के तौर पर विकसित : हरजोत सिंह बैंस

चंडीगढ़ (ईएमएस)। साहिबजादा अजीत सिंह नगर, रूपनगर और श्री फतेहगढ़ साहिब को शिक्षा केंद्र के तौर पर विकसित किया जाएगा। यह बात पंजाब के शिक्षा मंत्री हरजोत सिंह बैंस ने शुक्रवार को 5वें इनवेस्टर्स पंजाब सम्मेलन के दौरान शिक्षा, अनुसंधान और हुनर विषय पर हुए सेशन को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि पंजाब में उच्च शिक्षा की साक्षरता दर 76 प्रतिशत है और पंजाब में लड़कों और लड़कियों की शिक्षा पर समान जोर दिया जा रहा है। राज्य की लगभग 48 प्रतिशत आबादी 0-25 साल उम्र वर्ग की है, इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में निवेश के लिए पंजाब में अथाह संभावनाएं हैं। बैंस ने कहा कि भारत सरकार के परफार्मैंस ग्रेडिंग इंडैक्स में 5 सर्वोच्च स्थानों में से 4 स्थान पंजाब ने हासिल किए हैं। इसके साथ ही नीति आयोग की इनोवेशन इंडेक्स रिपोर्ट-2020 के अनुसार पंजाब राज्य देश के उन 10 राज्यों में शुमार है, जहां शिक्षित कामगार उपलब्ध हैं। इसके साथ ही हमारे लिए यह गौरव वाली बात है कि गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर ए-प्लस प्लस दर्जा हासिल करके देश की सर्वोत्तम यूनिवर्सिटी बनी है। शिक्षा मंत्री ने कहा कि मान सरकार ने राज्य में 117 स्कूल ऑफ एमिनैंस बनाने का काम शुरू किया है। यह स्कूल 9वीं से 12वीं कक्षा तक होंगे। हमारी सरकार ने सरकारी स्कूलों के प्रिंसिपलों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ट्रेनिंग हासिल करने के लिए सिंगापुर भेजा था और 4 मार्च को दूसरा बैच शिक्षा हासिल करने के लिए सिंगापुर भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही आई.आई.एम. नागपुर और अहमदाबाद के साथ भी अध्यापक ट्रेनिंग के लिए बातचीत चल रही है। बैंस ने निवेशकों को शिक्षा के क्षेत्र बीच में निवेश का न्यौता देते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य राज्य में और यूनिवर्सिटियां और स्कूल खोलने का है। गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर के वाइस चांसलर प्रो. जसपाल सिंह संधू ने पंजाब में निवेश के सुखद माहौल के बारे रोशनी डालते हुए कहा कि राज्य में शिक्षा का बहुत बेहतर माहौल है। उन्होंने बताया कि राज्य में मौजूदा समय 25 विद्यार्थियों के पीछे एक अध्यापक है और पंजाब के शिक्षा ढांचे में गणित और भाषा पढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिस कारण राज्य गणित और भाषा पढ़ाने के मामले में देश में सर्वोत्तम है। लैमरिन टैक स्किल यूनिवर्सिटी के चांसलर डाक्टर संदीप कौड़ा ने बताया लैमरिन यूनिवर्सिटी देश की पहली ऐसी यूनिवर्सिटी है जिसको दुनिया की नामी कंपनी आईबीएम की हिस्सेदारी के साथ चलाया जा रहा है, जिसमें दुनिया की जरूरत अनुसार बच्चों को शिक्षा देकर भविष्य के लिए तैयार किया जा रहा है। आईआईटी रूपनगर के डायरेक्टर प्रोफेसर राजीव ने कहा आई.आई.टी. रूपनगर ने बहुत कम समय में बेहतरीन इंजीनियर पैदा करने के लिए दुनिया भर में यश अर्जित किया है और देश की नामी शैक्षणिक संस्थाओं को पछाड़ दिया है।

अधिक गर्मी से गेहूं के दाने पक रहे हैं, एग्रीकल्चर अधिकारी ने दी खेतों में हलके पानी की सलाह

जालंधर (ईएमएस)। बदल रहे मौसम पर खेतीबाड़ी विभाग ने पकती गेहूं की फसल को लेकर चिंता जताई है कि कही अधिक गर्मी से गेहूं फसल की पैदावार कम न हो जाए। देखा जा रहा है कि इस साल फरवरी में गर्मी बढ़ती जा रही है, इससे गेहूं की फसल की पैदावार कम न हो उसके लिए चीफ एग्रीकल्चर अधिकारी जसवंत राय ने बताया कि इस समय गेहूं की फसल के दाने निकल कर पक रहे हैं, जिस कारण हवा में गर्मी अधिक बढ़ने के साथ इन दानों पर प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि बढ़ रही गर्मी से गेहूं की फसल को बचाने के लिए किसानों को खेतों में हलका पानी लगाना शुरू कर देना चाहिए। राय ने कहा कि फसलों पर 2 फीसदी पोटाशियम नाइट्रेट का छिड़काव किया जा सकता है। बढ़ रही गर्मी के साथ गेहूं की फसल पर तेले का हमला हो सकता है और रस चूस कर गेहूं की पैदावार कम कर सकता है। ऐसे मौसम में फसल को पीली कूंगी की मार भी पड़ सकती है। किसानों से अपील करते हुए राय ने कहा कि लगातार खेतों का दौरा करके इन कीड़े और बीमारी के हमले से फसल को बचाया जा सकता है। कृषि यूनिवर्सिटी की तरफ से जिन दवाओं का छिड़काव करने के लिए कहा गया है, उनका ही इस्तेमाल किया जाए। डॉ जसवंत राय ने बताया कि वातावरण के बदलाव के कारण पानी का स्तर भी गिर रहा है। इसलिए किसानों को उन फसलो की बिजाई करनी चाहिए जिनमें पानी कम लगता है। बढ़ रही गर्मी से फसल को कैसे बचाया जाए।

सिलेंडर फटने से घर की छत के उड़ी, सामान जल कर राख!

गोराया(ईएमएस)। यहां के गांव धुलेता में एक गरीब परिवार के घर में गैस सिलेंडर फटने से उसके घर की छत उड़ गई और घर में रखा सामान जल कर राख हो गया। इस हादसे के पीड़ित जसवीर जस्सा ने बताया कि वह और उनकी बेटी घर में थे। उनकी बेटी की तबीयत ठीक नहीं थी, जसवीर खुद चाय बनाने के लिए किचन में गए और जैसे ही उन्होंने गैस ऑन की सिलेंडर में आग लग गई। देखते ही देखते आग बढ़ गई। पिता-पुत्री ने घर से भागकर जान बचाई। आग लगने से जोरदार धमाका हुआ। किचन में रखा फ्रिज, सिलेंडर, गैस चूल्हा, राशन और बगल के कमरे में बिस्तर, कपड़े, गद्दा, मोबाइल फोन सहित सभी उपकरण जलकर राख हो गए। इस हादसे से उनके घर की छतें भी गिर गई। उन्होंने बताया कि घर के बगल में पुलिस थाना है, जहां सूचना देकर उन्होंने दमकल को बुलाने को कहा लेकिन पुलिसकर्मी ने कहा कि उनके पास नंबर नहीं है, जिसके बाद गांव वासियों की मदद से आग पर काबू पाया। पीड़ित परिवार ने मदद की गुहार लगाई है।

हरियाणा के प्रत्येक गांव में होगा आर्य समाज की टीमों का गठनः स्वामी आर्यवेश

हिसार, (हि.स.)। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश ने कहा है कि 2024 में ऋषि दयानंद सरस्वती के जन्म के 200 वर्ष पूर्ण होने पर आर्य समाज हरियाणा के प्रत्येक गांव में आर्य समाज, युवक परिषद तथा बेटी बचाओ अभियान की इकाइयां गठित करेगा। इसके तहत एक सौ संन्यासी, वानप्रस्थि, ब्रह्मचारी तैयार किए जायेंगे। 200 युवा निर्माण शिविरों व सभी जिलों में नशामुक्ति जन चेतना यात्राओं का आयोजन किया जाएगा। स्वामी आर्यवेश निकटवर्ती गांव धीरणवास स्थित गुरुकुल में आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की इकाइयां गठित करके बुराइयों पर प्रहार करना अब समय की मांग है। प्रसिद्ध भजनोपदेशक तेजवीर आर्य ने कहा कि आर्य समाज जैसे तेजस्वी संगठन की आज देश को आवश्यकता है क्योंकि देश में सामाजिक सौहार्द, सांप्रदायिक सद्भाव तथा नैतिकता की जरूरत है और ये सब आर्य समाज का संगठन ही कर सकता है। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान एवं गुरुकुल धीरणवास के अध्यक्ष युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश ने कहा कि देश की आजादी के आंदोलन में आर्य समाज व ऋषि दयानंद के सिपाहियों के सर्वाधिक योगदान रहा है। गुरु विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, चाचा अजीतसिंह, शहीदे आजम भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे सैकड़ों क्रांतिकारियों की प्रेरणा से लाखों लोगों ने अपने आप को आजादी की बलिवेदी पर आहुति दी।

लोकसभा व विधानसभा चुनाव साथ नहीं, तय समय पर होंगे : उपमुख्यमंत्री

भिवानी, (हि.स.)। उपमुख्यमंत्री दुष्यंत सिंह चौटाला जिला के गांव बामला में कर्मचारी नेता बल्लू बामला के भाई डॉ. अमित की शादी में शिरकत करने पहुंचे थे। डॉ. अमित ने बिना दहेज की शादी कर आसपास के गांवों में मिसाल पेश की है। जिस पर डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने डॉ. अमित सहित सभी परिजनों को बधाई दी और सुखमय जीवन की कामना की। साथ ही अपने समर्थकों से भी मुलाकात की और जिला प्रधान विजय गोठड़ा को पार्टी संगठन मजबूत करने को कहा। इस दौरान उपमुख्यमंत्री दुष्यंत सिंह चौटाला ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने बतौर वित्त मंत्री बहुत अच्छा बजट जारी किया है, जो हर वर्ग के हित का बजट है। उन्होंने कहा कि विपक्ष का काम आलोचना करना होता है और यही काम कांग्रेस कर रही है। चौटाला ने कहा कि यह बजट हर सेक्टर को आगे बढ़ाने के लिए कारगर होगा। इस बजट में भी बुढ़ापा पेंशन 5100 रुपया ना होने पर दुष्यंत चौटाला ने कहा कि बुढ़ापा पेंशन 250 रुपये बढ़ाई गई है। यह तीन साल में 750 रुपये बढ़कर 2750 हो गई है, जो पूरे देश में सबसे ज्यादा है। उन्होंने कहा कि यदि मेरे विधायक 45 होते तो बुढ़ापा पेंशन पहले ही दिन 5100 रुपये होती। साथ ही कहा कि वे गठबंधन सरकार के चलते 250 रुपये बढ़ने पर भी खुश हैं तथा इसे और बढ़ाने के लिए प्रयास करते रहेंगे। दुष्यंत चौटाला ने साफ किया कि हरियाणा में लोकसभा के साथ विधानसभा चुनाव नहीं होंगे। लोकसभा और विधानसभा चुनाव अपने तय समय पर होंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि ओपीएस को लेकर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में कमेटी बनाई है, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद अगला फैसला लिया जाएगा। वहीं अपने चाचा अभय चौटाला की यात्रा पर दुष्यंत चौटाला ने ज्यादा ना बोलते हुए ऑल द बेस्ट कहा।

छात्राओं का भविष्य सुरक्षित करने के लिए हरियाणा सरकार की पहल

भिवानी 25 फरवरी (हि.स.)। हरियाणा सरकार चाहती है कि सरकारी स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर रहीं छात्राएं शिक्षा के साथ-साथ ही अपना भविष्य भी सोच लें कि उनका भविष्य कहां सुरक्षित होगा। इसी उद्देश्य को लेकर हरियाणा के स्कूलों में रोल मॉडल कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें छात्राओं को जिले की रोल मॉडल बनी युवतियों से मुलाकात करवाई जा रही है। इसी कड़ी में शनिवार को भिवानी जिला के गांव सुई के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में रोल मॉडल कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. अनिता अंचल को बच्चों के साथ रोल मॉडल बनाकर प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने ना केवल डॉक्टर, आईएएस व अन्य फील्ड के बारे में जानकारी हासिल की, बल्कि छात्राओं ने उनसे अपने स्वास्थ्य संबंधित जानकारियां भी हासिल की।

छात्राओं ने डॉक्टर से पूछा कि वे किस प्रकार से स्वस्थ रहें, इसके लिए उनके जीवन में वे कैसा खाना खाएं। जिस पर डॉक्टर ने उन्हें सलाह दी कि वे फास्ट फूड से दूर रहें। वहीं छात्राओं ने इस कार्यक्रम को काफी सराहा और कहा कि सरकार द्वारा इस प्रकार की स्कीम काफी अच्छी है।

कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए सुई स्कूल की अध्यापिका सुधा बुंदेला व रोल मॉडल डॉ. अनिता अंचल ने भी सरकार के इस कार्यक्रम की काफी सराहना की और कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री मनोहर लाल बेटियों की शिक्षा के प्रति काफी महत्वपूर्ण विषयों को साथ लेकर चल रहे हैं। बेटियां आगे बढ़ें इसके लिए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

अमेरिकी अरबपति थॉमस ली अपने दफ्तर में मृत पाए गए, आत्महत्या की आशंका

नई दिल्ली ।
अमेरिकी और अरबपति फाइनेंसर थॉम एच ली न्यूयॉर्क में अपने 767 फिफ्थ एवेन्यू स्थित दफ्तर में मृत पाये गए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार ली के मैनहट्टन कार्यालय में उनका शव मिला। बताया जा रहा है कि उनकी मौत गोली लगने से हुई थी और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उन्होंने खुद को ही गोली मारी है। पुलिस ने मीडिया को कहा है कि गुरुवार की सुबह 767 फिफ्थ एवेन्यू में 78 वर्षीय एक व्यक्ति का मृत शव मिला है। यह पता थॉमस एच ली के कैपिटल एलएलसी के कार्यालय के रूप में सूचीबद्ध है। हालांकि पुलिस ने इस बात की पुष्टि नहीं की है उन्होंने खुदकुशी की है। उन्हें उनके कार्यालय में बाथरूम के फर्श पर एक महिला सहायक द्वारा देखा गया था। सुबह से उसका पता नहीं चलने के कारण वह उसकी तलाश में निकली थी।

फोर्ब्स के अनुसार ली की मृत्यु के समय उनकी संपत्ति करीब दो अरब डॉलर थी। उनके परिवार में उनकी पत्नी ऐन टेनेनबॉम और पांच बच्चे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार थॉमस ली के पारिवारिक मित्र और प्रवक्ता माइकल साइट्रिक ने एक बयान में कहा, टॉम की मौत से परिवार बेहद दुखी है। दुनिया उन्हें निजी इक्विटी कारोबार में अग्रणी और एक सफल व्यवसायी के रूप में जानती थी। हम उन्हें एक समर्पित पति, पिता, दादा, भाई-बहन, दोस्त और परोपकारी व्यक्ति के रूप में जानते थे जो हमेशा दूसरों की जरूरतों को अपने से पहले रखते थे। थॉमस ली, ली इक्विटी के संस्थापक और अध्यक्ष थे। इसकी स्थापना उन्होंने 2006 में की थी और इससे पहले उन्होंने थॉमस एच. ली पार्टनर्स के अध्यक्ष और सीईओ के रूप में कार्य किया था। इसकी की स्थापना उन्होंने 1974 में की थी। ली ने लिंकन सेंटर, द म्यूज़ियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट, ब्रैंडिस यूनिवर्सिटी, हार्वर्ड विश्वविद्यालय और यहूदी विरासत संग्रहालय जैसे संस्थानों के बोर्ड में एक ट्रस्टी और परोपकारी के रूप में कार्य किया। पिछले 46 वर्षों में अरबपति ली सैकड़ों सौदों में 15 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया। इन सौदों में वार्नर म्यूजिक और स्नैपल बेवरेजेज जैसे प्रसिद्ध ब्रांडों की खरीद और बाद में बिक्री शामिल थी।

न्यूज ब्रीफ

अडाणी-हिंडनबर्ग विवाद से एलआईसी को बड़ा नुकसानः ऑल टाइम लो के करीब पहुंचा एलआईसी का शेयर

मुंबई। अडाणी-हिंडनबर्ग विवाद का असर एलआईसी पर भी देखने को मिल रहा है। इसी का नतीजा है की

एलआईसी का शेयर अपने ऑलटाइम लो के करीब पहुंच गया है। शुक्रवार को एलआईसी का शेयर 584.70 रुपए पर बंद हुआ, जो कि इसके ऑल टाइम लो, 582 रुपए से थोड़ा ही ऊपर था। हिंडनबर्ग रिपोर्ट के बाद से एलआईसी के शेयर लगभग 17प्रतिशत गिर गया है। पिछले महीने 24 जनवरी को जब हिंडनबर्ग रिपोर्ट आई थी तब एलआईसी का शेयर 702 रुपए पर था। अडाणी ग्रुप के शेयरों में एलआईसी का 24 जनवरी को टोटल इन्वेस्टमेंट की वैल्यू 81,268 करोड़ रुपए थी, जो 24 फरवरी 2023 को गिरकर 32 हजार के करीब आ गई है। इस हिसाब से एलआईसी को अडाणी ग्रुप में निवेश से अब तक 50 करोड़ से ज्यादा नुकसान हुआ है। सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट (कमोडिटी एंड करेंसी) अनुज गुप्ता कहते हैं कि इसका एलआईसी पॉलिसी होल्डर्स पर असर न के बराबर ही रहेगा। एलआईसी ने अपने एसेट्स अंडर मैनेजमेंट का सिर्फ 1प्रतिशत ही अडाणी ग्रुप में निवेश किया है। ऐसे में अगर आगे भी अडाणी ग्रुप के शेयर्स में गिरावट जारी रहती है, तब भी पॉलिसी होल्डर्स को मैच्योरिटी पर मिलने वाली रकम पर आधा या एक पर्सेंट से ज्यादा का अंतर नहीं आएगा। ऐसे में पॉलिसी होल्डर्स का पैसा पूरी तरह सुरक्षित है। अनुज गुप्ता के अनुसार ये समय एलआईसी शेयर में निवेश के लिए सही साबित हो सकता है। एलआईसी का शेयर 872 रुपए पर लिस्ट हुआ था, जो अब 585 रुपए पर है। यानी ये अब तक 33प्रतिशत नीचे आ चुका है। आने वाले दिनों में इसके वापस ऊपर जाने की पूरी संभावना है। ऐसे में अभी एलआईसी के शेयर्स में निवेश किया जा सकता है। शुक्रवार को अडाणी ग्रुप के 10 शेयरों में से 8 में गिरावट रही। ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी अडाणी एंटरप्राइजेज का शेयर 5.11प्रतिशत गिरा। इसके अलावा अडाणी ट्रांसमिशन, पावर, टोटल गैस और ग्रीन एनर्जी में 5-5प्रतिशत की गिरावट रही। वहीं 4.22प्रतिशत, अडाणी विल्मर में 2.22प्रतिशत में 0.032प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली।

पीएम मोदी बोले- कृषि बजट नौ साल में पांच गुना बढ़कर 1.25 लाख करोड़ से अधिक

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत का कृषि बजट 9 साल में पांच गुना बढ़कर 1.25

लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। 2014 में हमारे सत्ता में आने से यह 25,000 करोड़ रुपये से कम था। कृषि व सहकारिता क्षेत्रों के हितधारकों के साथ बजट के बाद एक वेबिनार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा, भारतीय कृषि क्षेत्र आजादी के बाद लंबे समय तक संकट में रहा। देश को खाद्य सुरक्षा के लिए बाहरी देशों पर निर्भर होना पड़ा। लेकिन, अब हालात बदल गएहैं।पिछले कुछ वर्षों में सरकार की नीतियों व किसानों के अथक प्रयासों ने देश को न सिर्फ आत्मनिर्भर बनाया, बल्कि आज हम कई कृषि उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार दलहन व तिलहन का घरेलू उत्पादन बढ़ाने के लिए मिशन मोड में काम कर रही है। खर्च के कुछ आंकड़ों का हवाला देते हुएउन्होंने कहा, 2021-22 में दालों के आयात पर 17,000 करोड़ रुपये, मूल्य वर्धित खाद्य उत्पादों के आयात पर 25,000 करोड़ और खाद्य तेलों के आयात पर 1.5 लाख करोड़ खर्च किए गए। कुल मिलाकर, कृषि आयात का योग करीब दो लाख करोड़ रुपये था। पीएम 11 मार्च तक ऐसे 12 वेबिनार को संबोधित करेंगे।

शहरी बेरोजगारी घटकर हुई 7.2 फीसदी, पुरुषों-महिलाओं की बेरोजगारी दर में भी गिरावट

नई दिल्ली । देश के शहरी क्षेत्रों में 15 साल और उससे अधिक उम्र के लोगों की बेरोजगारी दर कैलेंडर वर्ष 2022 की अक्तूबर-दिसंबर तिमाही में घटकर 7.2 फीसदी रह गई। 2021 की समान अवधि में यह दर 8.7 फीसदी रही थी। इस दौरान कोविड संबंधी प्रतिबंधों के प्रभाव की वजह से देश में बेरोजगारी दर अधिक थी। राष्ट्रीय सैंपल सर्वे कार्यालय (एनएसएसओ) के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, जुलाई-सितंबर, 2022 में 15 साल और उससे अधिक उम्र के लोगों की बेरोजगारी दर 7.2 फीसदी, अप्रैल-जून, 2022 में 7.6 फीसदी और जनवरी-मार्च, 2022 में 8.2 फीसदी रही थी। आंकड़ों के मुताबिक, 2022 की अक्तूबर-दिसंबर तिमाही में शहरी क्षेत्रों में पुरुषों (15 साल और उससे अधिक उम्र) की बेरोजगारी दर एक साल पहले की समान तिमाही के 8.3 फीसदी से घटकर 6.5 फीसदी रह गई। वहीं, इसी उम्र की शहरी महिलाओं की बेरोजगारी दर 10.5 फीसदी से घटकर 9.6 फीसदी पर आ गई। एनएसएसओ के मुताबिक, 15 साल और उससे अधिक उम्र के लोगों के लिए शहरी क्षेत्रों में श्रम बल की भागीदारी दर 2022 की अक्तूबर-दिसंबर तिमाही में बढ़कर 48.2 फीसदी पहुंच गई।

अमेरिका भारत का सबसे बड़ा साझेदार, अमेरिकी वित्त मंत्री बोलीं- हम दोस्ताना नजरिए से आगे बढ़ेंगे

नई दिल्ली ।
अमेरिका की वित्त मंत्री जेनेट एल येलेन ने भारत को सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार करार दिया है। उन्होंने कहा कि हम आपूर्ति श्रृंखलाओं के लचीलेपन को मजबूत करने के लिए फ्रेंडशोरिंग (दोस्ताना संबंध) के नजरिए से आगे बढ़ेंगे। येलेन ने बेंगलुरु में जी-20 देशों के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों की बैठक से अलग अमेरिका और भारत के प्रौद्योगिकी उद्योगपतियों के साथ राउंडटेबल बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रपति बाइडन मानते हैं कि भारत अमेरिका का अपरिहार्य साझेदार है।

उन्होंने कहा, अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। वर्ष 2021 में हमारा द्विपक्षीय व्यापार 150 अरब डॉलर से अधिक का रहा। हमारे लोगों के बीच संबंध हमारे संबंधों की निकटता की पुष्टि करते हैं। दो लाख भारतीय अमेरिका में पढ़ रहे हैं और हमारे स्कूलों और विश्वविद्यालयों को समृद्ध कर रहे हैं। हम दैनिक आधार पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं। भारतीय संवाद करने के लिए व्हाट्सएप का उपयोग करते हैं और कई अमेरिकी कंपनियां अपने संचालन के लिए इंफोसिस पर निर्भर हैं। इस गोलमेज बैठक में इन्फोसिस के चेयरमैन नंदन नीलेकणि, आईबीएम इंडिया के प्रबंध निदेशक संदीप पटेल, इंटेल इंडिया की कंट्री हेड निवरुति राय, फॉक्सकॉन इंडिया के कंट्री हेड जोश फाउलगर और विप्रो के चेयरमैन रिशद प्रेमजी समेत आईटी सेक्टर के दिग्गजों ने हिस्सा लिया।

उन्होंने कहा, हम भविष्य की ओर देख रहे हैं, मैं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अपने संबंधों को गहरा करने के लिए उत्सुक हूं। संयुक्त राज्य अमेरिका आपूर्ति श्रृंखलाओं के लचीलेपन को बढ़ाने के लिए फ्रेंडशोरिंग नामक एक दृष्टिकोण को आगे बढ़ा रहा है। हम भारत सहित अपने कई विश्वसनीय व्यापारिक भागीदारों के साथ एकीकरण को मजबूत करके ऐसा कर रहे हैं। इस मामले में हम प्रगति कर रहे हैं; उदाहरण के तौर पर एप्पल और गूगल जैसी प्रौद्योगिकी कंपनियों ने भारत में अपने फोन उत्पादन का विस्तार किया है।

अमेरिका अपने नए फ्रेंडशोरिंग दृष्टिकोण के तहत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जोड़ने के लिए विकासशील देशों के साथ साझेदारी पर काम कर रहा है।

उन्होंने कहा कि वैश्विक बुनियादी ढांचा और निवेश

साझेदारी (पीजीआई) के जरिए अमेरिका डिजिटल प्रौद्योगिकियों में निवेश कर रहा है जो भारत में समावेशी और लचीली वृद्धि को गति प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि पीजीआईआई के तहत अमेरिका ने जलवायु-स्मार्ट कृषि उत्पादन को सक्षम करने के लिए कृषि तकनीक में निवेश की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि अमेरिका का लक्ष्य पीजीआई के लिए 2027 तक 200 अरब डॉलर जुटाना है और भविष्य में निवेश जारी रखने के लिए भारत के साथ साझेदारी करने की उम्मीद है।

गोलमेज बैठक के दौरान नीलेकणि ने कहा कि इन्फोसिस ने पिछले कुछ साल में अमेरिका के छह अलग-अलग राज्यों में नए केंद्र खोले हैं और पिछले छह साल में वहां 25,000 कर्मचारियों को नियुक्त किया है।

उन्होंने कहा, हमने अमेरिका में स्थानीयकरण पर काफी ध्यान केंद्रित किया है। कुल वैश्विक कार्यबल 3,30,000 है। हमने इंडियानापोलिस में 160,000 वर्ग फुट का विश्व स्तरीय प्रशिक्षण केंद्र बनाया है। हमने इस साल 7,000 नए स्नातकों को नियुक्त किया। हमारा उद्देश्य सामुदायिक कॉलेजों सहित युवा, प्रतिभाशाली लोगों को चुनना और उनके प्रशिक्षण में निवेश करना है।

उन्होंने कहा कि इन्फोसिस भारत की कर प्रणाली का संचालन करती है और समूची प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर प्रणाली का बैक-एंड हिस्सा कंपनी चलाती है। भारत में 79 मिलियन आयकर रिटर्न दाखिल होते हैं और रिफंड कुछ ही दिनों में पेपरलेस तरीके से होता है।

तेल कंपनियों ने जारी किए पेट्रोल-डीजल के दाम

नई दिल्ली । तेल कंपनियों ने पेट्रोल और डीजल के दाम जारी कर दिए हैं। कंपनियों ने तेल के दामों में कोई बदलाव नहीं किया है। दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर जबकि डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर मिल रहा है। मुंबई में पेट्रोल की कीमत 106.31 रुपये व डीजल की कीमत 94.27 रुपये प्रति लीटर है। कोलकाता में पेट्रोल का दाम 106.03 रुपये जबकि डीजल का दाम 92.76 रुपये प्रति लीटर है। वहीं चेन्नई में भी पेट्रोल 102.63 रुपये प्रति लीटर तो डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर है।

5100 पायलट-क्रू की भर्ती करेगी एअर इंडिया, विदेशी मुद्रा भंडार घटकर 11 हफ्ते के निचले स्तर पर

नई दिल्ली ।
टाटा समूह की विमानन कंपनी एअर इंडिया इस साल पायलट समेत 5,100 लोगों को भर्ती करेगी।कंपनी ने शुक्रवार को कहा, कुल भर्तियों में पायलट की संख्या 900 होगी। वहीं, 4,200 केबिन क्रू को भी नौकरी दी जाएगी। कंपनी ने कहा, मई, 2022 से फरवरी, 2023 के बीच उसने 1,900 केबिन क्रू की भर्ती की थी। कंपनी ने हाल में 470 एयरक्राफ्ट का ऑर्डर दिया है। वह आगे भी बड़ी संख्या में भर्ती करेगी।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार घटा

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 17 फरवरी को समाप्त सप्ताह में 5.681 अरब डॉलर घटकर 11 माह के निचले स्तर 561.26 अरब डॉलर पर आ गया।यह विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार तीसरे सप्ताह गिरावट है।इससे पिछले सप्ताह में यह 8.319 अरब डॉलर कम होकर 566.948 अरब डॉलर रह गया था। आरबीआई के शुक्रवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी मुद्रा भंडार में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी रखने वाली विदेशी मुद्रा संपत्ति 17 फरवरी वाले सप्ताह में 4.515 अरब डॉलर घटकर 496.072 अरब डॉलर रह गई। इस दौरान देश का स्वर्ण भंडार 1.045 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 41.817 अरब डॉलर रह गया। विशेष निकासी अधिकार भी 8.7 करोड़ डॉलर घटा है।

दुनियाभर में 8,500 लोगों की छंटनी करेगी एरिक्सन

एरिक्सन ने कहा है कि वह दुनियाभर में 8,500 कर्मचारियों की छंटनी करने की योजना बना रही है। लागत कम करने के लिए वह यह फैसला ली है। दूरसंचार इतिहास में यह अब तक की सबसे बड़ी छंटनी है। कर्मचारियों को निकालने का आधार स्थानीय देशों के मुताबिक होगा। कई देशों में छंटनी की शुरुआत हो चुकी है। इसके पास 1.05 लाख कर्मचारी हैं।

एनटीपीसी ने दिया 4,121 करोड़ लाभांश

नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन (एनटीपीसी) ने 2022-23 में शेयरधारकों को 4,121.08 करोड़ लाभांश दिया है। कंपनी ने शुक्रवार को बताया, इसने 42.50 रुपये प्रति शेयर चुकता पूंजी के हिसाब से दिया। यह लगातार 30वां साल है, जब कंपनी ने लाभांश दिया है। सरकार को उम्मीद है कि देश में इलेक्ट्रॉनिक चिप विनिर्माण संयंत्रों का निर्माण शुरू करने के लिए इस साल दो आवेदनों को मंजूरी दी जाएगी।

इस हफ्ते सोने-चांदी में बड़ी गिरावटः फिसलकर 56 हजार के नीचे आया सोना, चांदी में भी 1,300 रुपए से ज्यादा की गिरावट

नई दिल्ली ।
इस हफ्ते सोने-चांदी के दामों में बड़ी गिरावट देखने को मिली है। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट के अनुसार सर्राफा बाजार में इस हफ्ते

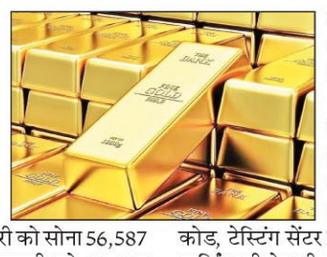

की शुरुआत, यानी 20 फरवरी को सोना 56,587 रुपए पर था जो अब 25 फरवरी को 55,957 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आ गया है। यानी इस हफ्ते इसकी कीमत 630 रुपए कम हुई है।

2 फरवरी को सोना अपने ऑल टाइम हाई पर था। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट के मुताबिक, तब सोना 58 हजार 882 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया था। हालांकि इसके बाद सोने में गिरावट देखने को मिली है।

इस हफ्ते चांदी में हजार रुपए से ज्यादा की गिरावट देखने को मिली है। इस हफ्ते की शुरुआत में ये 65,712 रुपए पर थी जो अब 64,331 रुपए प्रति किलोग्राम पर आ गई है। यानी इस हफ्ते इसकी कीमत 1,381 रुपए कम हुई है।

सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें - हमेशा ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड का हॉलमार्क लगा हुआ सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। साथ में प्यूरिटी कोड, टेस्टिंग सेंटर मार्क, ज्वैलर का मार्क और मार्किंग की डेट भी जरूर देख लें।

कीमत क्रॉस चैक करें - सोने का सही वजन और खरीदने के दिन उसकी कीमत कई स्रोतों (जैसे इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट) से क्रॉस चेक करें। सोने का भाव 24 कैरेट, 22 कैरेट और 18 कैरेट के हिसाब से अलग-अलग होता है। सोना खरीदते वक्त कैश पेमेंट बड़ी गलती साबित हो सकती है। (जैसे भीम ऐप) और डिजिटल बैंकिंग के जरिये पेमेंट करना अच्छा रहता है। आप चाहें तो डेबिट या क्रेडिट कार्ड के माध्यम से भी पेमेंट कर सकते हैं। इसके बाद बिल लेना न भूलें।

इंटरनेट यूजर्स घटे, ब्रॉडबैंड के बढ़े: स्लो स्पीड-सिग्नल से परेशानी, 77प्रतिशत लोगों ने नंबर पोर्ट कराया

नई दिल्ली ।
मोबाइल में सिग्नल न आने और इंटरनेट की धीमी स्पीड के कारण उपभोक्ता परेशान हैं। बीते 12 साल में अब तक 102 करोड़ एक्टिव यूजर्स में से 78.97 करोड़ यानी करीब 77प्रतिशत उपभोक्ता अपना नंबर पोर्ट करा चुके हैं। भारतीय टेलीकॉम नियामक प्राधिकरण (ट्राइ) की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक 2022-23 में अप्रैल से दिसंबर तक 9.4 करोड़ यूजर्स नंबर पोर्ट करवा चुके हैं। 2021-22 में ही 11.3 करोड़ उपभोक्ताओं ने अपना नंबर पोर्ट कराया था, जो बीचे 8 साल में सर्वाधिक है। यूजर्स के इंटरनेट से ब्रॉडबैंड में स्विच ओवर का ट्रेंड भी रहा है। इंटरनेट यूजर्स की संख्या 82.53 करोड़ से घटकर 82.48 करोड़ हो गई जबकि ब्रॉडबैंड यूजर्स 77.8 करोड़ से बढ़कर 78.8 करोड़ हो गए। वायरलाइन उपभोक्ताओं की संख्या 2.02 करोड़ से 2.48 करोड़ हो गई। 3.88 करोड़ मोबाइल नंबर डिएक्टिवेट हुए हैं।

5 साल में आउटगोइंग कॉल टाइम दो गुना हुआ - 2016-17 में मोबाइल पर आउटगोइंग

कॉल का औसत समय 405 मिनट प्रति माह था जो 2021-22 में दो गुना से भी ज्यादा 955 मिनट प्रति महीने हो गया।

एयरटेल के यूजर बढ़े, जियो अब भी टॉप - एयरटेल के यूजर्स 35.2 करोड़ से 36 करोड़ हो गए हैं। रिलायंस जियो के यूजर्स 42.2 करोड़ से घटकर 40.3 करोड़ हो गए लेकिन ये अब भी टॉप पर है। कुल मोबाइल यूजर्स में रिलायंस-जियो की भागीदारी बीते 9 महीने में 35.3प्रतिशतसे बढ़कर 37.14प्रतिशत हो गई है। वोडाफोन-आइडिया के यूजर्स की संख्या 28.3 करोड़ से 26 करोड़ रह गई। बीएसएनएल के यूजर्स 11.8 करोड़ से 11.3 करोड़ रह गए। एमटीएनएल के 1.52प्रतिशत उपभोक्ता घटे हैं।

पांच साल में डेटा की खपत 15 गुना बढ़ी, दाम एक चौथाई घटे - 2021-22 के दौरान प्रति उपभोक्ता औसत डेटा इस्तेमाल 15.8 जीबी प्रति महीने रहा। प्रति जीबी डेटा की कीमत 10.47 रुपए रही। जबकि 2016-17 में प्रति उपभोक्ता औसत मासिक डेटा खपत एक जीबी थी और इसकी कीमत 40.34 रुपए प्रति जीबी थी।

सस्ते डेटा का असर डीटीएच पर - डेटा सस्ता होने का असर डीटीएच (डायरेक्ट टू होम) कनेक्शन में भी नजर आ रहा है। करीब 26 लाख उपभोक्ताओं ने एक वर्ष के दौरान डीटीएच केबल कनेक्शन हटवा लिया। वर्ष 2020-21 में डीटीएच उपभोक्ताओं की संख्या 6.95 करोड़ से घटकर वर्ष 2021-22 में 6.69 करोड़ रह गई।

गर्मी में झेलनी पड़ सकती है बिजली कटौती

फरवरी में ही कई जगह पारा 40 पार, अप्रैल में 229 गीगावाट पहुंच सकती है पॉवर डिमांड

नई दिल्ली।

इस साल गर्मी में लोगों को भारी बिजली कटौती का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि, देश के कुछ हिस्सों में तापमान फरवरी महीने में ही 40 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। हाई टेम्प्रेचर के कारण हाल के हफ्तों में बिजली की मांग लगभग रिकॉर्ड स्तर पर पहुंची है। गर्मी के दबाव ने देश में बिजली आपूर्ति को लेकर चिंता अभी से बढ़ा दी है।

पावर स्टेशनों को पहले ही गर्मी के मौसम में ब्लैकआउट से बचने और घरेलू कोयले की आपूर्ति पर दबाव घटाने के लिए इम्पोर्टेड कोयले का उपयोग करके अगले तीन महीनों तक पूरी

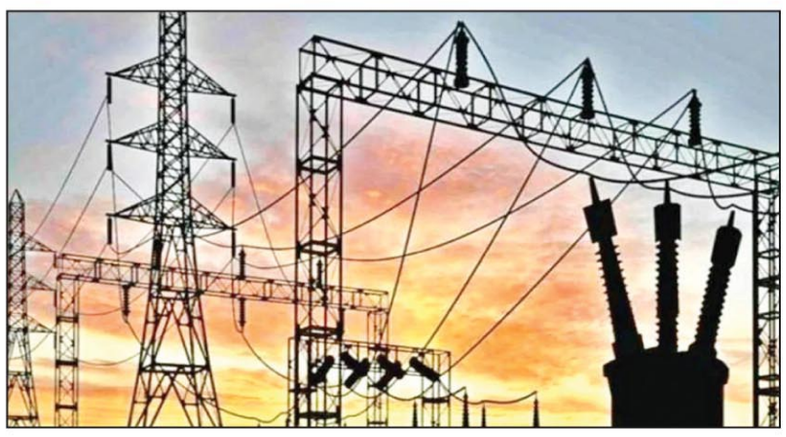

क्षमता से बिजली उत्पादन करने का आदेश दिया गया है।

रिकॉर्ड 229 गीगावाट तक पहुंच सकती है बिजली की मांग

जनवरी में बिजली की पीक डिमांड 211 गीगावाट पर पहुंच गई थी, जो पिछली गर्मियों में ऑल टाइम हाई के करीब थी। बीते साल कोरोना महामारी के प्रतिबंधों को हटाने के बाद हेवी इंडस्ट्री फिर से शुरू हुई थी और देश की जनता ने भीषण परिस्थितियों का सामना किया था।

तब गर्मी ने 122 साल पुराने रिकॉर्ड को तोड़ दिया था। भारत के ऊर्जा मंत्रालय के अनुसार इस साल अप्रैल में बिजली की मांग रिकॉर्ड 229 गीगावाट तक पहुंच सकती है।

किसानों को फसलों की जांच करने की सलाह दी

पिछले सप्ताह कुछ क्षेत्रों में टेम्परेचर नॉर्मल से 11 डिग्री ऊपर रहा है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने किसानों को गर्मी के चलते गेहूं और अन्य फसलों की जांच करने की सलाह दी है। गर्म मौसम की असामान्य शुरुआत से पूर्वानुमान है कि सिंचाई पंप और एयर कंडीशनर की जोरदार बिक्री के कारण बिजली की खपत बढ़ेगी। ये इस चिंता को बढ़ावा दे रहा है कि लगातार दो वर्षों के व्यवधान के बाद देश का ऊर्जा नेटवर्क नए दबाव में आ जाएगा।

बिजली कटौती के अलावा कोई विकल्प नहीं

राजस्थान के उत्तरी राज्य में बिजली मंत्री भंवर सिंह भाटी ने कहा, जिस तरह से तापमान बढ़ रहा है - फरवरी में यह असामान्य है। स्थिति हमारे लिए चिंता का विषय बन रही है। यहां पहले से ही घरों और किसानों को बिजली की आपूर्ति की जा रही है। बिजली की मांग पिछली गर्मियों की तुलना में 20प्रतिशत से 30प्रतिशत तक बढ़ सकती है। बिजली आपूर्ति में कटौती के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है।

बिजली स्टेशनों पर कोयले का भंडार टारगेट से काफी नीचे

भारत में 70प्रतिशत से अधिक बिजली कोयले से बनती है। बिजली स्टेशनों पर कोयले का भंडार वर्तमान में 45 मिलियन टन के टारगेट से काफी नीचे है, जिसे सरकार ने मार्च के अंत तक पूरा करने को कहा था। ओडिशा के ऊर्जा मंत्री प्रताप केशरी देब ने कहा कि गर्मियों में भारत की बिजली की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता भी काफी हद तक पर्याप्त कोयले का खनन और परिवहन सुनिश्चित करने के प्रयासों से तय होगी।

बेकाबू में मुख्य भूमिका निभाएंगी ये एक्ट्रेस

- शालीन भनोट, ईशा सिंह और मोनालिसा ने किया अनुबंध

मुंबई (ईएमएस)। एक्ट्रेस शालीन भनोट, ईशा सिंह और मोनालिसा को नए फैंटेसी ड्रामा बेकाबू में मुख्य भूमिका निभाने के लिए अनुबंधित किया गया है। शालीन भनोट ने कहा कि मैं अपने दर्शकों को बिग बॉस 16 में मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे बहुत प्यार करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं आभारी हूं कि एकता कपूर ने मुझे घर से बाहर निकलने से ठीक पहले बेकाबू में मुख्य भूमिका की पेशकश की। मुझे लगता है कि विजेता की घोषणा से पहले ही मैंने शो जीत लिया। शो का हिस्सा बनने के बारे में बात करते हुए शालीन ने कहा कि फैंटेसी रिवेंज ड्रामा जेनरे (रचना-पद्धति या शैली) की खोज करना मेरे लिए पहली बार है और मैं एक राक्षस की भूमिका निभाते हुए नजर आऊंगा, जो अपने वंश के रहस्यों की खोज करने वाला है। यह शो फैंटेसी शैली को फिर से नया रूप देने वाला है और इसे टीवी पर एक बिल्कुल नए स्तर पर ले जाने वाला है। रिपोर्ट के अनुसार, यह शो परियों और राक्षसों की दो अलग-अलग दुनिया के इर्द-गिर्द घूमता है। शो में परी की भूमिका निभाने को लेकर अपनी उत्तेजना व्यक्त करते हुए, एक था राजा एक थी रानी की अभिनेत्री ईशा सिंह ने साझा किया, मैं परी की भूमिका निभाने को लेकर रोमांचित हूं। यह एक ड्रीम रोल है, जो चैनल में मेरी घर वापसी का प्रतीक है, जिसने टेलीविजन पर फैंटेसी जेनरे को अग्रणी बनाया है। दूसरी ओर कई भोजपुरी, हिंदी, बांग्ला, ओडिया, तमिल, कन्नड़ और तेलुगू भाषा की फिल्मों में काम करने वाली मोनालिसा ने कहा कि वह एक नई शैली को खोजने और एक नकारात्मक किरदार निभाने में खुश हैं। मुझे पूरी तरह से अलग लुक में देखा जाएगा और मैं यह जानने के लिए इंतजार नहीं कर सकती कि दर्शक इसके बारे में क्या सोचते हैं।

शूटिंग के दौरान नीति टेलर हुई घायल

-बड़े अच्छे हैं 2 के सेट पर हुआ हादसा

मुंबई (ईएमएस)। एक्ट्रेस नीति टेलर के साथ टीवी शो बड़े अच्छे लगते हैं 2 के सेट पर हादसा हो गया। नीति टेलर जब शूट कर रही थीं तो वह घायल हो गईं। एक्ट्रेस ने खुद इसकी जानकारी दी। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर चोट लगी बाजू की तस्वीर शेयर की। कोहनी से लेकर कंधे के बीच काफी खरोंचें तस्वीर में नजर आ रही हैं। नीति टेलर के इस पोस्ट को देख फैन्स टेंशन में आ गए और एक्ट्रेस की सेहत के बारे में पूछने लगे। फैन्स नीति टेलर को अपना ध्यान रखने की सलाह दे रहे हैं। नीति टेलर ने हाल ही बड़े अच्छे लगते हैं 2 में एंट्री की थी। मालूम हो कि एकता कपूर के इस शो में दिशा परमार और नकुल मेहता लीड रोल प्ले कर रहे थे। लेकिन लीप आने के बाद बड़े अच्छे लगते हैं 2 में नीति टेलर और रणदीप राय की एंट्री हुई। करियर की बात करें तो नीति टेलर ने 15 साल की उम्र में टीवी शो प्यार का बंधन से करियर की शुरूआत की थी। यह शो 2009 में आया था। लेकिन नीति को पॉपुलैरिटी कैसी ये यारियां से मिली। इसमें पार्थ समथान के साथ उनकी जोड़ी को काफी पसंद किया गया था। इसके बाद वह नीति टेलर क्राइम थ्रिलर गुलाम और इश्कबाज जैसे शोज में दिखीं। नीति टेलर कमाल की डांसर भी हैं। उन्होंने झलक दिखला जा 10 में कोरियोग्राफर आकाश थापा के साथ हिस्सा लिया था। नीति टेलर फिल्में भी कर चुकी हैं। वह तेलुगू भाषा की दो फिल्मों में काम कर चुकी हैं। कुछ हफ्ते पहले नीति टेलर को-स्टार पार्थ समथान के साथ बिग बॉस 16 में भी पहुंची थीं। सलमान के इस शो में दोनों अपने शो कैसी ये यारियां के चौथे सीजन को प्रमोट करने पहुंचे थे। तब नीति टेलर ने सलमान के साथ डांस भी किया था। बता दें कि कैसी ये यारियां से पॉपुलैरिटी बटोरने वालीं एक्ट्रेस नीति टेलर इस समय टीवी शो बड़े अच्छे लगते हैं 2 में नजर आ रही हैं। इस शो में उन्हें प्राची कपूर के किरदार में काफी पसंद किया जा रहा है।

मैंने थिएटर करने के लिए ब्रेक लिया : सान्वी तलवार

-तीन साल बाद हुई अभिनेत्री की वापसी

मुंबई (ईएमएस)। तीन साल के अंतराल के बाद अभिनेत्री सान्वी तलवार अली बाबाः दास्तान-ए-काबुल शो के साथ वापसी करने जा रही हैं। इस बारे में बात करते हुए, सान्वी ने कहाः अपने आखिरी शो के बाद मैंने थिएटर करने के लिए ब्रेक लेने का फैसला किया। मैं हमेशा से थिएटर करना चाहती थी और मैं कभी भी किसी एक्टिंग स्कूल में नहीं गई और न ही प्रशिक्षण लिया। इसलिए आखिरकार, जब मुझे मौका मिला मैंने लोकप्रिय थिएटर अकादमी, स्टेला एडलर एक्टिंग थिएटर के लिए आवेदन किया, जो कि यूएसए में 75 साल पुरानी थिएटर अकादमी है। उन्होंने कहा- मेरा मानना है कि हमारे जीवन में हर चीज का विशेष महत्व है, इसलिए जब जीवन आपको कुछ नया सीखने का मौका देता है, तो आपको इसे लेना चाहिए। मेरे जीवन के ये तीन साल निश्चित रूप से मेरे लिए फलदायी रहे हैं और मैं इससे खुश हूं। अपनी वापसी के बारे में सान्वी ने कहाः काम से तीन साल के विश्राम के बाद, मैं फ्रेम में वापस आ गई हूं। मैंने एक नया शो अली बाबाः दास्तान-ए-काबुल साइन किया है और मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रही हूं। कहानी इतनी दमदार है कि इसने मुझे शो लेने के लिए प्रेरित किया। अभिनेत्री ने कहा, दर्शक इस शो में मेरा एक अलग रंग देखने वाले हैं और मुझे यकीन है कि वह मुझे इस किरदार में पसंद करेंगे। मैं टीवी पर अपनी वापसी को लेकर काफी उत्साहित हूं। मालूम हो कि अभिनेत्री सान्वी को ओ गुजरिया, ये कहां आ गए हम, विक्रम बेताल की रहस्य गाथा, सूफियाना प्यार मेरा, कबूल है और कई अन्य शो में उनकी भूमिकाओं के लिए जाना जाता है। उनका आखिरी शो चंद्र नंदिनी था।

रणवीर सिंह की बास्केटबॉल खिलाड़ी ने की सराहना

अभिनेता रणवीर सिंह को ग्रीक-ना-इजीरियाई बास्केटबॉल खिलाड़ी जियानिस एंटेटोकोनाम्पो ने सराहा है। खिलाडी ने वेड की विजेता टीम को कोचिंग भी दी थी। रणवीर, जो 2021 से एनबीए इंडिया के ब्रांड एंबेसडर हैं। उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया और 2023 एनबीए ऑल-स्टार सेलिब्रिटी गेम में मार्वल सुपरहीरो सिमू लियू, पहलवान द मिज, फिल्म ग्लास प्याज के स्टार जेनेल मोने, रैपर 21 सैवेज, और कई अन्य सेलेब्स और मनोरंजनकर्ताओं की पसंद में शामिल हो गए। रणवीर के फैन क्लब द्वारा साझा किए गए एक वीडियो में, गियानिस को यह कहते हुए सुना जा सकता है, खेल से पहले आपने जो भाषण दिया उसने बहुत आकर्षित किया, आपने कहा कि निडर बनो, बहादुर बनो और मुझे वह पसंद आया। उन्होंने (रणवीर) कहा, बी बोल्ड, बी द मोमेंट, बी करेजस। चलो जीत जाओ। मुझे यह पसंद आया, मुझे यह पसंद आया। उन्होंने कहा, आज हमारी टीम में जो दृढ़ता थी, अगर यह लड़का (रणवीर) हमारी टीम में नहीं होता, तो हमारे पास नहीं होता।

भंसाली ने की हीरामंडी की पहली झलक जारी

-तवायफों की जिन्दगी पर आधारित है यह सीरीज

मुंबई (ईएमएस)। बालीवुड के फिल्म निमार्ता संजय लीला भंसाली ने अपनी पहली वेब सीरीज हीरामंडी की पहली झलक जारी की थी। भंसाली इसे पिछले 10 सालों से बनाने का सपना देख रहे थे, जो अब जाकर पूरा हुआ है। तवायफों की जिन्दगी पर आधारित उनकी यह सीरीज 8 भागों में बन रही है। इस वेब सीरीज के लिए उनकी सबसे पहली पसन्द रेखा थीं। वे चाहते थे कि रेखा उनकी इस फिल्म में मुख्य भूमिका अभिनीत करें। रेखा ने संजय लीला भंसाली को इस फिल्म के लिए स्पष्ट इंकार कर दिया था। भंसाली अभी भी यह चाहते हैं कि रेखा उनकी इस सीरीज का हिस्सा हों, इसी के चलते वे एक बार फिर से रेखा से सम्पर्क में हैं। वे रेखा को लेकर एक डांस नम्बर उन पर फिल्माना चाहते हैं। जानकारी के मुताबिक, संजय लीला भंसाली वेबसीरीज हीरामंडी में रेखा का खास डांस नंबर रखवाना चाहते हैं, जिसके लिए वो लगातार रेखा से कॉन्टेक्ट कर रहे हैं। हालांकि, अभी तक रेखा ने इस डांस नंबर के लिए हामी नहीं भरी है। हाल ही में बातचीत के दौरान संजय लीला भंसाली ने कहा मैंने 30 साल में करीब 10 फिल्में बनाई हैं। पिछले कुछ सालों में मैंने 3 फिल्मों में काम किया है और अब मैं 8 एपिसोड्स बनाने जा रहा हूं। हीरामंडी जैसी डिमांडिंग सीरीज पर काम करना मेरे लिए मुश्किल टास्क रहा है। ऐसे में हमें अलर्ट रहना पड़ता है क्योंकि, इसमें बहुत से ट्रैक हैं। भंसाली ने आगे कहा- शूट के दौरान हमें महसूस होता है कि हमने कई जरूरी शॉट्स नहीं लिए, जो कहानी को और भी बेहतर तरीके से पेश कर सकते थे। यही वजह है कि हमें पूरे टाइम स्क्रिप्ट पर ध्यान देना पड़ता है। सोर्सेस की मानें तो भंसाली चाहते थे कि रेखा हीरामंडी में लीड निभाएं। लेकिन उन्होंने इस प्रोजेक्ट में बतौर लीड हिरोईन बनने से इनकार कर दिया। लेकिन अब भंसाली चाहते हैं कि वो सीरीज के लिए डांस नंबर जरूर करें।

द कश्मीर फाइल्स को लोगों की फिल्म मानते है अग्निहोत्री

निर्देशक विवेक अग्निहोत्री की फिल्म द कश्मीर फाइल्स पिछले साल हिंदी सिनेमा की कुछ दुर्लभ हिट फिल्मों में से एक बनी। इस फिल्म को विवेक अग्निहोत्री ने लोगों की फिल्म कहा है। कश्मीर घाटी में 1990 के दशक की शुरूआत में हुए कश्मीरी पंडितों के नरसंहार पर प्रकाश डालने वाली इस फिल्म को हाल ही में दादासाहेब फाल्के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सम्मानित किया गया था। द कश्मीर फाइल्स को सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिलने पर प्रतिक्रिया देते हुए निर्देशक ने कहा कि दादासाहेब फाल्के अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार पाने के लिए मैं सम्मानित और आभारी हूं। बहुत सारे लोग हैं जिन्होंने इस फिल्म को बनाने में योगदान दिया है, सूची अंतहीन है। इसलिए मैंने इसे लोगों की फिल्म कहा है। हम यह पुरस्कार दुनिया में धार्मिक आतंकवाद के सभी पीड़ितों को समर्पित करते हैं। विवेक की पत्नी पल्लवी जोशी ने कहा कि यह वास्तव में द कश्मीर फाइल्स की पूरी टीम के लिए एक बड़ा सम्मान है।

रिहाना जल्द देगी दूसरे बच्चे को जन्म

पॉप स्टार रिहाना फिर अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर सुर्खियों में हैं। बिना शादी रिहाना वह जल्द ही बॉयफ्रेंड के दूसरे बच्चे को जन्म देंगी। सेकेंड प्रेग्नेंसी की घोषणा के बाद सिंगर को पहली बार पब्लिक प्लेस पर स्पॉट किया गया, जहां वह अपने स्टाइल से लोगों का अटेंशन खींचती नजर आईं। 34 वर्षीय रिहाना को शुक्रवार रात सांता मोनिका में जियोर्जियो बाल्दी में डिनर पर स्पॉट किया गया, जहां वे अपनी अपीयरेंस से सबका ध्यान खींचती नजर आईं। इस दौरान रिहाना ग्राफिक टी-शर्ट और ब्लैक स्टैंसिल डिजाइन वाली ग्रे जींस में नजर आईं, जिसे उन्होंने ब्राउन फरी कोट के साथ टीम अप किया है। न्यूड मेकअप, ग्लोसी लिपस्टिक और चेहरे पर ब्लैक शेड्स से उन्होंने अपने लुक को कंप्लीट किया है। ओवरऑल लुक में प्रेग्नेंट रिहाना का स्टाइल देखते ही बन रहा है।

न तो प्रियंका, न सुम्बुल, अब नागिन-7 में एकता कपूर की होगी कोई नई नागिन

मुंबई (ईएमएस)। बिग बॉस-16 में जब से एकता कपूर ने एंट्री करके कंटेस्टेंट्स का ऑडिशन लिया है, तब से ही नागिन-7 में वो किसे अपना लीड रोल देने वाली हैं, इसे लेकर कयास लगने तेज हो गए हैं। कोई कह रहा है कि सुम्बुल तौकीर खान होंगी अगली नागिन, तो किसी का कहना है कि ये मौका एकता कपूर, प्रियंका चाहर चौधरी को देने वाली हैं। हालांकि, अब सच्चाई सामने आई है कि न तो प्रियंका, न ही सुम्बुल, बल्कि ये रोल तो किसी और को ही मिलने वाला है। हाल ही में सुम्बुल ने साफ कहा कि उन्हें नागिन शो करने में कम दिलचस्पी है, क्योंकि टीवी की इमली को लगता है कि ये रोल करने के लिए वो अभी काफी छोटी हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या एकता कपूर, प्रियंका को ये किरदार देने वाली हैं। तो सुम्बुल ने कहा कि हां वो ही इस भूमिका के लिए अच्छी होंगी और यह उन पर ये रोल काफी सूट होता है। अब पता चला है कि प्रियंका जो बॉलीवुड में कुछ रोमांचक ऑफर पाकर बहुत खुश हैं और खबर है कि वो शाहरुख खान की डंकी में नजर आने वाली हैं, वो शायद ही अभी टीवी की दुनिया में कदम रखें। बता दें कि एकता कपूर भी नागिन 7 की कास्टिंग को बहुत ही प्रेडिक्टेबल नहीं बनाना चाहती हैं और नागिन 6 अभी टीआरपी के लिए संघर्ष कर रही है। एकता, नागिन 7 में अपनी प्लानिंग को फिर से बदल रही हैं, वह एक नए चेहरे और नई योजनाओं के साथ कुछ प्लान बना रही है और ये सही समय नहीं है कुछ भी बताने के लिए। एकता कपूर चाहती हैं कि लोग नागिन 7 को लेकर उत्साहित हो लेकिन अभी इस सुपरनैचुरल शो को लेकर लोग ज्यादा एक्साइटेड नहीं है। इसलिए उन्होंने इसे दिलचस्प बनाने का फैसला किया है ताकि दर्शक खुद ही इसकी तरफ खींचे चले आएं। लोगों का मानना है कि मौनी रॉय पहली नागिन थीं और आज तक उनके जैसी कोई दूसरी नागिन नहीं हुई है।

होली पर अरविंद अकेला कल्लू का नया गीत रिलीज

मुंबई, (हि.स.)। फाल्गुन माह शुरू होते ही पूरे देश में होली की उमंग दिखने लगती है। होली की मस्ती भोजपुरी गानों के बिना अधूरी लगती है। अब होली से पहले भोजपुरी के सुपरस्टार सिंगर और एक्टर अरविंद अकेला कल्लू का नया होली गाना 'होली मे मजनुआ जीजा जी से लड़ल' रिलीज हो गया है। वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स भोजपुरी से कल्लू का भोजपुरी गाना रिलीज होने के बाद से सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। कल्लू के फैंस इस गाने सर्च कर करके लगातार देख रहे हैं। गाने के वीडियो में कल्लू के साथ एक्ट्रेस नीतू यादव को देखा जा सकता है। दोनों की जोड़ी काफी खूबसूरत लग रही है। कल्लू के होली गीत का उनके फैंस काफी बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। गाने में नीतू यादव की परफॉर्म एक दम खास है। उन्होंने गाने में अपनी बेहद ही खास अंदाज में दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। गाने के बोल को ध्यान में रखकर लोकेशन का चयन किया गया है। गाने में नीतू और कल्लू की दोनों ने कमाल ही कर दिया है। वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स प्रस्तुत सांग 'होली मे मजनुआ जीजा जी से लड़ल' को एक्टर-सिंगर अरविंद अकेला कल्लू ने गाया है। इस्ाको छोटन छाया ने लिखा है, वही इनका संगीत विक्की वॉक्स ने दिया है। इस गाने के निर्देशक रवि पंडित हैं। गाने के कोरियोग्राफ विशाल गुप्ता ने किया है। इसके एडिटर दीपक पंडित, परिकल्पना अरबिंद मिश्रा, सहयोग गुड्डू पांडेय, हनुमान पांडेय, सुजीत मीडिया आरा, लोकल प्रोडक्शन पंकज सोनी, प्रोडक्शन किरन म्यूजिक एंटरटेनमेंट (आशु बाबा) ने दिया है।

कैजुअल लुक में दिखाई दिए न्यूलीमैरिड कपल

न्यूलीमैरिड कपल बॉलीवुड एक्ट्रेस कियारा आडवाणी सिद्धार्थ मल्होत्रा एयरपोर्ट पर कैजुअल लुक में दिखाई दिए। हालांकि कुछ लोगों को कियारा का ये लुक बिल्कुल पसंद नहीं आया, तो उन्होनें एक्ट्रेस को जम कर खरी-खोटी सुनाई। इस वीडियो में कियारा ऑल व्हाइट दिख रही हैं। उन्होनें अपने लुक को गोल्डन बैग के साथ कम्पलीट किया है। इस वीडियो में कियारा के हाथ में चूड़ा और मांग में सिंदूर नहीं दिखा रहा है, जिसके कारण लोगों ने उन्हें सोशल मीडिया पर ट्रोल करना शुरू कर दिया है। एक यूजर ने लिखा, कहां है चूड़ा, मंगलसूत्र और सिंदूर? तो वहीं दूसरे यूजर ने लिखा, इन लोगों ने शादी को मजाक बना रखा है। वहीं एक अन्य ने लिखा, इन लोगों से बस फैशन करवा लो। सिंदूर और मंगलसूत्र तो पागल लोग पहनते हैं। मालूम हो कि एक्ट्रेस कियारा आडवाणी सिद्धार्थ मल्होत्रा ने 7 फरवरी को जैसलमेर में शादी की थी।

सूडोकु नवताल- 6354

कठिनतम

7							4	
		5		3			7	
					8			2
					1	9		
	2						8	
		6	7					
1			4					
	9			2		5		
	8							1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल - 6353 का हल

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7

शब्दजाल - 7101

व	श	मु	कि	स्म	त	हो	प	न	र	द	
क्त	क्रि	ल	ना	द	म	जा	ऐ	त	रा	ज	
य	के	ब	हे	नि	ही	ना	न	व	टि	रू	
इं	ट	र	न	शा	वा	रो	क	ले	ज	व	
प	दा	सा	अं	ने	तो	हो	थ	गो	भ	त	
ब	स	त	प	दा	स	ए	व	सं	वॉ	व	
द	ल्फ	न	न	जी	ज	ह	अ	गो	प्ला	द	
क	र	मा	प	क्श	प	क	र	चो	न	ख	
र	व	त	स्ट	रा	भी	त	श्मी	अ	शा	अ	
क	र	ल	प	र	ज	ता	रे	र	ह	द	
क	ह	रि	म	आ	प	की	खा	ति	र	जा	

शब्दजाल में प्रियंका चोपड़ा की 10 फिल्मों के नाम ढूंढिए. शब्द ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं एवं तिरछे हो सकते हैं

बल्फमास्टर, वक्त, किस्मत, ऐतराज, द हीरो, आप की खातिर, अंदाज, असंभव, प्लान, बरसात.

शब्दजाल - 7100 का हल

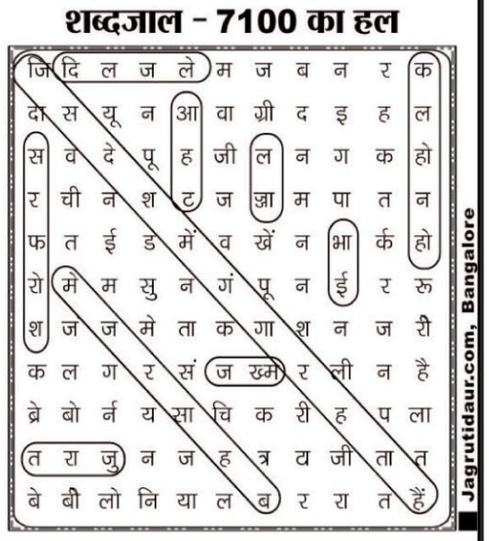

Jagrutidaur.com, Bangalore

अष्टयोग- 6054

1	2	3		5		
	22		30		38	
		4		6	7	1
7	30		38		33	
3		5	6		1	2
	39	7	43	4	25	5
4	5					3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 6053 का हल

1	3	6	7	5	2	4
5	32	3	40	1	28	7
4	3	7	5	6	1	2
3	35	2	37	7	32	6
7	4	5	2	3	6	1
2	30	1	28	4	29	5
6	1	4	7	2	5	3

Jagrutidaur.com, Bangalore

पीवी सिंधु ने ओलंपिक पदक जिताने वाले कोच पार्क से किया किनारा, खराब फॉर्म के लिए ठहराया जिम्मेदार

नई दिल्ली ।
भारतीय बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु ने कोच पार्क ताए संग से किनारा कर लिया है। कोच पार्क 2019 से सिंधु के साथ काम कर रहे थे। पार्क ताए-संग की देखरेख में सिंधु ने तीन बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर टाइटल्स, सैयद मोदी इंटरनेशनल टाइटल, स्विस ओपन टाइटल और सिंगापुर ओपन टाइटल जीते। साथ ही बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों 2022 में महिला एकल में स्वर्ण पदक और 2020 टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक भी जीता था।

पार्क ने सिंधु की हालिया खराब फॉर्म की जिम्मेदारी ली। उन्होंने इंस्टाग्राम पर सिंधु के साथ दो तस्वीरें शेयर कीं। इसके कैप्शन में लिखा- हैलो, आप सभी से बात किए हुए काफी समय हो गया है। मैं कुछ दिन पहले हैदराबाद वापस आया था। मैं उन सभी को धन्यवाद कहना चाहता हूं, जिन्होंने मेरे पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिंता जताई। सच कहूं तो मेरे पिता की हालत अभी ठीक नहीं है। इसलिए मुझे भारत वापस आना भारी लग रहा था।

पार्क ने लिखा- मैं पीवी सिंधु के साथ अपने संबंधों के बारे में बात करना चाहूंगा, जिसके बारे में कई लोगों ने पूछा है। उन्होंने हाल के कई मैचों में खराब मूव्स दिखाए हैं और एक कोच के रूप में इसके लिए मैं खुद को जिम्मेदार महसूस करता हूं। इसलिए वह एक बदलाव चाहती थीं और उन्होंने कहा है कि वह एक नया कोच ढूंढ लेंगी। मैं उनके फैसले का सम्मान करता हूं। मुझे खेद है कि मैं अगले ओलंपिक तक उनके साथ नहीं रह सकता, लेकिन अब मैं उन्हें दूर से उनका समर्थन करने जा रहा हूं। मुझे उनके साथ बिताया गया हर पल याद रहेगा। मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं जो मुझे समर्थन और प्रोत्साहित करते रहे हैं।

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधु ने 2019 में बैडमिंटन विश्व चैंपियन बनने की अपनी यात्रा को याद किया और कहा था कि वह पांच साल से अधिक समय से इस पल का इंतजार कर रही थीं। सिंधु ने विश्व चैंपियनशिप के 2013 और 2014 संस्करणों में कांस्य पदक जीता था, जबकि 2017 और 2018 में दोनों मौकों पर भारतीय शटलर को फाइनल में हार मिली थी। हालांकि, 2019 में उन्होंने फाइनल में जापान की नोजोमी ओकुहारा को हराकर टूर्नामेंट जीता।

सिंधु ने कहा था- ओलंपिक पदक के बाद विश्व चैंपियन बनना मुझे लगता है यह वास्तव में एक बड़ी बात है। मैंने इसे 2019 में जीता था। मेरे लिए यह पूरी तरह से एक अलग अनुभूति थी क्योंकि मैं पांच साल से इसका इंतजार कर रही थी।

न्यूज ब्रीफ

भारत-पाकिस्तान मैच महिला टी-20 वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा देखा गया: टेस्ट क्रिकेट की व्यूअरशिप में भी इजाफा, भारत-ऑस्ट्रेलिया सीरीज में बन रहे रिकॉर्ड

90 लाख ने देखा था 2020 WC

नई दिल्ली । भारत और पाकिस्तान के बीच ग्रुप-2 का मैच विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा देखा गया। महिला क्रिकेट में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले टी-20 मैचों में यह दूसरे नंबर पर रहा। वहीं, भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी का पहला टेस्ट पिछले 5 सालों में भारत में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले स्पोर्ट्स इवेंट में तीसरे नंबर पर रहा। पिछले 5 सालों में भारत-पाकिस्तान मैच से ज्यादा व्यूअरशिप भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 2020 के विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल को मिली थी। तब मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर हुआ फाइनल मुकाबला 90 लाख लोगों ने देखा था। डिजनी हॉटस्टार के स्पोर्ट्स हेड संजोग गुप्ता ने कहा कि भारत-पाकिस्तान के बीच इस विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप का ग्रुप मैच महिला क्रिकेट में टीवी पर दूसरा सबसे ज्यादा देखे जाने वाला मैच रहा। पहले नंबर पर 2020 विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप का फाइनल था। ये दोनों ही इवेंट बड़े इवेंट्स हैं। लाइव स्पोर्ट्स में इस तरह के इवेंट्स होने से टीवी व्यूअरशिप नेचुरली बढ़ती है। स्टार ने बताया कि विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप शुरू होने से पहले स्टार के टीवी चैनल पर भारतीय महिलाओं के सभी मैचों को लाइव दिखाया गया। ऑस्ट्रेलिया सीरीज के बाद वेस्टइंडीज और साउथ अफ्रीका से ट्राई सीरीज के मैच भी दिखाए गए। इन मैचों को टीवी पर दिखाने से व्यूअरशिप पर पॉजिटिव इम्पैक्ट हुआ। डिजनी-हॉटस्टार के स्पोर्ट्स हेड संजोग गुप्ता ने कहा, टीवी पर क्रिकेट की व्यूअरशिप अब बढ़ने लगी है। भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच नागपुर में खेला गया पहला टेस्ट पिछले 5 सालों में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले मुकाबलों में तीसरे नंबर पर रहा। पहले और दूसरे नंबर पर भारत और इंग्लैंड के बीच 2021 के दौरान भारत में हुए 2 टेस्ट मैच हैं।

मैं लेस्बियन हूं और खुश हूं: सारा टेलर

नई दिल्ली । इंग्लैंड की पूर्व विकेट कीपर सारा टेलर ने अपने आलोचकों को तगड़ा जवाब दिया है। उन्हें

समलैंगिक होने पर लोग ट्रोल कर रहे थे। उन पर और उनकी पार्टनर डायना की प्रेग्नेंसी का ऐलान किया था। इसके बाद लोगों ने इस कपल को ट्रोल करना शुरू कर दिया। इसके बाद अब सारा ने कई ट्वीट करते हुए सभी की बोलती बंद कर दी। 2019 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाली सारा ने कहा कि मैं लेस्बियन हूं और खुश हूं। उन्होंने ट्वीट में लिखा कि मैंने यह अनुमान नहीं लगाया था कि मुझे अपने साथी की प्रेग्नेंसी की घोषणा करते समय अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के जवाब देने चाहिए थे। उम्मीद है कि मैं कुछ सवालों के जवाब दे पाऊंगी। उन्होंने आगे लिखा कि आईवीएफ एक अज्ञात व्यक्ति से दान किया गया स्पर्म जो दूसरों को एक बहुत ही अनूठा अवसर देना चाहता है। बता दें कि सारा ने कोहली को सोशल मीडिया पर शादी के लिए प्रपोज करते हुए सुर्खियां बटोरी थीं। विराट कोहली की फैन इस 30 वर्षीय पूर्व क्रिकेटर ने लिखा कि हां, मैं एक समलैंगिक हूं और बहुत लंबे समय से हूं। नहीं, यह कोई विकल्प नहीं है। मैं प्यार में हूं और खुश हूं, यही मायने रखता है। हर परिवार अलग होता है, यह कैसे काम करता है और कैसा दिखता है। फैसला सुनाने से पहले खुद को शिक्षित करें। बच्चे को प्यार और सहारा मिलेगा। उन्होंने एक अन्य ट्वीट में लिखा कि हम सभी अलग-अलग मान्यताओं के साथ अलग-अलग तरह से पले-बढ़े हैं, मैं दूसरों के बारे में फैसला नहीं सुनाती। हालांकि मैं नफरत, उपहास और दुर्व्यवहार पर फैसला सुनाऊंगी। आप यहां के नहीं हैं। जब तक आप खुश हैं, तब तक जिसे आप चाहते हैं उससे प्यार करें। प्यार और समर्थन भेजने वाले सभी को धन्यवाद। बेहतरीन विकेटकीपर और महिला क्रिकेट इतिहास की सबसे सफल खिलाड़ियों में से एक सारा ने अचानक 2019 में अंतरराष्ट्रीय करियर को अलविदा कहते हुए सभी को हैरान कर दिया था। उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के कारण मार्च 2016 में खेल से स्थायी छुट्टी ले ली थी, लेकिन अंततः विश्व कप में अपने देश के लिए खेलने के लिए वापसी की। उन्होंने 2017 विश्व कप में 49.50 की औसत से 396 रन बनाए थे। टेलर ने ग्रुप मैच में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 147, सेमीफाइनल में भारत के खिलाफ 54 और चैंपियनशिप मैच में उनके खिलाफ 45 रन बनाए। लंदन में पैदा हुई सारा ने विभिन्न रूपों में 226 मैचों में इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व किया। तीन बार विश्व चैंपियन (डब्ल्यूसी 2009, 2017 और टी-20 डब्ल्यूसी 2009) भी रहीं हैं। उन्होंने 232 खिलाड़ियों का शिकार किए। वह वनडे में 126 मैचों में 38.26 की औसत से 4,056 रन बनाए, जिसमें 20 अर्धशतक और सात शतक शामिल हैं। टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में उन्होंने 90 मैचों में 29.02 की औसत से 2,177 रन बनाए, जिसमें 16 अर्धशतक शामिल हैं।

साउथ अफ्रीका पहली बार विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में

इंग्लैंड को 6 रन से हराया; अब ऑस्ट्रेलिया से सामना

केप टाउन।
मेजबान साउथ अफ्रीका ने विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में प्रवेश कर लिया है। टीम ने रोमांचक सेमीफाइनल में इंग्लैंड को 6 रन से हराया। अफ्रीका की टीम पहली बार फाइनल में पहुंची है।

साउथ अफ्रीका का मुकाबला 5 बार की वर्ल्ड चैंपियन ऑस्ट्रेलियाई टीम से होगा, जिसने एक दिन पहले भारत को 5 रन से हराया था।

केप टाउन के न्यूलैंड्स मैदान पर इंग्लिश टीम को आखिरी ओवर में जीत के लिए 13 रनों की जरूरत थी, लेकिन सारा ग्लेन और सारलोट डीन की जोड़ी शबनिम इस्माइल के ओवर में 6 रन ही बना सकी।

मेजबानों को ओपनर्स ने दिलाई मजबूत शुरुआत

यहां साउथ अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करते हुए चार विकेट पर 164 रन बनाए। ओपनर लौरा वॉल्वार्ट और ताजमिन ब्रिट्स ने 82 बॉल पर 96 रन की पार्टनरशिप कर टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। यहां वॉल्वार्ट 53 रन बनाकर आउट हुईं। उन्हें एक्लेस्टन ने डीन के हाथों कैच कराया। 96 के टीम स्कोर पर पहला विकेट गंवाने के बाद ब्रिट्स ने मारिजन कैप के साथ 25 बॉल में 46 रन जोड़े। वे 68 रन बनाकर आउट हुईं। कैप (13 बॉल पर नाबाद 27 रन) ने आखिरी ओवर्स में बड़े शॉट्स खेलकर टीम का स्कोर 160 पार पहुंचाया।

इंग्लैंड की ओर से सोफी एक्लेस्टन ने 21 रन देकर 3 विकेट लिए। लौरेन बेल को एक विकेट मिला।

इंग्लिश ओपनर्स की तेज शुरुआत

165 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी इंग्लैंड को सोफिया डंकली और एलिस कैप्सी ने आक्रामक शुरुआत दिलाई, लेकिन यह जोड़ी ज्यादा देर तक नहीं टिक सकी। 53 रन के टीम स्कोर पर दोनों ही ओपनर्स पवेलियन लौट गईं। दोनों को शबनिम इस्माइल ने आउट किया। डैनी व्याट ने फिर नेटली सीवर के साथ पारी संभाली। 85 रन के टीम स्कोर पर व्याट 34 रन बनाकर आउट हुईं।

सीवर ने फिर कप्तान हीथर नाइट के साथ 47 रन की पार्टनरशिप की। लेकिन 17वें ओवर में सीवर भी आउट हो गईं।

खाका के ओवर ने पलटा पासा

इंग्लैंड को 18 बॉल में 26 रन की जरूरत थी। कप्तान नाइट के साथ एमी जोन्स मौजूद थीं। तभी आयाबोंगा खाका ने पहली बॉल पर जोन्स का विकेट ले लिया। अगली 3 बॉल पर उन्होंने 3 रन दिए और 5वीं और छठी बॉल पर 2 और विकेट निकाले। उन्होंने महज 3 रन देकर 18वें ओवर में 3 विकेट चटका दिए।

इंग्लैंड को 12 बॉल में 25 रनों की जरूरत थी। नाइट ने 19वें ओवर में 12 रन बनाए। ऐसे में इंग्लिश टीम को आखिरी ओवर में 13 रन की जरूरत थी, लेकिन 6 रन ही बने। तय 20 ओवर में इंग्लिश टीम आठ विकेट पर 158 रन ही बना सकी।

पहली बार फाइनल में पहुंचने के बाद खुशी मनातीं साउथ अफ्रीकी टीम की खिलाड़ी।

विश्व टेबल टेनिस 27 फरवरी से

पणजी । 27 फरवरी से पांच मार्च तक भारत में होने वाले विश्व टेबल टेनिस (डब्ल्यूटेटे) के लिए ओलंपिक चैंपियन मा लॉन्ग और चीन की चेन मेंग भी भारत आयेंगे। ये दोनो ही पुरुष और महिला शीर्ष खिलाड़ियों में आकर्षण के केन्द्र रहेंगे। 34 साल के लॉन्ग दो बार के ओलंपिक चैंपियन हैं। इस स्पर्धा के पुरुष एकल वर्ग में उनके हमवतन फैन जेन्डॉन्ग भी उतरेंगे। वहीं अनुभवी शरत कमल और साथियान ज्ञानसेकरण और मनिका बत्रा भारतीय टीम की चुनौती पेश करेंगे। टूर्नामेंट में भाग लेने वाले अन्य शीर्ष खिलाड़ियों में दुनिया के चौथे नंबर के खिलाड़ी जापान के तोमाकाजु हरिमोटो और दुनिया के छठे नंबर के स्वीडन के ट्रूल्स मोरगार्ड, दुनिया के आठवें नंबर के चीनी ताइपे के लिन यून-जू और दुनिया के नौवें नंबर के स्लोवेनिया के डार्को जोर्जिक भी शामिल है। दूसरी ओर महिला वर्ग में चेन के अलावा उनकी हमवतन और दुनिया की नंबर एक सन यिंगशा भी शामिल होंगी। की पुष्टि की है। इसके साथ ही दुनिया की नंबर पांच खिलाड़ी जापान की हिना हयाता, दुनिया की नंबर आठ जापान की कासुमी इशिकावा खिताब के लिए दावेदारी पेश करेंगी। इन दिग्गज खिलाड़ियों को भारत की शीर्ष वरीयता प्रात महिला खिलाड़ी मनिका बत्रा की चुनौती का सामना करना होगा जो घरेलू परिस्थितियों का फायदा उठाना चाहेंगी।

भारत-ऑस्ट्रेलिया तीसरा टेस्ट इंदौर में: यहां 2 टेस्ट खेले, दोनों भारत ने जीते

इंदौर।
टेस्ट क्रिकेट का कारवां अब इंदौर पहुंचने वाला है जहां 1 मार्च से भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच खेली जा रही बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी का तीसरा मुकाबला शुरू होगा। भारतीय टीम 4 मैचों की सीरीज में 2-0 की बढ़त पर है। ऐसे में टीम इंडिया इस मुकाबले को जीतकर बढ़त 3-0 करना चाहेगी। इस जीत के साथ ही भारतीय टीम वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में अपनी जगह पक्की कर लेगी।

सबसे पहले जानते हैं इंदौर की पिच का हाल - इंदौर का होलकर स्टेडियम अपनी हाई स्कोरिंग पिच के लिए जाना जाता है। यहां लाल मिट्टी की पिच बनाई जाती है, जो पहले दिन तेज गेंदबाजों को मदद करती है। उसके बाद दूसरे दिन से स्पिनर्स को मदद करने लगती है।

इसी कारण इस मैदान की पहली दो पारियां हाई स्कोरिंग होती हैं और बाद की दो पारियों में तेजी से विकेट गिरते हैं।

इंदौर में आज तक टेस्ट नहीं हारे हम - आंकड़ों की बात करें तो होलकर स्टेडियम के आंकड़े भारतीय टीम के पक्ष में है। टीम इंडिया ने यहां दो मुकाबले खेले हैं और दोनों में ही बड़ी जीत दर्ज की है। भारतीय टीम ने इस मैदान पर पहला टेस्ट 2016 में खेला था। टीम इंडिया को उस मुकाबले में 321 रन की जीत मिली थी। यहां दूसरा टेस्ट 2019 में खेला गया था, जिसे भारतीय टीम ने पारी और 130 रनों से जीत लिया था।

हाई स्कोरिंग रहे हैं दोनों टेस्ट - आंकड़ों पर नजर डालें तो इस मैदान पर हाईएस्ट टोटल 557/5 रनों का है, जो टीम इंडिया बनाम न्यूजीलैंड मुकाबले के दौरान बना था। वहीं, लोएस्ट स्कोर 150/10 रन है, जो भारत और बांग्लादेश मैच में बना था। इस मैच की दूसरी पारी में भारत ने 493 रन बना डाले थे। इस मैदान पर मौजूदा टीम इंडिया के टॉप परफॉर्मर्स विराट कोहली और रविचंद्रन अश्विन रहे हैं।

रणजी सेमीफाइनल भी हाई स्कोरिंग रहा - होलकर स्टेडियम पर कुछ दिन पहले खेले गए रणजी ट्रॉफी के सेमीफाइनल के स्कोरकार्ड पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि यह मुकाबला भी हाई स्कोरिंग रहा था। मुकाबले की पहली पारी में बंगाल ने 438 रन बनाए थे, उसकी ओर से सुदीप और अनुस्तूप ने शतकीय पारियां खेली थीं, जबकि अभिषेक ने अर्धशतक जमाया था।

कश्मीर की बैट इंडस्ट्री में गुड क्वालिटी लकड़ी की किल्लत: तेजी से घट रहा स्टॉक, 10 की जगह 5 साल में ही काटने पड़ रहे पेड़

श्रीनगर।
कश्मीर के करीब 100 साल पुराने क्रिकेट बैट इंडस्ट्री कच्चे माल की भारी कमी का सामना कर रहा है। राज्य में जरूरत भर अच्छी क्वालिटी की विलो लकड़ी नहीं मिल रही है। इसके चलते करीब 400 क्रिकेट बैट मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स का चलना मुश्किल हो गया है।

क्रिकेट बैट्स मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन ऑफ कश्मीर के प्रवक्ता फावजुल कबीर ने बताया कि विलो लकड़ी का स्टॉक तेजी से घट रहा है। विलो का पेड़ तैयार होने में कम से कम 10 साल लगते हैं। इससे कम पुराने पेड़ की लगड़ी से अच्छी क्वालिटी का बैट तैयार नहीं होता है। लेकिन अभी 10 साल पुराना विलो पेड़ मिलना लगभग असंभव है। उद्यमियों का कहना है कि वे 5 साल पुराना विलो पेड़ काटने के लिए मजबूर हैं। आगामी वर्षों में ये भी नहीं मिलेगा।

कश्मीर में बने बैट काफी सस्ते, इसलिए दुनियाभर में मांग ज्यादा

क्रिकेट बैट्स मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन ऑफ कश्मीर के मुताबिक, विलो लकड़ी से तैयार बैट की क्वालिटी उतनी ही अच्छी होती है, जितनी इंग्लिश विलो बैट की होती है। कबीर ने कहा, 'इंग्लैंड में तैयार बैट की कीमत लाखों में होती है, जबकि हम प्रति बैट 1-3 हजार रुपए ही लेते हैं। इसलिए दुनियाभर में कश्मीर के बैट की डिमांड ज्यादा है।'

30 लाख क्रिकेट बैट का निर्यात

कश्मीर से सालाना करीब 30 लाख क्रिकेट बैट का निर्यात होता है। उद्यमियों का कहना है कि ऑर्डर मिल रहे हैं। वे उत्पादन दोगुना कर सकते हैं, लेकिन इतनी लकड़ी नहीं है।

3,000 तक एक बैट की कीमत

कबीर ने कहा, 'कभी हम 300 रुपए से कम में बैट बेचते थे। अभी आईसीसी के मानकों के अनुरूप एक बैट के लिए 3,000 रुपए तक वसूलते हैं।

दूसरे दिन एंडरसन-लीच को 3-3 विकेट: इंग्लैंड ने 435/8 पर पारी घोषित की, न्यूजीलैंड का स्कोर 138/7

वेलिंग्टन।
वेलिंगटन में इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच खेले जा रहे दूसरे टेस्ट के दूसरे दिन इंग्लैंड का पलड़ा भरी रहा। इंग्लैंड ने 315/3 के स्कोर के आगे खेलना जारी रखा। 184 पर खेल रहे हैरी ब्रूक दूसरे दिन दो रन ही बना सके और 186 रन पर आउट हो गए। इंग्लैंड ने 435/8 के स्कोर पर पारी घोषित कर दी। इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरा न्यूजीलैंड दिन के खत्म होने तक 7 विकेट खो कर 138 रन ही बना सका। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन और जैक लीच को 3-3 विकेट मिले। वहीं स्टुअर्ट ब्रॉड को 1 सफलता मिली।

जो रूट ने खेली नाबाद 153 रन की पारी

हैरी ब्रूक के बावजूद जो रूट क्रीज पर टिके रहे। उन्होंने नाबाद 153 रन बनाए। ब्रूक के बाद कप्तान बेन स्टोक्स 27 रन ही बना सके। स्टोक्स को वेगनर ने आउट किया। इसके बाद बेन फॉक्स (0), स्टूअर्ट ब्रॉड (14) और ऑली रॉबिंसन (18) रन बनाकर आउट हुए। पारी घोषित करते समय जो रूट (153) और जैक लीच (6) रन पर नाबाद थे। न्यूजीलैंड की ओर से वापसी कर रहे मैट हेनरी को 4, माइकल ब्रेसवेल को 2 विकेट मिले। वहीं, टीम साउदी और नील वेग्नर को 1-1 विकेट मिला।

न्यूजीलैंड का टॉप आर्डर फेल

इंग्लैंड के 435/8 का पीछा करने उतरी न्यूजीलैंड का टॉप आर्डर पूरी तरह फेल रहा। सलामी बल्लेबाज टॉम लाथम और डेवन कॉनवे बल्लेबाजी करनी उतरे। कॉनवे बिना खाता खोले ही आउट हो गए। उन्हें एंडरसन ने चलता किया। लाथम (35), विलियम्सन (4), विल यंग (2), हेनरी निकोल्स (30), डेरिल मिचेल (13) और माइकल ब्रेसवेल (6) रन बनाकर आउट हुए। टॉम ब्लंडेल 6 और कप्तान टिम साऊदी 23 रन पर नाबाद है। दिन के जीलैंड का स्कोर 7 विकेट के नुकसान पर 138 रन है। न्यूजीलैंड इस समय 297 रन पीछे चल रहा है।

पहला टेस्ट जीता इंग्लैंड

दो टेस्ट की सीरीज में इंग्लैंड पहला टेस्ट जीत चुका है। पहल टेस्ट डे-नाईट पिंक बॉल के साथ हुआ था। बेन स्टोक्स की कप्तानी वाली इंग्लैंड ने अपनी आक्रामक शैली बरकरार रखी और न्यूजीलैंड में 15 साल बाद टेस्ट मैच जीता था। माउंट मेंगनुई के बे ओवल मैदान पर इंग्लैंड ने 394 रन का टारगेट दिया था। जवाब में कीवी टीम चौथी पारी में 126 रन ही बना सकी थी।

रैपिड फायर पिस्टल में भारत को 12 साल बाद मिला पदक, अनीश ने कांसे पर साधा निशाना

कोहिरा।
आईएसएसएफ विश्व कप में अनीश भानवाला ने 12 साल बाद रैपिड फायर पिस्टल में देश को पदक दिलाया है। उन्होंने इस प्रतियोगिता में कांस्य पदक अपने नाम किया है। रैपिड फायर पिस्टल में इससे पहले भारत के लिए सभी पदक विजय कुमार ने जीते थे। अब 12 साल बाद अनीश ने मिस्त्र के कोहिरा में विश्व कप के अंतिम दिन पुरुषों की 25 मीटर रैपिड-फायर पिस्टल में कांस्य पदक जीता।

यह उनका पहला सीनियर व्यक्तिगत विश्व कप पदक भी था और उन्होंने इसे कठिन तरीके से अर्जित किया, जो 20 वर्षीय खिलाड़ी के करियर में एक ऐतिहासिक दिन रहा।

इतालवी मैसिमो स्पिनेला ने फाइनल मैच में 32 हिट के साथ स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने विश्व चैम्पियनशिप रजत पदक विजेता फ्रांस के क्लेमेंट बेसागुएट को पीछे छोड़ा, जो 40 शॉट के बाद दो हिट से पीछे रह गए। अनीश 30 शॉट में 21 हिट के साथ तीसरे स्थान पर रहे। उन्होंने जर्मनी के रियो ओलंपिक चैंपियन क्रिश्चियन रेइट्ज को हराया, जो 20 शॉट के बाद 13 हिट के साथ हार गए।

अनीश के पदक के चलते भारत ने चार स्वर्ण सहित सात पदकों के साथ काहिरा विश्व कप समाप्त कर तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। अपने कोच हरप्रीत सिंह को पदक समर्पित करते हुए अनीश ने कहा भारत के लिए कई खिलाड़ी फाइनल में पहुंचे, लेकिन पदक नहीं जीत सके। मैं इससे पहले दो फाइनल में पांचवें स्थान पर आया था और आज अपना पहला विश्व कप पदक जीतने के लिए सब कुछ झोक देना चाहता था।

अनीश ने कहा, मैं खुद को शांत रखने पर ध्यान केंद्रित कर रहा था और इसका फायदा मिला। राष्ट्रीय शिविर में, हमें प्रशिक्षण मिला ता कि दबाव की स्थिति में खुद को कैसे नियंत्रित किया जाए और इससे मदद मिली। पदक मैच में चौथी सीरीज कठिन थी, जहां मुझे पूर्व ओलंपिक चैंपियन को हराना था। मैंने

खुद से कहा कि यह सीरीज है जो मेरे सपने को साकार करेगी, इसकी कल्पना की और इसे पूरी तरह से सफल रहा। इससे मुझे खुशी हुई। यह वास्तव में एक सकारात्मक बात है। मैंने कल दो फाइनल देखे। जब आप ऐश्वर्या और अन्य को अच्छा करते देखते हैं तो आप खुद से कहते हैं, मैं भी यह कर सकता हूं।

अनीश ने 581 के स्कोर के साथ छठे स्थान से रैंकिंग राउंड के लिए क्वालीफाई किया। वह रातों-रात दूसरे स्थान पर रहे और रैपिड-फायर राउंड में 287 अंक हासिल कर कट हासिल किया। उन्होंने दो रैंकिंग मैचों में से दूसरे में यान चेसनेल, चेक गणराज्य के मतेज रामपुला और मास्सिमो के साथ जगह बनाई।

मेडल मैच में सबसे कम उम्र के अनीश ने धमाकेदार शुरुआत की, शॉट की पहली रैपिड-फायर सीरीज में पांच में से पांच हिट हासिल की, जबकि अन्य सभी ने तीन-तीन हिट के साथ ओपनिंग की। हालांकि दूसरी सीरीज उनके लिए कठिन थी, लेकिन तीसरे में चार हिट के साथ संयुक्त रूप से बेसागुएट के साथ 11 हिट के साथ शीर्ष पर पहुंच गए। चौथे में, बेसागुएट को छोड़कर सभी को पांच हिट मिले और अनीश ने वापसी की और पदक पक्का कर लिया।

अनीश के पास क्रमशः दो और तीन हिट की दो औसत सीरीज थीं और वह तीसरे स्थान पर झुके, क्योंकि मास्सिमो ने जीत हासिल की।

विश्व कप की अंतिम प्रतियोगिता महिलाओं की 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन में, भारत पदक से बाहर रहा। सिफ्ट कौर समरा क्वालीफिकेशन में 585 अंक के साथ 16वें स्थान पर रहीं, जबकि दो अन्य दावेदार मानिनी कौशिक (584) और अंजुम मौदगिल (593) क्रमशः 22वें और 27वें स्थान पर रहीं। केवल रैंकिंग अंक के लिए खेल रही आशी चौकसे और श्रींका सदांगी ने 579 का स्कोर बनाया।

विश्व कप राइफल/पिस्टल बैंडवागन अब भोपाल, भारत में स्थानांतरित हो गया है।

खेजड़ी वाले बालाजी : आस्था के एक आयाम

रामेश्वर लाल गहलोत

राजस्थान के सीकर के सालासार रोड से करीब 10 किमी दूर खेजड़ी वाले बालाजी का मंदिर मींगणा गांव के मेन रोड से दो किमी अंदर है, जो आजकल आस्था का बहुत बड़ा केंद्र बना हुआ है। सुजानगढ़ से आठ किमी दूर और प्राचीन सालासर मंदिर से 16 किमी दूर होने से इसकी महिमा और भी बढ़ गई है। तीन द्वार वाले इस मंदिर में तीन कमरे हैं। बड़ा पानी का पुल है। वहां से मुख्य मंदिर व बरामदा साफ दिखाई देता है। पूर्व मुख वाले इस मंदिर में एक शिव परिवार का भी बड़ा मंदिर बना हुआ है। पिछले साल 10 अप्रैल, 2022 को रामनवमी पर राम दरबार की प्राण-प्रतिष्ठा भी हुई, जिसमें भगवान श्रीराम और माता सीता सहित लक्ष्मण जी एवं गणेश जी की मूर्ति भी स्थापित की गई।

खेजड़ी वाले बालाजी के मंदिर के रख-रखाव एवं प्रचार-प्रसार के संदर्भ में रामेश्वर लाल गहलोत 'विकसित भारत समाचार' कार्यालय में आए और उन्होंने बालाजी के मंदिर, उनके चमत्कार एवं भक्तों की आस्था के बारे में अखबार के संपादक राकेश शर्मा से विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि सन् 1976 से वे बालाजी की सेवा में अनवरत् लगे हुए हैं। साथ ही विगत 21 वर्षों से गुवाहाटी में हर साल खेजड़ी वाले बालाजी के कार्यक्रम का भव्य आयोजन भी करते आ रहे हैं, जिसमें भक्षित, सांस्कृतिक संध्या एवं अखंड भंडारे का आयोजन किया जाता है।

खेजड़ी वाले बालाजी के निर्माण के साथ एक बहुत ही रोचक घटना जुड़ी हुई है, जिसका उल्लेख करना श्रद्धा और आस्था के लिए जरूरी है। मींगणा गांव के निवासी रामेश्वर लाल गहलोत की शादी 1972 में हुई थी, तब वह गुवाहाटी में एक छोटी-सी पान की दुकान चलाते थे। शादी के समय से ही उनकी पत्नी राजू देवी बीमार चल रही थी। उनके गर्भ में तीन बच्चे ठहरे नहीं। डॉक्टरों का मत था कि इनकी बच्चेदानी खराब हो गई है, उसे निकालना पड़ेगा। इनको संतान-सुख की प्राप्ति नहीं होगी।

राजू देवी को लेकर सुजानगढ़ के नजदीक डूंगर बालाजी के भगत जी के मन में यह आया कि डूंगर बालाजी का आदेश है कि वह अपने पति के साथ गुवाहाटी चली जाए और अगर गुवाहाटी में उन्हें कोई तकलीफ हो तो वह बालाजी की तांती बांध लें तथा किसी प्रकार

खेजड़ी बालाजी की चमत्कारिक प्रतिमा।

खेजड़ी बालाजी मंदिर में भव्य राम दरबार के प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव में रामेश्वर लाल गहलोत के साथ स्थानीय श्रद्धालु भक्तगण।

की कोई दवाई का सेवन न करे। मगर गहलोत जी की उस समय हालत बहुत खराब थी। वह एक छोटी-सी पान की दुकान से मुश्किल से गुजारा कर रहे थे। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और बालाजी पर विश्वास करके अपनी पत्नी को गुवाहाटी लेकर आ गए। डूंगर बालाजी जो सुजानगढ़ में है, वहां से ही बालाजी की आस्था और विश्वास ने अपना चमत्कार दिखाना शुरू कर दिया। पत्नी की तबीयत धीरे-धीरे ठीक होने लगी और राजू देवी ने तीन पुत्र एवं एक पुत्री को जन्म दिया। यह बाबा का चमत्कार ही है कि दो लड़के मंगलवार के दिन और एक लड़का पूर्णिमा के दिन पैदा हुआ और बाबा की कृपा से ठीक रक्षाबंधन के एक दिन पहले राजू देवी ने एक पुत्री को जन्म दिया। राजू देवी ने सभी बच्चों को अपने निवास पर ही जन्म दिया। हालांकि डॉक्टर ने अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी थी। मगर रामेश्वर लाल गहलोत को खेजड़ी वाले बालाजी ने स्वप्न में कहा कि किसी भी डॉक्टर के पास न जाएं और न ही किसी प्रकार की दवाई दे। उन्होंने बालाजी के आदेश को श्रद्धापूर्वक स्वीकार किया और आज बाबा का चमत्कार सबके सामने है।

मींगणा गांव के पास गहलोत जी ढाणी है, वहां एक वृद्ध दंपती छोटी-सी खेजड़ी के नीचे एक छोटे से मंदिर में पूजा-अर्चना करते थे। जब दंपती की मृत्यु हो गई तो 7 साल तक मंदिर बंद पड़ा। खेजड़ी के वृक्ष के नीचे मंदिर की हालत जीर्ण-शीर्ण हो गई। उसी समय गहलोत जी को रोज सपने में मंदिर दिखाई देने लगा। सपने में बालाजी कह रहे हैं कि पहले मेरा मंदिर खोलो तब आपको घर जाने दूंगा। आर्थिक तंगी के बावजूद गहलोत जी 700 रुपए लेकर गांव की ओर प्रस्थान किया। अपने घर से पहले मंदिर पड़ता है। रास्ते में उनको एक सांप दिखाई दिया जो बंद पड़े मंदिर के पास जाकर गायब हो गया। गहलोत जी ने सारा माजरा भांपकर गांव वालों को इकट्ठा करके उन्होंने कहा कि मैं मंदिर खोलूंगा। उन्होंने पूछा कि तुम्हारे पास क्या साधन है? उन्होंने कहा-मुझे खाना मिलेगा तो बालाजी की भी सेवा करूंगा। गांव वालों ने साथ दिया। उन्होंने गांव वालों से पूछा-वहां कोई पूजा करोगे क्या? तब वहां के दास जी स्वामी बोले-पूजा मैं कर दूंगा। उन्होंने कहा-क्या लोगे पूजा करने का। स्वामी जी ने कहा-आप जो दोगे, वही ले लूंगा। सन् 1976 के उसी दिन 700 रुपए में 10×11 का मंदिर बनाकर प्राण-प्रतिष्ठा की। तत्पश्चात् गहलोत जी का काम-धंधा अच्छा चलने लग गया। इस तरह हनुमान जयंती और शरद पूर्णिमा पर दो जागरण छोटे रूप में शुरू कर दिए। धीरे-धीरे मंदिर की ख्याति बढ़ने लगी। हनुमान जयंती तथा शरद पूर्णिमा को अब बड़े कार्यक्रम होने लगे हैं। उनके मन में हर समय बस यही भाव रहता है कि मंदिर की जितना भी सेवा करे, कम ही है।

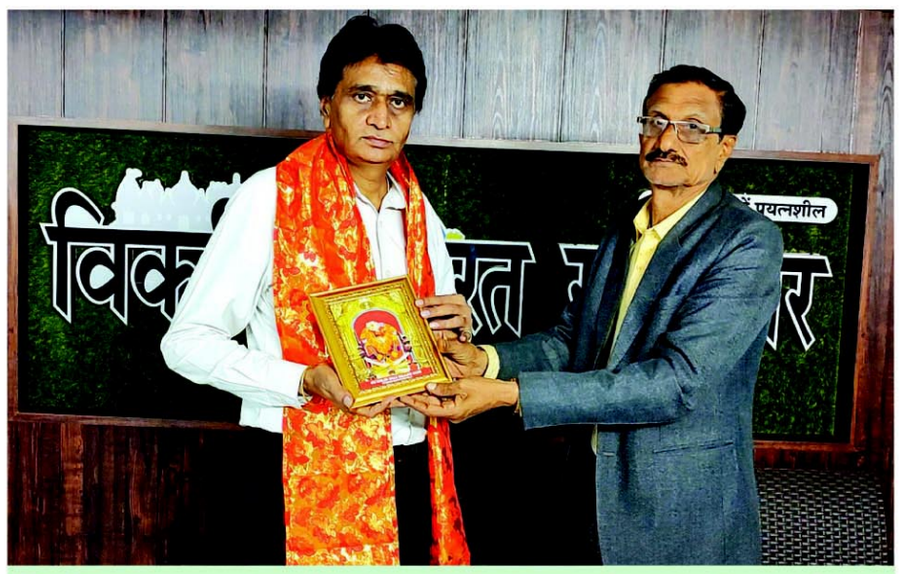

'विकसित भारत समाचार' कार्यालय में अखबार के संपादक राकेश शर्मा को दुपट्टा ओढ़ाकर खेजड़ी वाले बालाजी की तस्वीर भेंट करते रामेश्वर लाल गहलोत।

तीर्थराज पुष्कर : सभी तीर्थों का गुरु

परमानंद झा

हिंदुओं का प्रसिद्ध एवं पावन तीर्थस्थल पुष्कर राजस्थान के हृदय (मध्य) में अजमेर से करीब 15 किमी अरावली की सुरम्य पर्वतमालाओं से घिरा धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल है। पुष्कर को

सभी तीर्थों का गुरु कहा गया है। पुष्कर का शाब्दिक अर्थ है सरोवर, जिसका निर्माण पुष्प से हुआ है। अर्द्ध चंद्राकार आकृति में बनी पुष्कर झील आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आकर्षण का केंद्र रही है। धर्मग्रंथों में पुष्कर को पांच तीर्थों में सर्वाधिक पवित्र माना गया है। पुष्कर, कुरुक्षेत्र, गया, हरिद्वार और प्रयाग को पंचतीर्थ कहा गया है। हिंदू धर्म में तीन प्रधान देव माने गए हैं-ब्रह्मा, विष्णु और महेश। ब्रह्माजी सृष्टि के रचयिता, विष्णुजी जगत के पालनहार तथा महेश को संहारक कहा गया है। देश भर में सभी देवी-देवताओं

के अनेकों मंदिर हैं, परंतु जगत पिता ब्रह्माजी का पूरे भारत में सिर्फ एक ही मंदिर है, जो पुष्कर में स्थित है। लोक विश्वास के अनुसार ब्रह्माजी लोगों की भलाई के लिए पृथ्वी पर एक यज्ञ करना चाहते थे। उपयुक्त स्थान का चयन करने के लिए ब्रह्माजी ने पृथ्वी पर कमल का पुष्प गिराया। कमल के पुष्प तीन स्थानों पर गिरे। जिन तीन स्थानों पर पुष्प ने स्पर्श किया, वहां जलधारा फूट पड़ी और पवित्र सरोवर बन गए। चूंकि सरोवरों का निर्माण पुष्प से हुई, इसलिए इसका नाम पुष्कर पड़ा। जिन स्थानों पर पुष्प गिरे थे उन स्थानों को ज्येष्ठ, मध्य और कनिष्ठ पुष्कर कहा जाता है। ज्येष्ठ पुष्कर-यहां के देवता जगतपिता स्वयं ब्रह्माजी हैं। मध्य पुष्कर-इस तीर्थ के देवता जगत पालक भगवान विष्णु हैं। कनिष्ठ पुष्कर-इस तीर्थ के देवता संहारक भगवान शिव हैं।

ब्रह्माजी यज्ञ का आयोजन करने के लिए पुष्कर पहुंचे। यज्ञ की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं, किंतु यथासमय ब्रह्माजी की धर्मपत्नी देवी सावित्री यज्ञ स्थल पर नहीं पहुंच पाईं। यज्ञ का मुहूर्त बीता जा रहा था। यज्ञ को पूर्ण करने के लिए उनके साथ उनकी धर्मपत्नी का होना जरूरी था। इसलिए ब्रह्माजी एक स्थानीय गुर्जर कन्या गायत्री-जो वेदों की ज्ञाता थीं, उनसे विवाह कर यज्ञ आरंभ कर दिया। देवी सावित्री जब यज्ञ स्थल पहुंची तो ब्रह्माजी के बगल में बैठी दूसरी कन्या को देख अत्यंत क्रोधित हो गईं और क्रोध में आकर ब्रह्माजी को श्राप दे दिया कि धरती पर उनकी पूजा कभी नहीं होगी। साथ में ब्रह्माजी की सहायता करने वाले विष्णुजी को भी देवी सावित्री ने श्राप दिया कि उनको मानव जीवन में पत्नी वियोग का दुख भोगना पड़ेगा। इसी कारण भगवान विष्णु के मानव अवतार श्रीराम को वनवास के दौरान अपनी पत्नी से अलग होना पड़ा था। सभी देवताओं ने देवी सावित्री का क्रोध शांत करने की कोशिश की तथा ब्रह्माजी को श्राप मुक्त करने की विनती की, किंतु देवी सावित्री ने श्राप मुक्त करने से इनकार कर दिया। किंतु श्राप को कम करने के लिए देवी सावित्री ने कहा कि पूरे धरती पर सिर्फ पुष्कर में ही ब्रह्माजी की पूजा होगी। इतना कहकर देवी सावित्री पुष्कर झील के पास स्थित रत्नगिरी पहाड़ पर चली गईं। रत्नगिरी पहाड़ पर देवी सावित्री की एक प्राचीन मंदिर है। मंदिर तक पहुंचने के लिए लगभग 970 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है। इसके अलावे रोपवे के माध्यम से भी मंदिर पहुंचा जा सकता है। पुष्कर झील से कुछ ही दूरी पर माता गायत्री मंदिर है, जो गायत्री शक्तिपीठ के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अलावे शापमोचनी माता मंदिर, जो पापमोचनी के नाम से विख्यात हैं। आज यह मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। मंदिर मारवाड़ बस स्टैंड के पास कपालिका पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर तक पहुंचने के लिए करीब 500 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है। शापमोचनी माता के बारे में कथा यह है कि देवी सावित्री के श्राप के कारण यज्ञ में रुकावट आ गई। तब ब्रह्माजी ने शापमोचनी शक्ति को प्रकट किया, जिससे यज्ञ निर्विघ्न रूप से संपन्न हुआ।

पुष्कर झील के चारों ओर कई मंदिर एवं घाट बने हैं। इनमें ब्रह्मघाट, वाराह घाट, बद्रीघाट, गऊघाट आदि प्रमुख घाटें हैं। ब्रह्मघाट पर सायंकालीन आरती श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के बीच आकर्षण का एक बहुत बड़ा केंद्र है। पुष्कर में ब्रह्माजी मंदिर, पुष्कर झील (ब्रह्म सरोवर), देवी सावित्री मंदिर, देवी गायत्री मंदिर, शक्तिपीठ मणिबंध मणिवैदिक-लौकिक नाम चामुंडा माता मंदिर, नाग पहाड़ पर 'पंचकुंड' (इसे नागों की उत्पत्ति का स्थान बताया गया है), प्राचीन रंगनाथजी मंदिर, प्राचीन वाराह मंदिर, प्राचीन अटमटेश्वर महादेव मंदिर आदि काफी दर्शनीय स्थल हैं। यह तीर्थस्थल प्राकृतिक रूप से सुंदर एवं रमणीय है। यहां सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी स्वयं निवास करते हैं। कार्तिक मास की एकादशी से पूर्णिमा तक प्रतिवर्ष पुष्कर मेला लगता है। ब्रह्माजी एवं गायत्री माता का यज्ञ इन्हीं दिनों पूरा हुआ था, तभी से पुष्कर तीर्थ में यह मेला लगता है, जिसे ऊंट मेला भी कहा जाता है। पुष्कर मेला भारत में आयोजित होने वाले सबसे बड़े पशु मेलों में से एक है।

शक्तिपीठ मणिबंध मणिवैदिक : यह स्थान पुष्कर सरोवर के पश्चिम की ओर करीब 3 किमी की दूरी पर पुरूहुता पर्वत की तलहटी में स्थित है। मणिबंध मणिवैदिक शक्तिपीठ चामुंडा माता मंदिर के नाम से विख्यात है। तंत्र चूड़ामणि के अनुसार यह माता सती के इक्यावन शक्तिपीठों में से एक हैं, जहां माता सती के मणिबंध (कलाई) गिरे थे। मंदिर में कई देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं। मंदिर की कलाकृति और वास्तुकला प्राचीन भारत की भव्यता को दर्शाती है।

बारासात, कोलकाता
मो. : 95550-21641

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए पी.जी. इंडिया लिमिटेड एमआईई, कालापहाड़, गुवाहाटी-16 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
संपादक : राकेश शर्मा, मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम ● फोन : 0361-2960054 (संपादकीय)** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **(सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन)**